तरुण भारत संघ

लोक परंपरा से मिला रास्ता

एक दशक

तरुण भारत संघ

एक दशक : एक नजर में

राजेन्द्र सिंह

तरुण भारत संघ
एक दशक : एक नजर में

प्रकाशक : तरुण भारत संघ

भीकमपुरा - किशोरी
वाया - थानागाजी
जिला - अलवर (राजस्थान) 301022

अक्टूबर 1995

मूल्य : तीस रुपया

विषय-क्रम

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1
2.	तरुण भारत संघ का गांव में प्रवेश - 1985	2
3.	सीखने तथा करने का दौर शुरू - 1986	3
4.	लोगों के मन पर जोहड़ों का प्रभाव - 1987	5
5.	जोहड़ बनाने का चमत्कार - 1988	14
6.	जोहड़ परम्परा के सामने दूसरी सब ताकत बौनी है - 1989	20
7.	परम्पराओं से सिखाने की प्रक्रिया- 1990	24
8.	सामलात देह के प्राचीन प्रबन्ध की खोज - 1991-92	29
9.	वनवासियों को अपने हकों का अहसास - 1992-93	37
10.	सामलात देह बचाने का संकल्प पूरा - 1993-94	40
11.	जैविक खाद - देशी बीज को बढ़ावा - 1994-95	47
12.	भाँवता - लोक-अभिक्रम से समृद्धि	51
13.	अपने पसीने से सिंचा एक गांव - गुजरों की लोसल	54
14.	गोकुल में बदलता - देवरी	58
15.	सूरतगढ़ अन्य गांवों को पानी व प्रेरणा दे रहा है	61
16.	दुहारमाला वासियों ने अपना हाथ जगन्नाथ कर दिखाया	65
17.	परिशिष्ट - 1	i-xx
18.	परिशिष्ट - 2	i-xiv

परिचय

तरुण भारत संघ, राजस्थान विश्वविद्यालय परिसर में लगी आग से पीड़ितों के लिंये राहत कार्य करने हेतु मार्च 1975 में बना। इसके कार्यों की शुरूआत 44 झुग्गी झोपड़ियों के आग से पीड़ित रोगियों की चिकित्सा, जल, आवास, भोजन, वस्त्र आदि की व्यवस्था करने के साथ-साथ बच्चों एंव प्रोढ़ों के लिए रात्रि कालीन कक्षाएं शुरू करने से हुई थी। इस कार्य में विश्वविद्यालय के शिक्षक, विधार्थी, एवम् समाज सेवी सबने मिलकर सेवा समर्पण भाव से कार्य किया था। इनमें श्री एस. डी. शर्मा व श्री के. वी. द्रोण का नाम उल्लेखनीय है। इनके नेतृत्व में संघ ने ज़यपुर शहर की दूसरी संस्थाओं को भी इस कार्य में जोड़ने के प्रयास किये। सर्व श्रीमती बी. एल. जैन, कमलेश्वरी श्रीवास्तव का भी सक्रिय सहयोग मिला था। संघ ने इस प्रकार के कार्यों से विधार्थियों एंव शिक्षकों में सेवा के संस्कार निर्माण का अभियान चलाया। संस्कार शिविरों की श्रृंखला से युवाओं के मानस को समाजोपयोगी बनाने का अभिक्रम आगे बढ़ा। देखने में आया कि जब तक विधार्थी संघ के सम्पर्क में रहते थे, तब तक जनहित कार्यों में लगे रहते थे। संस्कार शिविरो की श्रृंखलाओं से बहुत से विधार्थियों को संघ के सम्पर्क में आने का अवसर मिला था। यह कार्य सतत चलता रहा। नोवे दशक के प्रारम्भ में संघ ने ग्रामीण युवाओं के कुछ शिविर किये तथा गलीचा उद्योग में लगे हुए बालकों की शिक्षा हेतु बाल शालाएं चलाई। साथ ही साथ जमुवारामगढ़ वन्य जीव अभयारण्य में डगोता गांव में चल रही घिया पत्थर की खान के मजदूरों को पढ़ाने हेतु प्रौढ़ शालाएं शुरू की तथा उन्हें संगठित भी किया। जिससे यहाँ पर न्यूनतम मजदूरी का कानून लागू कराने में सफलता प्राप्त हुई। वर्ष 1983 में दौसा तहसील के रामपुरा-बोरादा तथा बंजारों की ढ़ाणी में शिविर लगाकर राहत व सेवा के कार्य भी किये।

इस प्रकार वर्ष 1983 तक बहुत सारे ग्रामीण युवा, संघ के सम्पर्क में आ गये। इन युवाओं ने परिस्थितियों को समझने के लिये अनेकों क्षेत्रीय अध्ययन भी किये जिनमें "गाडुलिया लुहारों के बेहतर जीवनयापन की सम्भावनाओं" का अध्ययन मुख्य है।

इस अध्ययन के दौरान संघ इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि, जो गाडुलिया लुहार घूम-घूम कर अपना परम्परागत कार्य करके अनुशाषित-सम्मानपूर्वक, निर्भिक रहकर जीवन जीते थे, उनके सभी कामों (जीवन के आधार) पर अब बड़ी कम्पनियों ने कब्जा कर लिया है। इसी तरह गांववासियों के सामलाती आधार पर भी बड़े उद्योगपतियों का कब्जा हो रहा है। इस स्थिति में गांवों की ज़िन्दगी चलनी मुश्किल होगी। फिर तो इन घुमक्कड़ों के लिये कोई सहारा बाकी नहीं रह जायेगा। अभी गांवों में कुछ

लोग ऐसे है जो अपने सामलाती जल, जंगल, जमीन के प्रबन्ध की समझ रखते हैं, इसीलिये कुछ सामलाती साधन अभी बचे हुए है। अध्ययन के दौरान यह भी देखने में आया कि सामलात देह पर नये कब्जे बढ़ रहे हैं। इसलिए गरीब गाडुलिया लुहारों को रुकने-ठहरने के लिये भी अब इन बड़े धन्ना सेठों की कृपा पर आश्रित रहना पड़ता है। कभी-कभी तो ये लोग गांव में काम पूरा हुए बिना भी इन लुहारों को गांव से बाहर निकाल देते हैं। कई जगह ऐसी स्थिति में गांव के गरीब व कमजोर लोगों ने संगठित होकर इन्हें अपना काम पूरा कराने तक गांव में ही आश्रय दिया। इसी प्रकार की घटनाओं ने संघ के साथियों में गरीबों को संगठित करने की प्रेरणा एवं शक्ति का संचार कर दिया। इस घटना व लोक मान्यता से मैं भी प्रभावित हुआ। संघर्ष वाहिनी के मेरे पुराने संस्कार भी फिर से जागृत हो गये। मैं इस दौरान भारत सरकार के युवा विभाग में काम करता था, मैंने उसे छोड़कर स्वतन्त्र रूप से कुछ और गहरा अध्ययन और समझ बनाकर अपनी प्रेरणा को पुष्ट करने का निश्चय किया। इस दौरान मैंने बहुत सी स्वैच्छिक संस्थाओं की कार्यशैली को भी देखा तथा उनसे बहुत कुछ सीखा उनके साथ कुछ काम भी किया। इस काम के दौरान ही मेरे साथ कुछ अच्छे भावनाशील साथी भी जुड़ गये। मुझे इनसे बहुत बल मिला। 1 अक्टूबर 85 की रात को हम (नरेन्द्र, सतैन्द्र, केदार, हनुमान तथा राजेन्द्र) ने निश्चय किया कि गांव में सेवा, शिक्षण, संगठन का कार्य तथा अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करने के लिये लोगों को तैयार करने हेतु हम गांव चलें। अगले दिन बिना कुछ ज्यादा सोच-विचार किये गांव में बिना पूर्व सम्पर्क किये ही गांव की तरफ रवाना हो गये।

तरुण भारत संघ का गांव में प्रवेश – 1985

2 अक्टूबर की शाम 7 बजे के अंधेरे में जब हम पाँच साथी किशोरी गांव में पहुँचने वाली एक मात्र बस से उतरे तो बिना किसी परिचय के भी हमें गांव में कुछ संजिदा लोगों ने हनुमान मन्दिर की एक छोटी सी कोठरी रहने के लिये बतला दी।

दूसरे दिन सूरतगढ़ निवासी सुमेरसिंह आये। उनसे कुछ परिचय निकल आया, उन्होंने हमारे रहने की भीकमपुरा में व्यवस्था कराई, गोपालपुरा गांव में हमने छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने व स्वास्थ्य सेवा का कार्य शुरू किया। आस-पास के दूसरे गांवों में भी जहाँ तथा-कथित विकास नहीं पहुँचा था वहाँ बातचीत एवं कार्य शुरू हुआ। जैसे मांगु पटेल, बदरी, नानगराम, भगवाना, रामदयाल, कालू आदि गोपालपुरा वासियों का आना-जाना, मेरे साथ बैठना तथा अपसी बातचीत काफी होने लगी थी। इसलिये मेरा मन तो उनके साथ रम गया था। इसी कारण मेरे तीन साथियों के वापस चले जाने पर भी हमारा साहस बना रहा।

गांव में शोषण अत्याचार कहीं देखने को नहीं मिला। सब लोग बराबर है। गरीब भी कोई है, तो भी सब अपने दुखः दर्द को एक ही जमीन पर बैठकर मजे-मजे से बात करते हैं। एक दूसरे की मदद भी करते है। स्वार्थों की गहरी खींचतान यहाँ दिखाई नहीं देती। भयंकर अकाल के कारण जहाँ भूखे लोग गांव छोड़कर दिल्ली-अहमदाबाद चले गये। गांव के सबसे बड़े जमीनदार मांगू पटेल के बेटे-पोते अहमदाबाद में मजदूरी करने गये थे, तभी गरीबतम नाथी का पति भी दिल्ली मकान चिनाई करने गया था। इस प्रसंग से यह बात साफ थी, कि इस गांव में आर्थिक-सामाजिक बराबरी है। मांगू पटेल गोपालपुरा का मुखिया है, दूसरी तरफ नाथी सबसे गरीब बलाई परिवार की महिला है। परन्तु वह अपने सुख दुखः की बात मांगू पटेल, भगवाना, कालू या फिर कोई अन्य बड़ा-छोटा सभी के साथ बातचीत करती है। कंही कोई डर, ऊंचनीच, छुआछूत नहीं। भुखमरी, बेकारी तथा तबाही की छाया सबके ऊपर समान रूप से पड़ी है। इसी को समझने की चिन्ता अब हमें सताने लगी। "यहाँ आकर पहली बार हमारी शिक्षा के पूर्वागृहों का किला टूटा।" अब गांव के बुजूर्गों से सीखने की आवश्यकता महसूस हुई। मन को लगा यह समाज जो अपने आपको प्रकृति के क्रोध के आगे भी अड़िग बनाये हुये है, उसी से हमें सीखना होगा, तभी इनके साथ-साथ चलकर कुछ अच्छा किया जा सकेगा।

सीखने तथा करने का दौर शुरू – 1986

मांगु, बदरी, जगदीश तथा इनके कुनबे-परिवार के लोग अपनी तीन सौ वर्ष पुरानी भव्य इमारत के सामने घासफूंस की बनी तिबारी में बैठे हुक्का गुड़-गुड़ाते मेरे सवाल के जवाब में अपनी पुरानी इमारत की तरफ इशारा करते हुए बोले यह इमारत हमारे पर-दादो ने जब बनाई थी, तब हमारे जोहड़ पानी से भरे रहते थे, तो हमें पीने, खेती-पशु सबके लिये खूब पानी था। पानी था तो अनाज के भी कोठे भरे रहते थे। यदि हमारे गांव में जोहड़-बन्ध बन जाये तो जीवन को पुनः आधार मिल सकेगा।

पर अब कौन बनाये? हममें दम है नहीं, काम करने वाले बाहरवास (रोजी रोटी) कमाने चलें गये अब कैसे बने? मैं यह सब चुप बैठा सुन रहा था। मैंने कहा हम जो यहाँ है मिलकर कुछ शुरू करें तो शायद यह जोहड़ बनाने का काम पुनः शुरू हो जाये। मांगू ने कहा हो तो सकता है। पर मेरे बसकी बात नहीं है, गांव भी अब मेरी सुनता नहीं। एक जमाना था, गांव में अच्छे काम की शरूआत किसी ने भी कर दी तो सब साथ जुड़ जाते थे। अब तो बस आपा-धापी हैं। बदरी ने मेरी तरफ देखकर कहा आप कुछ मदद करें तो शायद गांव जुड़ जाये। अब गांव में भी तो कोई आपस में एक दूसरे को नहीं मानता। अब तो जमाना बदल रहा है। "घर का

जोगी जोगना आन गांव का सिद्ध" आपकी लोग मान जायेंगे, कुछ काम शुरू करों। बात करो। हमने बात शुरू की, साथ-साथ काम शुरू हुआ!

चौंतरे वाला जोहड़ में हमने पहले दिन काम शुरू किया तो जो लोग रात को बात कर रहे थे, वे सब भी काम पर नहीं आये। कुछ दिन तक हमने श्रमदान किया। पर हमें लगा भूखे रहकर जोहड़ नहीं खुदेंगे। फिर कुछ अनाज की व्यवस्था की गई। चूंकि गोपालपुरा में उस समय काम करने वाले लोग नहीं थे, इसलिए सिलीबावड़ी के लोगों से काम शुरू कराया, लेकिन काम गोपालपुरा के लोगों की देखरेख में ही शुरू हुआ। उन्होंने ही स्थान तय किया पाल की लम्बाई, मौटाई, ऊँचाई आदि का निर्णय किया, काम की देखभाल, नाप तोल में तो गांववासियों ने रूचि ली। बाद में अपने गांववासियों को अहमदाबाद से बुलाकर काम में लगाया। इस प्रकार मेंवालों वाला बांध बनने के साथ-साथ ही चौंतरे वाला जोहड़, गांववासियों ने तैयार कर लिया।

इस वर्ष (1986) में तरुण भारत संघ ने दूसरे ये भी कार्य किये

माँ एवं बाल विकास कार्यक्रम - भाल, रायपुरा, गोविन्दपुरा, मालियों की ढ़ाणी व खोड़ों का गुवाड़ा में कोई स्कूल नहीं था, उनमें माँ तथा बाल विकास केन्द्रों की स्थापना की। इन केन्द्रों का उद्देश्य नो वर्ष तक की उम्र के बालकों को पढ़ाने के साथ-साथ उनकी माताओं की व्यक्तिगत स्वच्छता, सामूहिक सफाई व रोग निरोधक कार्यक्रमों से जोड़कर उनके नित्य जीवन से सम्बन्धित कई प्रकार की उपयोगी जानकारी दी।

लोक शिक्षण - हमारा यह कार्यक्रम इस समय क्षेत्र के 35 गांवों में चलने लगा इसमें ग्रामीणों के साथ रात्रि को मीटिंग होती थी। जिसमें अनौपचारिक चर्चा की जाती। यह चर्चा कहीं से भी प्रारम्भ होती, आरम्भ के दिनों में तो ये चर्चाएं चिकित्सक साथी द्वारा आरम्भ की जाती थी।

स्वास्थ्य कार्यक्रम - महिलाओं और बच्चों की बिमारियों को देखते हुए हमने स्वास्थ्य शिक्षण व उपचार का कार्यक्रम भी कई जगह शुरू किया।

सामूहिक सफाई - ग्राम भाल व गोपालपुरा में सामूहिक सफाई कार्यक्रम शुरू हुआ। अप्रैल 86, हमारे इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप गोपालपुरा के तीन परिवारों को भारत सरकार के क्षेत्रीय प्रचार कार्यालय ने पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया है।

सेन्द्रिय खाद कार्यक्रम - रासायनिक खाद के दुष्परिणाम तथा उनके द्वारा गांव वालों के शोषण को देखते हुए रासायनिक खाद का बहिष्कार तथा उसके स्थान पर स्वयं द्वारा तैयार की गई सेन्द्रिय खाद का उपयोग करने की बात व काम शुरू हुआ। दस गांवों के 15 स्थानों पर हमने सेन्द्रिय खाद बनाने की पूरी प्रक्रिया समझाने के बाद

हमने स्वयं अपने हाथों से तैयार करने के तरीको का प्रत्यक्ष प्रदर्शन कराया। इस प्रकार के प्रदर्शन से सेन्द्रिय खाद के उपयोग के प्रति लोगों में रूझान बढ़ने लगा।

अन्न भण्डारण कार्यक्रम - कम से कम अपने साल भर के खाने का अनाज तो किसान को अपने पास रखना ही चाहिये। इस हेतु कुछ परम्परागत कोठियां बनाई गई। इस कार्य हेतु पुरे क्षेत्र में अन्न सुरक्षा अभियान भी चलाया।

ग्रामकोष - खरीफ की फसल आने पर दो गांवों में ग्रामकोष के संग्रह की बात स्वीकार कर ली। इसके लिये इन ग्रामों में ग्राम समिति की स्थापना की गई।

शबराबन्दी - गांवों को शराब मुक्त करने के लिये व्यापक कार्यक्रम बनाये तथा उसी के अनुसार छोटी-छोटी पद यात्राएं, चर्चाएं, गोष्ठियाँ तथा अनौपचारिक बातचीत भी लोगों से हुई जिसके फलस्वरूप 10 ग्राम 1986 में पूर्णतः शराब मुक्त हो गये तथा अन्य गांवों को भी इस दिशा में आगे बढ़ने की तैयारी शुरू हो गई।

आर्थिक संयोजना - 1986 में काम किया उसके खर्च के लिये 15,500/- (पन्द्रह हजार पाँच सौ रुपये) मात्र हमने लोगों से व्यक्तिगत सम्पर्क साधकर इक्ट्ठे किये। इस कार्य में भीकमपुरा के बदरी प्रसाद, नानगराम सेठी, जेतपुर, शान्तिस्वरूप डाटा, सुआलाल जी तथा सैंकड़ों लोगों का सहयोग मिला।

लोगों के मन पर जोहड़ों का प्रभाव - 1987

गोपालपुरा गांव में केवल दो जोहड़ ही बनाये थे, जिनको उस भयंकर अकाल के दिनों में लोगों ने अपने जीवन के आधार के रूप में पुनः स्वीकार करना आरम्भ किया। इसलिए पहले वर्ष में ही इन जोहड़ों को देखकर आसपास के क्षेत्र में अतिउत्साह नजर आया। चारो तरफ इन जोहड़ों की चर्चा होने लगी। गांवों में इस तरह के काम करने की इच्छा से लोग स्वंय संस्था के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करने लगे। उन्हीं दिनों एक पदयात्रा का 30 जनवरी से 12 फरवरी तक आयोजन किया। इस पदयात्रा का उद्देश्य गांवों में जोहड़ निर्माण की संभावनाओं का पता लगाने के साथ-साथ सामाजिक कुरुतियों पर चर्चा करके शराब जैसी बुरी आदतों से मुक्ति पाना था। संस्था ने यह भी एक उद्देश्य बनाया था कि जोहड़ निर्माण का काम उन्हीं गांव में करेगें जिस गांव में शराब बनाने एंव पीने पर लोग स्वेच्छा से पाबन्दी लगा देगें। इस विचार का काफी असर हुआ। और इसकी पहल गोपालपुरा से हुई।

लोगों में गोपालपुरा के काम को देखने की जिज्ञासा हुई और आसपास के लोगों ने गोपालपुरा आकर इन जोहड़ों से हुऐ लाभ को देखा और समझा। "जोहड़" बरसात के पानी को इक्ट्ठा करने की यहाँ की प्राचीन परम्परा है, जिसके ऊपर यहाँ की आर्थिक सामाजिक एंव प्राकृतिक समृद्रि टिकी थी। इस क्षेत्र का जल स्तर ऊपर

ही था, इसलिए इसे "नेड़ा" भी कहते है। लेकिन धीरे-धीरे लोग परम्परागत तौर-तरीके भूलते गये और सदियों से चला आ रहा प्रकृति चक्र टूट गया। कच्ची शराब, नुक्ता, अशिक्षा, बाल-विवाह और रोजगार के नाम पर मायूसी का आलम यहाँ बढ़ता गया। यहाँ के युवा लोग घर छोड़कर मजदूरी के लिए शहर निकल जाते थे।

अकाल पड़ने के कारण आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गयी थी। पशुपालन जो इनकी आय का एक मात्र स्रोत रहा वह भी सूखे के कारण जर्जर हो गया था। बचे कुचे पशुओं को लोग छोड़-छोड़ कर शहरों की तरफ भाग गये थे। अधिक चराई के कारण आसपास की पहाड़ियाँ पहले ही बिल्कुल नंगी हो गयी थी।

तरुण भारत संघ, भीकमपुरा-किशोरी, को सरकार का नोटिस

सरकार की बढ़ती विकास तृष्णा एक तरफ गला फाड़-फाड़ कर कह रही है, कि अब विकास के काम सरकार पर नहीं छोड़े जा सकते है। सब को मिलकर अकाल, भुखमरी, बढ़ती बेरोजगारी तथा पर्यावरण असन्तुलन का स्थाई हल खोजते हुए सतत् विकास की प्रक्रिया लोक शक्ति द्वारा आरम्भ करनी है। वहीं दूसरी तरफ जब इस प्रकार के काम गांव की जनता मिलकर करती है, जो सरकार की इच्छा के अनुरूप ही है, जैसे भीकमपुरा के आसपास के ग्रामों में तालाब व बांध बनाने का काम किया तो, इन जोहड़, बन्धों को बनाने वालों की पीठ ठोकना तो दूर की बात, उल्टे जनता की कमर तोड़ने के लिए राजस्थान के सिंचाई विभाग ने इन बन्धों को हटाने के लिए नोटिस जारी किया।

ये बन्धें जिला प्रशासन की जानकारी, विभाग अधिकारी की स्वीकृति के बाद सारे गांव की सलाह से बने थे।

बन्धों को बनाने के मुख्य उद्देश्य ये थे :

1. गोपालपुरा गांव जिसके पीने के पानी के सब कुंऐ सूख गऐ थे, उसमें पीने के पानी की समस्या का स्थाई हल करने तथा आसपास के गांवों में जल स्तर बढ़ाने।
2. भूमि कटाव तथा सिलटिगं की समस्या सदैव के लिए मिटाने।
3. पड़त भूमि पैदावार लेना।
4. मिट्टी घुल कर नहीं जाये तथा उसकी नमी एवं उपजाऊपन बना रहे।
5. नंगे पहाड़ों को हरा भरा करने के लिए जल उपलब्ध हो सके।

इन सारे उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गांवों की चौपालों पर व्यापक चर्चा आरम्भ हुई, चौपालों पर ही निर्णय हुआ, कि हम सब मिलकर श्रमदान करके तालाब के निर्माण

का कार्य करेंगे तथा बन्धें बनायेंगे। सामूहिक निर्णय से अपनी परम्परागत पानी रोकने की विधि के अनुसार ग्राम गोपालपुरा तथा गोविन्दपुरा में बंधो को निर्माण हुआ।

इन बंधों में किसानो ने श्रमदान किया तथा गरीब भूखे मजदूरों ने तरुण भारत संघ की "भूखों को भोजन योजना" के तहत प्रोत्साहन के रूप में 8 किलो गेहूँ प्रति व्यक्ति प्रति दिन दिया। यह गेहूँ किसानों को नहीं बल्कि बिल्कुल गरीब भूखे मजदूरों को जो गांव से पेट पालन के लिए बाहर जा रहे थे। ऐसे मजदूरों को गांव में रोक कर बेरोजगारी के समय में "ग्राम पूंजी" का निर्माण किया, तथा 15 गांवों में तालाब खुदे तथा 5 बांध बने। इन तालाबो में 45,000 मानव दिन श्रम हुआ तथा 10,000 मानव दिवस के लिए प्रोत्साहन के रूप में 800 क्विण्टल गेहूँ वितरित किया।

बन्धों की निर्माण की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह हुआ कि गांवों में भाईचारा बढ़ा तथा अच्छे संगठन बने, गांव शत-प्रतिशत शराब मुक्त हुए लोक भलाई के चिंतन की प्रक्रिया आरम्भ हुई। आपातकाल में दूसरों की तरफ नहीं देखना पड़े इसलिए ग्रामकोष का विचार पनपा।

ऐसे बांध जिनकी निर्माण प्रक्रिया में मानवता भाव बढ़े तथा निर्माण के बाद सर्वहारा तक को उत्पादन का लाभ पहुँचाने वाला हो जो सबके लिए प्रदूषण मुक्त हरा-भरा शुद्ध प्राणवायु वाला वायुमण्ड़ल देने वाले ये मिट्टी के बांध "स्वार्थ के बांध" को तोड़ते है। इसलिए स्वार्थी व्यवस्था तिलमिला उठी और इस व्यवस्था ने लोक कल्याण कार्यों को उखाड़ फेंकने का बीड़ा उठाया, जिसका परिणाम था सिंचाई विभाग का संघ को पहला नोटिस।

गोपालपुरा गांव के काम को इन्हीं दिनो राजस्थान सरकार के पर्यावरण विभाग के उच्च अधिकारी डा. महेन्द्र कुमार गोयल के नेतृत्व में एक टीम ने देखा एवम् निरीक्षण किया तो कहा, "राजस्थान में इतना अच्छा काम दूसरी जगह नहीं हो रहा है।"

गोपालपुरा में 60 से.मी. औसत वर्षा होती है, और कुल भूमि के तीस प्रतिशत भाग पर ही खेती की जाती है। कुल का 9 प्रतिशत हिस्सा ही सिंचित भूमि होने के बाद भी यहाँ पर लगातार पानी का स्तर गिरता जा रहा था। यहाँ के युवा रोजी-रोटी की तलाश में दिल्ली और अहमदाबाद चले गये थे, पीने का पानी भी नहीं था, बूढ़े, बच्चे और महिलाऐं कुपोषण से पीड़ित थे, महिलाओं का अधिकतर समय पानी की व्यवस्था में ही बीत जाता था।

जोहड़ बनाने की परम्परा 100 वर्षों से ही कमजोर हुई थी। जो पुराने थे, वे टूट गये या गाद से भर गये, क्योंकि अब पहाड़ियों पर न पेड़ रहे है, न नियमित वर्षा होती है, वर्षा होती भी है, तो पानी तेज गति से आता है, जो अपने साथ भारी मात्रा में कंकड़-पत्थर, मिट्टी आदि लाता है। इस मिट्टी से सभी पुराने बांध भर गये,

अब पानी रोकने के लिए कोई स्थान नहीं बचा, इसलिए भूमि पुनः सिंचित नहीं होती और अपने से जमा जल धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है। फलस्वरूप कुंऐं सूख गये हैं।

गांव की परम्परागत संरचना टूट चूकी थी, संघ से सम्पर्क होने पर ग्रामवासियों ने टूटे रिश्तों को और जोहड़ों को पुनः ठीक करना शुरू किया।

गोपालपुरा ग्रामसभा ने जल के साथ-साथ जंगल संरक्षण का काम भी आरम्भ किया व पांच सौ एकड़ गोचर का विकास किया, इसमें से हरी लकड़ी काटना बन्द कर दिया तथा इस पर पशु दबाव भी कुछ कम किया जिसके कारण कुछ क्षेत्र में आरम्भ हुआ यह प्रयास आज भी मनमोहक लगता है। उन्होनें अपने बांध जोहड़ को स्थाई बनाये रखने हेतु उसके कैचमेन्ट को भी हरा-भरा करने का अभियान चलाया था। 300 बीघा क्षेत्र में चारों तरफ बचाव दिवार करके इसे बन्द कर दिया था तथा इसमें पौधें व बीजारोपण का कार्य किया।

अब ईंधन के लिए उन्हें पेड़ काटने की आवश्यकता नहीं रहती, क्योंकि ईंधन के लिए अपनी फसल में ईंधन देने वाली ढ़ेंचा व अरहर (थोर) को शामिल कर लिया है इस प्रकार ईंधन के लिए महिलाओं की ऊर्जा व समय की बचत होती है इस प्रकार पर्यावरण सन्तुलन की दिशा में एक ठोस कदम बढ़ा है।

इस गांव में जोहड़ बनने के साथ-साथ समाज को बेहतर बनाने के बहुत काम हुए है। इस प्रकार हम कह सकते है कि गोपालपुरा में जोहड़ बनाने का शुद्ध रचनात्मक काम सत्य के लिए आग्रह रखने पर संघर्ष को बुलाता रहा है, तथा सहज रूप से उसे प्रेम में भी बदलता रहा है। जिस सिंचाई विभाग ने गोपालपुरा गांव के जोहड़ को तोड़ने का नोटिस दिया था, आज उसी विभाग के इंजीनियर तरुण आश्रम, आकर बातचीत करने लगे है। ये ही जोहड़ बनाने के काम की महिमा करते है। जोहड़ जो सरकारी लोगों को रास नहीं आते थे। अब उन्हें इसका महत्त्व स्पष्ट दिखने लगा है।

प्रभाव एवम् अनुभवो की ताकत का अहसास

प्रत्यक्ष लाभ को देखकर लोग काफी उत्साहित हुए। और फिर लोगों को जोहड़ बनाने हेतु साधन प्राप्त करने की जरूरत महसूस होने लगी। लोगों ने स्वयं संस्था से मिलकर अपने-अपने गांव में जोहड़ बनाने का निर्णय किया। संस्था ने जोहड़ निर्माण हेतु आवश्यक साधन जुटाने के लिए कई पैसे वाली संस्थाओं से सम्पर्क किया, उन्हें अपना काम एवम् विचार समझाया। जरूरत के अनुसार गांव में ही लोगों के साथ बैठकर साधन जुटाने एवम् ग्राम के श्रमदान सहयोग का निर्णय से एक योजना तैयार की इसके बाद आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट की सहायता प्राप्त करने के लिए उसे अपनी जरूरत क्षमता बताकर उससे आर्थिक सहायता प्राप्त कर ली। इस कार्य में कासा के सहयोग से आनाज हमे मिलता रहा था।

इस प्रकार साधन मिलने के बाद पुनः गांव में जाकर लोगों के साथ फिर बातचीत की गई। इस बार गांव के साथ मिलकर नये जोहड़ों के लिए जगह का चुनाव तथा पुराने जोहड़ों को गहरा करने का काम चालू हुआ। नई जगह का चुनाव करते समय कई बातों का ध्यान रखकर चुनाव होता था, लोगों के पशु जिस तरफ चरने के लिए जाते थे, उधर ही गांव वाले प्रायः जोहड़ का स्थान तय करते थे। इस बात का ये लोग अवश्य ही ध्यान रखते थे, कि वह स्थान अन्य स्थानों की अपेक्षा नीचे हो। यहाँ की मिट्टी थोड़ी चिकनी हो, तथा खाकरे की कंकरीली, जमीन नहीं हो तो अच्छा होता है। वैसे ऐसी जगह नहीं मिलती थी, तो लोग ढालू पहाड़ी के नीचे जिधर ग्रामवासी शौचादि के लिए नहीं जाते उधर कोई भी जगह तय करके जोहड़ बना लेते।

तीसरे वर्ष (1988) में भी अकाल था, इसलिए लोग बाहर जा रहे थे, लेकिन फरवरी मार्च में बाहर गये लोग एक बार वापस आते हैं। इसलिए मार्च में जब लोग यहाँ आये तो एक बार फिर लोगों ने जोहड़ के काम की जरूरत महसूस की, संस्था को भी सहायता मिलने की आशा हो गई थी। इसलिए जहाँ-जहाँ तैयारी हुई, काम चालू हो गये।

बाछड़ी गांव में प्रेमाराम मेवाल ने इस कार्य में बहुत रूची ली। इन्होंने अपने गांव में पीपल वाला जोहड़, बीच वाला, जंगल वाली जोहड़ी, बीजाकी ढ़ाह वाला जोहड़, बनाने के लिए लोगों को तैयार किया। भाल गांव में ब्रजमोहन गुर्जर नामक युवक ने बहुत रूचि ली तथा अपने गांव का एक संगठन बनाकर गांव में जोहड़ का निर्माण किया, इस छोटे से गांव में भी आपसी फूट थी, लेकिन यहाँ पर संस्था के विद्यालय के कारण एवम् सतत बैठकों से यहाँ काफी बदलाव आया तथा यहाँ पर हनुमान व ब्रजमोहन ने सारे गांव का एक बार फिर संगठन बना लिया तथा जोहड़ में आधा श्रमदान करके जोहड़ का निर्माण कर लिया। वैसे यहाँ के गुर्जरों के बारे में कहावत है, "रात को बैठे एक मत सुबह होई तो सौ मत" यह वास्तविकता होते हुए भी इस गांव में छोटा सा जोहड़ बनाना बड़ा चमत्कार था, यह इसलिए भी सम्भव हुआ कि यहाँ के लोग आसपास में जोहड़ बनते देख कर ये भी अपने गांव में जोहड़ बनाने के लिए तरस रहे थे। इनको बहुत जरूरत भी थी, यहाँ के कुंओं में पीने का पानी नहीं था। इस जोहड़ का सीधा लाभ इन्हें दीखता था।

काला लांका में जगदीश, आनन्दा, गोपाल तथा मीणों ने काफी उत्साह दिखाया और इन सबने मिलकर अपने गांव में कई पुराने जोहड़ों की मरम्मत करने का एक अभियान जैसा चला दिया, इसीलिए थोड़े से समय में ही पीपल वाली जोहड़ी, उड़द वाला जोहड़; गांव वाली जोहड़ी, को ठीक से गहरा करने में बहुत ही श्रमदान किया तथा बीजा की ढ़ाहा को बनाने में भी ये सब सहयोगी रहे।

सोती का गुवाड़ा तथा फकालों ने भी खूब काम किया। नये जोहड़ों के निर्माण में ग्रामवासियों का उत्साह सराहनीय था, सोती के गुवाड़ा में जोहड़ बनाने में व्यास के गुवाड़ा के लोगों ने बहुत मेहनत की। गोवर्धन शर्मा ने इस जोहड़ के लिए आसपास के गुवाड़ों को तैयार किया। रामजी का गुवाड़ा से भी इस जोहड़ में काम करने के लिए लोग आये। पहाड़ के नीचे के गांव के पशुओं को पानी पीने के लिए यह एक छोटा सा सुन्दर जोहड़ तैयार हो गया था। इस जोहड़ की पूरी योजना गांव वालों ने बनाई थी, उन्होंने ही इसके काम का संचालन किया था।

गु. कालोत में विधवा महिला जम्बूरी ने अपने पुरे गांव के हिस्से का श्रमदान अकेले ही किया था। इसने कहा कि मैं अपने शरीर की मेहनत से इतना तो कमा कर जाऊं जिससे आगे जाते ही मुझे पानी मिले। इसने साठ दिन अकेली ने काम किया। जिसका किसी से भी एक पैसा नहीं लिया। इसकी मेहनत की चर्चा चारों तरफ फैली तथा जब महिलाओं ने जम्बूरी की कहानी सुनी तो अन्य महिलायें भी बढ़-चढ़कर जोहड़ बनाने के काम में लग गई।

देवरी गांव में सम्पत्ति देवी के उत्साह के कारण पशुओं के पीने के लिए एक जोहड़ निर्माण हुआ जिसमें अब वर्ष भर पानी रहता है, इस जोहड़ के कारण ही एक कुंऐ में पीने का पानी भी हो गया है, लेकिन इस गांव में इस प्रकार के प्रत्यक्ष लाभ देखकर भी नये जोहड़ नहीं बनाये गये। लोगों का पशुपालन ही मुख्य धन्धा है। इसलिए खेती के लाभ के लिए अन्य नये जोहड़ बनाने के प्रयास यहाँ के लोगों ने नहीं किये। यहाँ का ग्राम संगठन जंगल बचाने के लिए पूरी सरिस्का में सबसे आगे हो गया था। अब यहाँ भी जोहड़ बन रहा है।

किशोरी गांव में पांचू मीणा ने अपनी ढ़ाणी के अन्य परिवारों को संगठित किया, जिनमें से रामपाल, श्री किशन, कन्हैया, बुद्धा, देबीसाहय के पिता छोटेलाल मीणा ने मेहनत करके अपना बांध बनाया, इन्होंने लाखों रुपये का काम अपने आप मिलकर किया था। इस लाखों रुपये के काम में संस्था ने केवल 32,460/- (बतीस हजार चार सौ साठ) रुपये का कुल सहयोग कारीगर की मजदूरी एवम् पाल पर मिट्टी डालने वाले बाहर के लोगों को मजदूरी के रूप में दिये। इस बांध के निर्माण से लगभग 150 बीघा जमीन सुधर गई। जिसमें खेती नहीं होती थी, लेकिन बन्धा बनाने से पानी रुकने लगा। जमीन में जो बड़े-बड़े नाले बन गये थे, वे ठीक होने लगे, नीचे की तरफ भूमि का कटाव रुक गया। इसके नीचे की तरफ 20 कुंओं में पानी बढ़ने लगा। जिन पांच परिवारों ने मेहनत करके इस बांध को बनाया था, वे पहले वर्ष में लागत से अधिक चने व सरसों की फसल प्राप्त कर खुशी के मारे फूले नहीं समाये। सबसे पहले फसल में से चनों का एक गट्ठड़ आश्रम को भेंट किया। तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता भी उस चने के गट्ठड को देखकर धन्य हो गये, तथा सोचने लगे हम तो बड़े भाग्यवान हैं, कि हम ऐसे सद् प्रयासों से लोगों के साथ जुड़े हैं।

जिससे खाने के लिए अन्न तथा पीने के लिए पानी जैसी जरूरी सामग्री पैदा होती है। दूसरे वर्ष में इस प्रकार भी कई गांवों में काम सम्पन्न हुए थे। जिनमें माण्डलवास मुख्य है।

माण्डलवास गांव में जोहड़ बनाने का अनुभव

तीसरा वर्ष संघ के लिए मधुर अनुभवों का था जिनमें माण्डलवास गांव मुख्य था, यह गांव गोपालपुरा गांव के पास का ही गांव है। यहाँ के लोग गोपालपुरा में होकर ही आते-जाते हैं। इसलिए गोपालपुरा का सबसे अधिक प्रभाव इस गांव पर पड़ा तथा यहाँ के लोगों ने उसी वर्ष काम को देखकर मन बना लिया था, कि गोपालपुरा से अधिक काम ये अपने गांव में करेंगे। इस गांव में सरकार का कोई आदमी व विकास का कोई काम नहीं पहुंचा था। इसलिए गोपालपुरा के काम यहाँ के लिये आश्चर्य तथा उत्साहवर्धक थे। इसलिए इन्होंने बार-बार संघ कार्यकर्ता से अपने गांव में काम करने की बात कहीं, यह दूसरी तहसील का है गांव तथा बड़े पहाड़ के दूसरी तरफ होने के बाबजूद दूसरे वर्ष में लोगों के आग्रह पर हम इस गांव पहुंचे।

इस गांव में जाकर देखा व्यक्ति को आरम्भ में जो आन्नद प्राप्त था, वह यहाँ अब भी शेष है ऐसा आभास हुआ। यहाँ का आपसी प्रेम देखने व समझने को मिला, लेकिन जैसे-जैसे व्यक्ति की चाह, मोह, भविष्य की चिन्ता, अविश्वास बढ़ता गया, वैसे-वैसे ही यहां का व्यक्ति भी प्रकृति एवं आनन्द से दूर हटता चला गया। वैसे अब भी गांव के लोगों को वही सुख व आनन्द प्राप्त होता है, जो भारत के गांवों को पांच सौ वर्ष पूर्व प्राप्त था।

माण्डलवास गांव वन्य जी अभयारण्य सरिस्का की बफर जोन में स्थित है। मीणा जाति आज कल की भाषा में पूर्ण रूपेण अनसूचित जनजाति के 75 परिवारों का गांव है। यहाँ के लोग स्वभाव से सहज, सरल है। ये अपने दूध पीने के लिए पशु पालते है। भोजन के लिए खेती करते हैं। पशुपालन में अधिक दूध देने वाले (शंकर नस्ल) के पशुओं का मोह नहीं है तथा खेती में अधिक कमाने के लिए रसायनिक खाद डालने का लालच भी नहीं है। शोक नहीं, संताप नहीं, बल्कि भगवान के प्रति विश्वास है।

आपस में कभी लड़ाई-झगड़ा हो जाये तो भ्रम नहीं, रोष नहीं, इर्ष्या नहीं, धोखे की चिन्ता नहीं बल्कि मिल बैठकर झगड़े सुलझाने की परम्परा वही पहले जैसी है। इसलिए अभी यहाँ विश्वास तथा प्रेम की गंगा जीवित है जो धीरे-धीरे बहती रहती है।

किसी के पास कभी खाने के लिए अन्न पैदा नहीं हुआ तो यह गांव का गरीब नहीं हो जाता था। और उसके खाने-पीने की कमी तभी हो सकती है जब सारे गांव

में कमी आ जाये, क्योंकि सब ध्यान रखते है। खाने की पूरी व्यवस्था करते है उसे पहले जैसा ही बराबर का सम्मान भी देते है।

गांव में कोई खेती करता है, कोई पशु पालता है किसी के हिस्से में गोबर इक्ट्ठा करने का काम आता है तो किसी के हिस्से में हल चलाने का काम आता है। तो कोई केवल खेत में रोटी पहुंचाने का ही काम करता है, इनमें काम के आधार पर कभी ऊंच-नीच का भाव नहीं देखा गया, गांव की सफाई करने वाला कालू भी गांव के निर्णय में बराबर भागीदार रहता है। यह यहाँ का अछूत नहीं है। सबके साथ बैठता है। इसे भी बराबर सम्मान मिलता है, इसके साथ ऊंच-नीच या मालिक-गुलाम का रिश्ता नहीं है।

यहाँ बिजली या केरोसीन की लालटेन का प्रकाश नहीं है, बल्कि आस्था व विश्वास का मन में प्रकाश है, जिसके प्रकाश में सब निर्भय होकर रात-दिन जंगल (जिसमें शेर से लेकर साँप तक सभी जानवर विद्यमान है) मे घूमते रहते है। उनसे भी अन्धेरे में धोखा होन का भय नहीं, बल्कि उनको भी अपने जैसा मानकर उनसे भी पूर्ण लगाव है। इस प्रकार सुख से जीने वाले माण्डलवास के निवासियों को आज पिछड़े असभ्य कहकर तथा कथित विकसित लोगों ने इनके साथ शादी-विवाह के रिश्ते बन्द कर दिये है। अब यहाँ अच्छे जवान लड़के-कुंआरे रह जाते है, लेकिन फिर भी उन्हें कोई संताप नहीं है। किसी भी प्रकार का व्याभिचार नहीं है। अभी तक यहाँ सरकार की विकास की कोई योजना नहीं पहुंची है। इसका इन्हें बहुत मलाल नहीं।

इन्होंने पास के गांव गोपालपुरा में "तरुण भारत संघ" द्वारा बनाये जोहड़ को देखकर अपने गांव में भी जल प्रबन्ध "जोहड़ बनाने" का काम चालू कर दिया है। गांव के दक्षिण से खेती को नुकसान पहुँचाने वाला पानी आता था, उधर से सारे गांव ने मिलकर पानी का रोकना आरम्भ किया। सबसे पहले धाण का वाला जोहड़ बनाया इस को बनाने से ही कुँओं में पानी होने लगा। फिर उसके बाद दूसरे पहाड़ के नीचे दूसरा सरसा वाला जोहड़ बनाया। उसके बाद गांव के पश्चिम में पहाड़ का सारा पानी रोकने के लिए बहुत गहरा जोहड़ बनाया जिसमें अब पूरे वर्ष पानी भरा रहता है। उसके बाद पूर्व के पहाड़ की तरफ एक छोटी जोहड़ी बनाई। इस प्रकार गांव के चारों ओर से बहकर जाने वाले पानी को गांव में ही रोकने का सफल प्रयास किया है, जिससे यहाँ अब बहुत अन्न पैदा होने लगा है, पशुओं के लिए घास की बहुतायत हो गई है। इस सबका इन्हें घमण्ड नहीं हुआ है, लेकिन इनका अपना खोया हुआ आत्मविश्वास इनमें वापस लौट आया है। अब ये इतना अवश्य सोचने लगे है, कि सरकार, संस्था, नेता कोई भी नहीं हो तो भी ये अपना काम स्वयं कर लेंगे।

मिट्टी व पानी के संरक्षण के साथ-साथ जंगल बचाने का बड़ा भारी काम इन लोगों ने किया है। इनको सैंकड़ों वर्ष पुराने दस्तूर पुनः याद आ गये है तथा ये उनका अब सक्रियता से पालन भी करने लगे हैं।

1. जंगली जानवर सबके है, इन पर कोई पाबन्दी नहीं है। वे हमारे पालतू पशुओं को भी खा जाये तो इन्हें कोई मारे नहीं। लेकिन बाहर के पालतू पशु यहाँ आकर नुकसान नहीं कर सके उन्हें ये मिल जुलकर रोकते है।
2. जंगल में कोई टांच्चा-कुल्हाड़ी लेकर नहीं जायेगा तथा कोई भी हरे पेड़ों को किसी प्रकार हानि नहीं पहुँचायेगा।
3. जंगल से कच्ची घास नहीं काटी जायेगी। दीपावली के बाद ही घास काटने व इक्ट्ठा करना शुरू करेंगे।
4. वन्य जीवों को किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं पहुँचाया जायेगा। यदि उन्हें बाहर का आदमी हानि पहुँचाने का प्रयास करे तो उसे पकड़कर पूरे ग्राम को इक्ट्ठा करके उस को सौंप दें। ऐसा करने वाले को सम्मानित करने का भी प्रावधान है।
5. गांव में प्रत्येक व्यक्ति एक-एक पेड़ लगाकर उसको पाल पोसकर बड़ा करेगा।

उक्त सारे दस्तूरों के पालन में कभी कोई गतिरोध पैदा हो जाता है तो फिर पुनः लोग ही सुधार करते है। गड़बड़ पैदा करने की कोशिश की गई तो उसके खिलाफ सत्याग्रह किया गया था। यह ग्रामसभा आसपास के 5 गांवों में सक्रिय होकर उक्त नियमों का पालन कराने के लिए चेतना का काम कर रही है। इनहें जंगल के पेड़-पौधे, घास-फूंस तथा पालतू पशुओं का अच्छा ज्ञान है। जंगली जानवरों के रहन-सहन आदि की अच्छी समझ हैं। इन्होंने मुख्यतः राजोर, कासंला, मथुरावट, कान्यास, कराट पीलापानी, किला नीचे, कालीखेत, खान्याली, गढ़ दबकन, गांव में भी जोहड़ बनाने की चेतना का काम किया है, इन गांवों में भी लोगों ने अपनी तरह से काम करने हेतु अन्य लोगों को तैयार किया है। इस ग्रामसभा ने राजगढ़ तहसील के 23 गांवों में पेड़ बचाओ पेड़ लगाओं पदयात्रा की है, हजारों पेड़ लगवाये है।

इस गांव का कोई भी मुकदमा अदालत में नहीं है। ये रसायनिक खाद व कीटनाशक दवाईयों का उपयोग नहीं करते हैं। इस गांव में सदियों से लगते आ रहे सावन की पूर्णिमा को लगने वाले मेले के दिन लोग पेड़ लगाते है। इस वर्ष लगने वाले मेले पर सभी ग्रामवासियों ने दिल खेलकर खुशी-खुशी पेड़ लगाये है। जिसका पेड़ अच्छा होगा उसे गांव वाले अगले वर्ष सम्मानित करेंगे।

गांव में सात जोहड़ बन जाने से अब पुनः इनके लड़को की शादी होने लगी। अब आसपास के गांव में इनका सम्मान होने लगा है। अब पास-पड़ौस के लोग इस गांव को "पेइ" कहने लगे है। पेइ का अर्थ अनाज रखने की कोठी है। जोहड़ गांव को पेइ बना देता है।

जोहड़ बनाने का चमत्कार - 1988

तीसरे वर्ष के अनुभव उत्साहवर्धक थे। इस सारे काम की चर्चा चारों तरफ फैल गई लोगों की ताकत प्रतिष्ठित हो रही थी। जिला प्रशासन द्वारा जोहड़ तोड़ने के नोटिस के बाद भी जोहड़ों का नहीं टूटना तथा राजीव गांधी मंत्रीमण्ड़ल की सरिस्का बैठक में ग्रामीणों द्वारा दिये गये ज्ञापन की सफलता तत्कालीन जिलाधाश की आंख की किरकरी बन गई थी। गांव में जोहड़ों के जल ग्रहण क्षेत्र, आगोर में वृक्षारोपण किये क्षेत्र में बन्धुआ मजदूर बसाये गये, पेड़ नष्ट किये गये दीवार तोड़ दी गई पुरा हरा-भरा क्षेत्र नंगा होने लगा इससे यहाँ के लोगों को झटका लगा। लेकिन लोगों के संर्घष में मदद करने के लिए सर्व श्री प्रभाष जोशी, चन्ड़ी प्रसाद भट्ट, अनील अग्रवाल, अनुपम मिश्र, जी. डी. अग्रवाल, सुश्री सुनीता नारायण, श्रीमती मन्जु मिश्रा का बहुत सहयोग मिला। गांववासियों ने भी अपने आपको बहुत सम्भाला। पेड़ बचाने के लिए गोपालपुरा के लोगों ने क्षेत्र को घेर कर पेड़ बचाने के प्रयास किये। लेकिन राज्यसत्ता को समझाने हेतु लम्बा प्रयास करना पड़ा फिर भी क्षेत्र तो बरबाद हो गया था परन्तु इस प्रकरण का सबसे अच्छा पहलू यह रहा कि जिलाधीश जी को अपनी गलती का अहसास हुआ। वे गांव में आये उन्होंने पेड़ लगाने हेतु साठ बीघा जमीन तथा दस हजार रुपये गांव को दिये। फिर सभी के साथ सामुहिक भोजन हुआ और ये प्रेम से मिलकर रहने लगे।

ऊपर की घटना से गोपालपुरा गांव पर जरूर बुरा असर हुआ, लेकिन जोहड़ बनाने का काम तो जड़ पकड़ चुका था। यह बराबर तेजी से आगे बढ़ता रहा एक के बाद एक काम चालू होता, पुरा होता दिखाई देने लगा। नये-नये गांवों के अनुभव से लोगों में चमत्कार होने लगा।

अंगारी के जोहड़ का अनुभव एवम् चमत्कार

अरावली पर्वत की उत्तरी पूर्वी श्रृंखलाओ में अलवर जिले की थानागाजी तहसील में स्थित "अंगारी" गांव के निवासियों ने मिलकर संघ की प्रेरणा से यहाँ एक जोहड़ 1988 में बनाया था। यह संघ के काम का तीसरा वर्ष था, यहाँ के श्री रामनिवास मीणा की गोपालपुरा में रिश्तेदारी थी, वे यहाँ आते-जाते थे, यहाँ का काम देखकर उन्होंने भी अपने गांव में इसी प्रकार एक जोहड़ बनाने का तय किया और अपने खेतों पर मिलकर जोहड़ बना लिया।

इस गांव का कुल क्षेत्रफल 1163 हेक्टयर है, जिसमें 95 हेक्टयर भूमि पर सिंचाई होती है। 336 हेक्टयर असिंचित खेती होती है। शेष 732 हेक्टयर भूमि पर पहाड़ी श्रृंखलाये हैं। इस क्षेत्र में खेती नहीं हो सकती है। इस पूरे पहाड़ी क्षेत्र का पानी दो हिस्सों में बंट जाता है। एक हिस्से के पानी को गांव वालों ने मिलकर रोकने के लिए जोहड़ बनाने का तय किया था। उसकी साईट भी ग्रामवासियों ने ही चुनी थी, इसके निर्माण के लिए तरुण भारत संघ ने कुछ आंशिक आर्थिक सहयोग कराने की व्यवस्था करने की जिम्मेवारी ली थी। इसमें जिनके खेत थे, उनसे मिलकर श्रमदान किया। इसके निर्माण में कुल 2769 मानव दिन रोजगार मिला। 65 वर्ग फिट प्रति मानव दिवस मिट्टी का काम हुआ जिसके 15/-(पन्द्रह रुपये) की दर से 41,535/ (इक्तालीस हजार पाँच सौ पैतीस रुपये) मात्र का कुल काम हुआ। जिसमें से कुल 11,055/- (ग्यारह हजार पैसठ रुपये) की मजदूरी का भुगतान निहायत गरीब मजदूरों को ही किया गया। इन मजदूरों का इस बन्धें की मूल मल्कियत में हिस्सा नहीं था, इसलिए उन्हें इनके परिश्रम का पुरा पारितोषिक नकद दिया गया। इनके पास अन्य कोई भोजन का आधार नहीं था। इसलिए भी इन्हें भुगतान किया गया था। शेष कार्य श्रमदान के रूप में उन ग्रामवासियों ने किया जिनकी इसमें जमीन हैं। इसमें संघ के कार्यकर्ताओं ने भी श्रमदान किया। फलस्वरूप लगभग 900 फिट लम्बाई 10 फिट गहराई वाला मिट्टी का यह जोहड़ बनकर तैयार हो गया।

जुलाई 88 की वर्षा से यह जोहड़ पूरा भर गया। इसका लगभग 7 हेक्टयर भराव क्षेत्र है, जिसमें पानी फैल गया था। यह सारा पानी अक्टूबर अन्त तक खत्म हो गया, और इस सारी भूमि में गेहूँ बो दिये गये। इसमें बिना किसी प्रकार का खाद डाले ही बहुत अच्छी गेहूँ की फसल पैदा हुई।

नीचे की तरफ के सात कुंओं में जल स्तर ऊपर आ गया है, जिनमें से कुछ कुंए तो ऐसे हो गये है, कि उनका पानी नहीं टूटता है। इस प्रकार कुंओं के द्वारा लगभग 23 हेक्टयर क्षेत्रफल कुंओं से दो बार व तीन बार सिंचित होने लगा। ये वे कुंऐ थे, जिनका जल बहुत कम हो गया था या बिल्कुल सूख गये थे।

इस जोहड़ के निर्माण से लगभग 50 हेक्टयर भूमि का कटाव (इरोजन) व जमाव (सिल्टिगं) रुक गया है। पानी के साथ इस गांव की लगभग 150 हेक्टयर भूमि का उपजाऊपन बहकर बाहर जाने से रुक गया। इस गांव की उपजाउ मिट्टी जो कि इस गांव की पूंजी है, प्रतिवर्ष बह जाती थी। इसकी हानि का ठीक हिसाब रखना ही कठिन हैं, तथा यह क्षतिपूर्ति सम्भव भी नहीं है। इस बांध के कैचमैन्ट में नंगी पहाड़ियां होने के कारण तेज बरसात में मिट्टी का कटाव अधिक होने लगा है। जिस मिट्टी की उपज़ाऊ पर्त को बनने में कई सौ वर्ष लगे थे, वह अब जन दबाव, अनियमित वर्षा, वृक्ष विहिन ढ़ाल, पहाड़ियों पर पानी के वेग के कारण बहकर चली ज़ाती थी। अब यह बिगाड़ रुक गया है। इस बन्धें से दो सौ हेक्टयर भूतल में नमी बनी रहेगी।

जहाँ नमी है वहाँ पर घास अधिक जम रही है, किंकर, रोज, पापड़ा, नीम, पीपल, आदि के वृक्ष स्वतः जमने लगे हैं। जिससे आसपास की परिस्थितिकी का विकास हो रहा है। जंगली जानवरों, तथा पालतू पशुओं को बारह माह पीने का पानी मिल रहा है। आसपास के वृक्षों पर पक्षी अपने घोंसले बना रहे है।

इस जोहड़ के निर्माण के फलस्वरूप लगभग 200 (दो सौ क्विण्टल) अनाज अतिरिक्त पैदा होने लगा है। पशुओं के लिए चारा मिलने लगा है।

इस गांव के श्री रामनिवास मीणा जिनके नेतृत्व में यह कार्य सम्पन्न हुआ, उनके खेत भी इस बांध से लाभान्वति हुए हैं। उनका कहना है, कि यदि यह जोहड़ नहीं बनता तो हम 17 परिवार तो उस अकाल में गांव छोड़कर बाहर चले जाते हमारा कोई "धणी धोरी" नहीं था। हमारा तो मालिक यह जोहड़ ही है।

इस गांव का प्रभाती कहता है, कि इस बांध के कारण हमारी अब उसी जमीन पर तीन गुंणी फसल पैदा होने लगी है।

छोटे बलाई का कहना है सरकार ने तो आज तक हमारा कोई काम नहीं किया, पर यह जोहड़ बन गया तो अब हम भी इस गांव में रह जायेंगे। नहीं तो दूसरों की तरह मकान बनाने के काम में दिल्ली जाना पड़ता है।

इस जोहड़ के बनने से लगभग 100 व्यक्तियों को अपनी ही उसी जमीन पर 90 दिन का अतिरिक्त रोजगार मिल गया है। जिसके कारण अब गांव की पूंजी है। यह ऐसी पूंजी है, जो सतत भाई-चारे को बढ़ाती हुई सहकार को वास्तिक रूप से कायम रखती है। प्राकृतिक संसाधनों का विकास करती है। ऐसी यह पूंजी "छोटे जोहड़" जगह-जगह पर बनाकर सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव की प्रक्रिया को तेज करती है।

इस जोहड़ के बनाने में किसी डिग्री प्राप्त इंजीनियर के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं हुई। बस गांव वालों को 5-7 बार मिलकर बैठना पड़ा। सब कुछ तय करने के लिए, अब इस जोहड़ को देखकर आसपास के गांव वाले, तथा इसी गांव का शेष जल जो दूसरी साईड से बह जाता है उसे भी गांव के लोग मिलकर आने वाले समय में एक जोहड़ बनाकर रोकने की तैयारी कर रहे है।

इस गांव के काम को देखकर नांगलबनी, झाकडियाँ आदि आसपास के लोगों ने भी जोहड़ बनाने का काम आरम्भ किया है।

भूरियावास गांव में जोहड़ बनाने की अनुभव

भूरियावास गांव का जोहड़ सुन्दरा गुर्जर के प्रयास से बना। वह व्यक्ति इस गांव का सज्जन-सरल व्यक्ति था, इसने देव का देवरा तथा हमीरपुर साईड में बने जोहड़ों को देखकर अपने गांव में जोहड़ बनाने का काम चालू करने का विचार किया

था। तभी यह तरुण आश्रम में आया था। स्कूल के पास पूरे परिवार को तथा गांव को लगाकर अपना जोहड़ बना लिया था। स्कूल के पास इस जोहड़ के बाद दो छोटे जोहड़ कोल्याला, भूरियावास में बने, जिसमें पूरे ग्राम ने श्रमदान किया था।

इस गांव में सामलात देह संरक्षण के भाव प्रबल थे, इसलिए इन्होंने जोहड़ बनाने के साथ-साथ अपने जंगल बचाने के बहुत भारी प्रयास किये।

ग्राम भूरियावास अलवर जिले की थानागाजी पंचायत समिति के दक्षिण में स्थित है। यह गांव अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ लम्बाई में 5 कि.मी. चौड़ाई में 2 कि.मी. है। गुर्जर, मीणा, बलाई, बाहुल्य है। बनिया, राजपूत, ब्राह्मण, कुम्हार, रैगर, कीर अन्य सभी जातियों को निवास देने वाला यह गांव कुछ अर्थों में एक आदर्श गांव है। ये सभी गांववासी मिलकर सबके हित में सोचते है। कोई संकट का समय हो तो सब एक दूसरे की मदद करने के लिए तैयार रहते है।

यहाँ के ग्रामवासियों को अनेक बार जंगल का शोषण करने वाली ताकतों से कठिन संघर्ष करना पड़ा है। ये ताकत कुछ तो इनके अंदर गांव हीं थी कुछ आस-पड़ोस के गांव से आकर पेड़ काटते थे। पड़ोसी गांव क्यारा, काबलीगढ़, बामनवास, डेरा, खरड़ाटा के बहुत से पशुपालकों व लकड़ काटने वालों से बराबर युद्ध चलता रहता है। उन्हें समझाया भी है। कई मौके आये जबकि उक्त गांव के लोगों के पेड़ काटने वाले हथियार इस ग्रामसभा ने छीन लिये तथा उन्हें पेड़ काटने से रोक दिया है।

ग्रामसभा के बहुत से लोग स्वेच्छा से पहरा देने के लिए जंगल क्षेत्र में तैनात रहे है। ये छोटे-मोटे संकट से तो स्वयं निबटते है। जब कोई बड़ा संगठित समूह इस जंगल को नुकसान पहुँचाने की कोशिश करता है और ये उसे नहीं रोक पाते है तो फिर ग्रामसभा को सूचना देते है उसके बाद ग्रामसभा संगठित प्रयास करती है। अनेक अवसरों पर इन्होंने घुमन्तू पशुपालकों के बड़े-बड़े दलों से अहिंसक लड़ाई लड़कर जंगल को बचाया है। साथ ही साथ उन्हें जंगल तथा पशुओं के सम्बन्ध भी समझाये। तथा पेड़ों को बचाने का काम उनके ही लिए वैसे उपयोगी है इस पर भी चर्चा की। "पेड़ बचाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" का नारा इसी ग्रामसभा ने बुलन्द किया था, तथा वह पदयात्रा इसी गांव से एक अगस्त 1989 को आरम्भ हुई थी। यहाँ पर बहुत से पेड़ लगाये है, सरकारी वृक्षारोपण में भी इन्होंने बहुत सहयोग किया है। ये तरुण भारत संघ द्वारा आयोजित पर्यावरण चेतना शिविरों, पद यात्राओं सम्मेलनों में बराबर भागीदार रहे।

आसपास के गांव आगर, नांगल, अंगारी तक भी इस ग्रामसभा ने पेड़ बचाने के आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया है। यहाँ की ग्रामसभा का अधिकतर समय जंगल बचाने के काम में लगता है। इन्होंने सांवतसर, डूमोली, खरड़ाटा झिरी आदि गांवों में

जंगल बचाने के लिए ग्राम सभाए गठित की है। ये अब भी समय-समय पर इन ग्रामसभाओं को सम्भालते रहते हैं।

जंगल में अपराध करने वालों से आर्थिक दण्ड भी वसूल किया है इस प्रकार वसूल की गई राशि को भी इन्होंने साथ ही साथ जोहड़ निर्माण व वृक्षारोपरण जैसे कामों में लगाया है।

इस ग्रामसभा ने दूसरे गांव के लोगों को भी अपनी बैठकों में समय-समय पर बुलाकर सारे जंगल क्षेत्र को बचाने के संयुक्त प्रयास करने की शुरूआत की है।

यहाँ पर ग्रामसभा द्वारा चलने वाले विद्यालय में स्थानीय परिवेश का अध्ययन कराया जाता है, जिसमें पेड़ों, पशुओं जंगली जीवों के व्यवहार तक को सम्मिलित किया गया है। यहाँ पर संस्था द्वारा चलाये जा रहे विद्यालय में पढ़ाने वाला भी स्थानीय व्यक्ति ही है।

बच्चों में पेड़ तथा जीव के प्रति प्रेम की भावना पैदा करने पर अधिक जोर दिया गया है। इस प्रकार पर्यावरण चेतना प्रसार की दृष्टि से यहाँ महत्वपूर्ण कार्य हुआ है।

इस गांव में पेयजल जागरूकता के साथ-साथ पारिस्थितिकी विकास शिविर एवम् पर्यावरण चेतना प्रसार हेतु महिला जागृति शिविर भी आयोजित किये गये हैं। जिसमें भोजन बनाने में काम आने वाले ईंधन पैदा करने तथा बचत करने पर अधिक जोर दिया गया। भविष्य में ईंधन के लिए काम आने वाली तमाम लकड़ी फसल चक्र में बदलाव से पैदा करने का भी संकल्प लिया है। यहाँ पर गोबर गैस लगाने के प्रयास भी जारी है।

यहाँ का युवाजन पर्यावरण चेतना में बहुत आगे है। महिलायें इस दिशा में जागरूक है, तथा ये जंगल बचाने के लिए काम कर रही है। जिसके परिणामस्वरूप इनके गांव के चारों तरफ जंगल पुनः जीवित होने लगा है।

भूरियावास गांव की सामलात देह को बचाने बढ़ाने में गुर्जरों, ठाकुरों, कुम्हारो, बनियों, ब्राह्मणों का सभी का बहुत सहयोग रहा है, लेकिन सबसे उल्लेखनीय काम श्रीमती रूपा ने किया। इनके नेतृत्व में मोहनी, मनभर, आदि महिलाओं का भी बहुत योगदान रहा है। यहाँ के जगदीश, भरता, श्रवण गुर्जर ने दूसरे गांवों में भी बहुत जोहड़ बनाने का प्रेरणादायी काम किया है। अर्जुन, छितर तो हमेशा गांव के सामलाती काम में आगे रहते है। कोल्याला गांव के श्रीनाथू गुर्जर ने भी भुरियावास के जंगल में पेड़ नही कटें इसकी निगरानी रखी है।

---- इस वर्ष में जोहड़ बनाने के जो चमत्कारी काम हुऐ। लेकिन वन विभाग (सरिस्का) के अधिकारियों ने पूरी ताकत से संस्था को इस क्षेत्र में काम नहीं करने

देने की ठान ली थी। तत्कालीन क्षेत्र निर्देशक तो अपने आपको संविधान से भी ऊपर मान बैठा था। उसने लिखित आदेश दिया कि आप इस क्षेत्र में कोई काम नहीं कर सकते। लेकिन लोगों की ताकत हमारे साथ थी। जोहड़ बनने से लोगों को जो राहत मिली थी उन सबने कहा पहले हमे यहाँ से निकालो। जब तक हम यहाँ है, तब तक संघ के कार्यकर्ता भी हमारे साथ रहेंगे। ये हमारे बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ चिकित्सा सेवा का काम भी करेंगे। लोगों ने इस मांग को लेकर क्षेत्र निर्देशक का घेराव किया और अन्त में उसे लोगों की बात माननी पड़ी।

बात तो मान ली, लेकिन वह हमें बराबर सताता रहा। हमारे 377 ग्रामवासियों के साथ-साथ नानगराम, गोर्वधन, लक्ष्मण तथा मेरे ऊपर झूठे अलग-अलग मुकदमें दायर कर दिये। फिर हमने इन झूठे मुकदमों को समाप्त कराने हेतु संघर्ष किया। इसमें हमें सफलता मिली तथा क्षेत्र निर्देशक को ही सरिस्का छोड़ना पड़ा। कई और अधिकारी निलम्बित हुऐं। ये सब काम हमने इन्हीं के विभाग की मदद से किये। अपराधी अधिकारियों को मौके पर ही उच्च अधिकारियों को प्रत्यक्ष दिखाकर पकड़वा दिया। इस प्रक्रिया में सरिस्का के लोग भी बराबर शामिल रहे।

इस काम में देवरी के परताराम, भम्बू, प्रभाती, राड़ा का प्रभात, दयाराम, क्रास्का के गणपत, हरिपुरा से प्रभू, बदरी, पांचू, हीरालाल, माण्ड़लवास से बिरदू, जगदीश (पढ्या), कांसला से भौरा, काला खेत से रामप्रताप, कान्यास से पांचू, कांकवाड़ी से राधाकिशन आदि बहुत से लोगों का सक्रिय सहयोग हमें मिला।

जोहड़ परम्परा के सामने दूसरी सब ताकत बौनी है

पाँचवा वर्ष : 1989

पाँचवे वर्ष में संघ को जोहड़ बनाने वाली संस्था के रूप में थानागाज़ी तहसील के अलावा राजगढ़ व अमरेण में भी बहुत जोर-शोर से निमंत्रण आने लगे थे। राजगढ़ तहसील के गांव गुर्जरों की लोसल में संघ से बात किये बिना पहले ही अपनी पूरी तैयारी कर ली, उसके बाद संघ के कार्यकर्ता को बुलाकर जोहड़ बनाने के काम में कुछ सहयोग मांगा, कार्यकर्ता श्रवण शर्मा ने उस कार्य में तत्काल सहयोग करने की बात स्वीकार कर ली। बिना किसी मंत्री आदि से पूछे ही यहाँ का काम चालू हो गया, आधे से ज्यादा पूरा होने पर संघ ने 25,000/- (पच्चीस हजार रुपये) की मामूली मदद की। जिसे लोगों ने आपस में बराबर बाँटकर जोहड़ का काम पूरा कर लिया।

गुजरों की लोसल के जोहड़ का अनुभव

इस गांव में कुल 22 कुंए है, लेकिन ये गत 7 वर्षों से सूखे पड़े थे, पीने के पानी का भयंकर संकट था, लेकिन ग्रामसभा ने सरकार पर काफी दबाव बनाकर एक हैण्ड पम्प लगवा तो लिया लेकिन यह खराब ही पड़ा रहता था, यहाँ पीने के पानी की बहुत परेशानी थी। इससे निबटने हेतु गांव के ऊपर उत्तर (पहाड़) दिशा में एक बड़ा जोहड़ बनाने की ठान ली।

दीवाली के आस-पास काम चालू किया। पचास-साठ ग्रामवासी नित्य काम पर जाते थे, फिर भी यह काम जेठ माह की पूर्णिमा तक चला। नौ माह के अथक (बिना रुके) काम करने के पाद जोहड़ तैयार हो गया। इस जोहड़ को देखकर जिले के सबसे बड़े इन्जिनियर ने कहा था "यह गांव बह जायेगा" यह जोहड़ ठीक नहीं बना है। स्थानीय विधायक जी इस जोहड़ को दो बार देखने गये तो उन्होंने कहा "जोहड़ ठीक तरह नहीं बना है। गांव बह सकता है" लेकिन ग्रामवासी अपनी धुन के पक्के थे, और अपने काम में आंख बन्द करके लगे रहे।

जोहड़ पूरा होने के चार दिन बाद वर्षा बहुत जोरों से हुई। जोहड़ आधा भर गया। लेकिन उसका कुछ नहीं बिगड़ा। वर्षों के बाद आज भी वह अपनी शान से खड़ा है। इसके नीचे कुँओं में इस वर्ष जल स्तर बढ़ा है। इसके नीचे की तरफ मक्का की बहुत अच्छी फसल खड़ी है। लगता है अब इस गांव के संकट के दिन बीत गये।

' ग्रामसभा की नियमित मासिक बैठक में ग्राम के आपसी मामलों पर बातचीत की जाती है। यहाँ आपसी लड़ाई-झगड़े का कोई मुकदमा अदालत में नहीं है। यहाँ के लाग शराब नहीं पीते। हरे पेड़ों के संरक्षण के लिए इन्होंने कई गांव से लडाई भी मोल ली है। अपने पेड़ों के संरक्षण का संकल्प यहाँ बिना बताये देखा जा सकता है।

सरकारी स्कूल नहीं है। ग्रामसभा की तरफ से यहाँ एक शिशु पालना गृह एवं विद्यालय चलता है।

गांव की सामूहिक सफाई से सेन्द्रीय खाद बनाकर अपनी फसल में ड़ालते है। यहाँ के लोग कीटनाशक दवाईयाँ व सरकारी खाद (रासायनिक खाद) का उपयोग नहीं करते।

जंगल में हरियाली व चारा बढ़ने से यहाँ पर दूध की बहुतायत हो गई है, इस बहुतायत को देखकर सरकार ने दूध की लूट के लिए एक डेयरी चालू कराई है। गांव सभा ने अन्य कामों के लिए जयपुर-अलवर की बहुत भागदौड़ की थी लेकिन कुछ नहीं हुआ तो दूध की डेयरी को यह कहकर बन्द करा दिया कि सरकार का जब इस गांव में अन्य कोई काम नहीं तो हम सरकार को अपना दूध क्यों पिलाये?

अब इस गांव में सरकारी सुविधा या सरकार की पहुँच के नाम पर केवल एक खराब पड़ा हैण्डपम्प ही है, इसके अलावा कुछ नहीं है। यहाँ की आपसी समझ बहुत अच्छी है, जिससे इन्होंने एक वर्ष के अन्दर गांवों से प्रत्येक परिवार के एक व्यक्ति ने 125 दिन गांव के लिए सामलाती काम किया है। इस प्रकार 125x22=2750 x 50 = 1,37,500/- रुपये यह ग्रामसभा के द्वारा तैयार की गई ग्राम पूंजी (ग्रामकोष) है। इसके अतिरिक्त 400/- रुपये पेड़ संरक्षण के गाँवाई दस्तूर का उल्लंघन करने वाले से प्रायश्चित स्वरूप मिले हैं। इस गांव में कोई सरकारी नौकर नहीं है। पिछले कई वर्षों से फसल नहीं हुई इसलिए अनाज इक्ट्ठा नहीं हो पाया था पर घी खूब होता है। वह इक्ट्ठा हुआ था। उसे इन्होंने 10 अगस्त, 89 को भेरू बाबा के स्थान पर "पेड़ लगाकर भण्डारे में खर्च कर दिया, दूध बहुत है, जब भी ग्रामकोष में दूध की जरूरत होती है जितना चाहिए उतना ही इक्ट्ठा हो जाता है।" उसी तरह 50/- रुपये प्रत्येक परिवार से ग्रामकोष के लिए अलग से इक्ट्ठे हुए हैं। इस प्रकार 50 x 70 = 3,500/- वह पूंजी ग्रामकोष में जो इक्ट्ठा होती है उसे बराबर काम में लेते रहते हैं। कजोड़ गुर्जर गरीब है, इसकी ग्रामकोष से मदद की है। उसकी बीमारी में सब उसका हाल-चाल पूछते हैं।

संघ का कार्यकर्ता श्री श्रवण लाल शर्मा इसी गांव में रहता है, इसने ग्राम के निर्णयों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ के युवाओं, बुजुर्गों सभी ने मिलकर जोहड़ बनाने का काम किया है।

इस जोहड़ के अनुभव से हम सबका उत्साहवर्धन हुआ, हमे नैतिक बल भी मिला।

इस वर्ष में गुर्जरों की लोसल जैसे अनेकों उदाहरण सामने आये, तथा बहुत से बड़े-बड़े जोहड़ तैयार हुए। जोहड़ बनाने में लोगों का उत्साह देखकर इन्हें सम्मानित किया गया।

3 फरवरी को जल संरक्षण एवम् पेड़ संरक्षण सम्मेलन तरुण आश्रम में आयोजित हुआ इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा ने की तथा श्री प्रभाष जोशी ने लोगों को तिलक लगाकर हरे व नीले रंग की चादर उढ़ाकर सम्मानित किया। इस सम्मेलन ने एक बार पुनः जोहड़ निर्माण को तेज करने हेतु प्राण डालने जैसा काम किया तथा फिर पुनः दबा हुआ काम उठने लगा।

हाँ कुछ स्वार्थी तत्वों ने इस कार्य का विरोध भी किया। गांव वालों को भी भड़काया, कुछ कार्य की गति में भी प्रभाव पड़ा व कुछ निर्णय होने के बाद भी कार्य के तरीके बदलने पड़ें। परन्तु ये स्वार्थी तत्व उस समय असहाय हो गये जब ग्रामवासियों ने ज्यादा आगे बढ़कर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। ये कार्य उन्हीं गांवों में सफलतापूर्वक हो सके जिनमें संगठन बना क्योंकि गांवों की पुरानी कहावत भी है कि जब गांव का संगठन बनेगा तब बांध बनेगा। गांव का संगठन टूटेगा तो बांध भी टूटेगा।

क्षेत्र के कुछ पढ़े-लिखे बुद्धिजीवी लोग इसे आर्थिक एवं सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया मानते हैं तो कुछ इसे केवल जल संरक्षण की परम्परागत उपयुक्त विधि बताते हैं।

गांव के लोग इन बांधों को अपने लिए वरदान मानते हैं तो कुछ क्रान्तिकारी साथी इसे लड़ाई की तैयारी का प्रवेश द्वार बताते हैं। ग्राम स्वराज के काम में लगे सर्वोदय आंदोलन के मित्र इन बांधों को ग्राम स्वायत्ता की दिशा में ठोस कदम मानते हें तो जल प्रदूषण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष डा. जी.डी. अग्रवाल इन बांधों को आर्थिक बदलाव के लिये लोगों के अभिक्रम से होने वाला व्यापक अभिष्ट कार्यक्रम मानते हैं लेकिन वे इन बांधों को अपनी आधुनिक इंजीनियरिंग के अनुकूल नहीं मानते हैं। यह प्रतिक्रिया उन्होनें 21 अगस्त 89 को-इन बंधों को देखने के बाद करी।

कुछ गांव वालों ने इन बांधों को अपने पूर्वजों व पूर्वजन्म का पुण्य कहा है तो कुछ दलगत राजनीतिज्ञ इसे संघ द्वारा जमीनों पर कब्जा करने की एक साजिश बताते हैं।

बांध बनाने का कार्यक्रम ग्रामवासियों के साथ रहकर उनकी पीड़ा में भागीदार बनने से निकला हुआ कार्यक्रम है। इस बांध निर्माण के कार्य का सारा श्रेय क्षेत्र के ग्रामवासियों को जाता है जिन्होंने अपनी लगन और परिश्रम से क्षेत्र में 105 तालाब और 35 बांध बनाकर तैयार किये हैं। इन तालाबों और बन्धों से इस क्षेत्र में आया सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन ही हमें और अधिक कार्य करने की शक्ति एवं प्रेरणा दे रहा है।

संघ की टीम इस बात को अच्छी तरह जानती थी कि स्वप्रेरणा स्वश्रम और स्वअभिक्रम से किया कार्य ही लोगों के अनुकूल और फलदाई होता है। इसलिये

ग्रामवासियों को बराबर यह समझाने की कोशिश की गई कि बन्धों का निर्माण ग्रामवासी स्वयं मिलकर करें। इससे बन्धों के साथ एक अपनापन, मेलजोल, भाईचारा बढ़ता है परन्तु अकाल एवं सूखे के कारण चूँकि गांव में भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो गई थी इसलिये कोई भी ग्रामवासी बिना पैसे के शुरू में काम करने को तैयार नहीं हुआ एवं संस्था के पास भी प्रारम्भ में ऐसा कोई साधन नहीं था इसलिये भारी परेशानी हुई। अंत में संघ ने ग्रामवासियों के साथ यह निर्णय लिया कि किसी भी बांध या तालाब के निर्माण को तब तक आरम्भ नहीं किया जावेगा जब तक कि स्थान का चयन, काम के संचालन की जिम्मेदारी तथा चौथाई श्रमदान गांव वालों का नहीं होगा। बाद में कासा एवं-आक्सफोम ने आर्थिक सहायता दी तथा दो वर्ष पश्चात भारत सरकार ने भी सहायता प्रदान की।

अब कुछ लोग स्वयं भी बांध एवं तालाबों का निर्माण करने लगे हैं तथा सरकार पर भी एक दवाब बना है जिससे सरकार ने मजबूर होकर क्षेत्र में बांध एवं तालाब बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इनके फैलाव की क्षेत्र में बहुत अधिक आवश्यकता एवं गुंजाइश भी है। इस तरह के बांध बनाने के लिये किसी विशेष सर्वेक्षण की आवश्यकता भी नहीं है। गांव वालों को सारा ज्ञान होता है कि कहां कितना पानी आता है, कहां पर पानी रोका जा सकता है व कैसे रोका जा सकता है। पानी रोकने के लिये कितनी मोटी पाल बनाने की जरूरत है। इन बांधों के निर्माण के लिये सिर्फ शारीरिक श्रम की आवश्यकता है और इस समय हमारे देश में सबसे अनुपयोगी "श्रम" ही है जिसका उपयुक्त उपयोग नहीं हो पा रहा है। इस तरह के काम से हमारे शरीर श्रम के उपयोग का एक नया आयाम खुल गया है। इनके फैलाव से लोगों में शक्ति सृजित हो रही है।

चूंकि यह वर्ष जोहड़ों के जल ग्रहण क्षेत्रों की परमपरागत तरीके से हरा भरा करने पर सरकार के कुठाराघात के दुष्प्रभाव दिखाने वाला वर्ष था। इसलिए काम कुछ कम होना चाहिए था। लेकिन आश्चर्य इस बात का है, कि लोगों की सामलाती काम करने की परम्परा के सामने यह दुष्प्रभाव टिक ही नहीं पाया। ऐसा लगता जैसे लोगों की परम्पराओं की शक्ति के सामने कोई भी ताकत बौनी है।

परम्पराओं से सिखाने की प्रक्रिया - 1990

स्थानीय ग्रामीण युवा जो संघ के साथ जुड़े उन्हें अपनी परम्पराओं को समझने-जानने के लिए अनुकूल ही कुछ काम दिये। उन्हें सूरतगढ़ गांव में काम शुरू करने से पहले वहाँ की पूरी स्थिति का अध्ययन कराया गया, फिर जोहड़ों का काम शुरू करने की तैयारी प्रक्रिया समझाई गयी। साथ-साथ काम के प्रभावों का रिकार्ड़ भी रखना सिखाया। इससे जोहड़ के कार्य में इनकी रूची जागृत होने लगी। इन्हें यह भी समझ में आया कि बड़े से बड़ा काम गांववासियों के अपने ज्ञान से पूरी सफलता के साथ किया जा सकता है। परम्पराओं से केवल सीखना ही नहीं बल्कि जब सब तरीके असफल हो जाये तो भी अपने कष्टों का निवारण परम्पराओं से ही होता है इस हेतु सरिस्का के 150 गांवों के बीच 11 स्थानों पर एक साथ अखण्ड़ रामायण पाठ का कार्यक्रम आयोजित हुआ। लोग जंगलात कर्मचारियों के रवैये से बड़ें परेशान थे। लागों पर झूठे केस लगाये गये थे तथा जंगल की बरबादी हो रही थी। खनन तथा पेड़ कटाने की वृत्ति बढ़ रही थी। लोग भयभीत थे। लोगों को निर्भय एवम् आत्मविश्वासी बनाने तथा अनुशासित होने के लिए सरिस्का के 150 गांवों में एक साथ ग्यारह स्थानों पर अखण्ड़ रामायण पाठ आयोजित हुआ।

रामायण पाठ करने के पीछे मूल भावना यह थी कि जोहड़ बनाने व जंगल-संरक्षण के काम करने वाले ग्रामवासी बिना झिझक जंगलात विभाग के लोगों के साथ जुड़ें, ऐसा हुआ भी। रामायण पाठ के बाद जंगलात विभाग के वन रक्षकों तथा ग्रामवासियों के साथ मिलकर काम करने के अवसर पैदा हो गये है, जिससे गांव तथा विभाग के बीच की दूरी कम हो गई है और अब वे दोनों मिलकर जंगल को बचाने के काम में लगे हैं। क्योंकि यह काम किसी कानून या विचार से सम्पादित नहीं हो सकता, सभी के साथ काम करने में कुछ व्यवहारिक कठिनाई अवश्य है। जंगलात कर्मचारियों को कानून प्रदत्त अधिकार है, जिसमें कर्मचारी तो कुछ भी कर सकता है। दूसरी तरफ गांव वालों को जंगल तथा जंगली जीवों के रहन-सहन, गुण-धर्म की अधिक जानकारी रखने के बावजूद भी उसकी अभिव्यक्ति नहीं कर पाने की ऊर्जा का अभाव होने के कारण भय, आतंक, मजबूरी, गरीबी तथा अनिश्चितता है। जिससे ग्रामवासियों में दासता की प्रकृति बन गई है, इससे मुक्ति के प्रयास चल रहे हैं। ग्रामवासी एवम् जंगलात कर्मचारी मिलकर अपनी सामलात देह, जोहड़ व जंगलों की पुर्नरचना में लगे हैं। इनमें निम्न बदलाव हुए तथा रामायण पाठों से निम्न प्रयासों को बल मिला है:

1. ईमानदार, मेहनती जंगल के लिए समर्पित भाव से प्रतिबद्ध जंगलात कर्मचारियों को ग्रामसभाओं द्वारा सम्मानित करना।
2. जंगलात विभाग एवं ग्रामसभाओं को मिलाकर संयुक्त रूप से जंगल अपराध रोकने के प्रयास।

3. ग्रामवासियों एवम् जंगलात कर्मचारियों को साथ-साथ बैठकर आपसी संवाद बढ़ाना।
4. वनवासियों की जंगल सम्बन्धित समझ का कर्मचारियों को भान कराना। जिससे उन्हें मिले अधिकारों पर उनका स्वयं का प्रश्न चिन्ह लगे। जंगलात कर्मचारी सोचने लग जाये कि ग्रामवासियों को अब जंगलात विभाग के सहयोग की आवश्यकता नहीं है। प्रबन्ध नेतृत्व भी वनवासियों के हाथ में आ जावे ऐसी तैयारी करने का प्रयास है। जिससे ग्रामवासी जो जंगल में रहते हैं वे जंगल लगाने एवम् जोहड़ बनाने का कार्य, बिना सरकारी रोक-टोक के सम्पादित कर सके।
5. सरिस्का में चल रही 500 अवैध खानों का विभाग कर्मचारियों एवं वनवासियों द्वारा मिलकर विरोध करने का प्रयास जिससे गांव की सामलातदेह, गोचर, जंगल, जोहड़ बचाये जा सके।
6. जंगल को आग, चोरी, माफिया के हमले आदि से बचाने हेतु मिलकर मुकाबला करने की तैयारी करना।
7. जंगलात कर्मचारी जिस गांव में रहता है, वहाँ की ग्रामसभा द्वारा बनाये गये दस्तूरों का वह भी पालन करें तथा ग्राम के अनुशासन को बनाये रखने में सहयोग करें। इसके लिए हमारा संवाद दो स्तरों पर विभाग के साथ चालू हुआ है।
8. लोगों में आत्मविश्वास भी पैदा हुआ। पहले लोग अपने गांव में पुराने जोहड़ों की मरम्मत करने हेतु भी विभाग से डरते थे, लेकिन इस कार्यक्रम के बाद आपसी विश्वास बढ़ गया तथा लोगों ने जोहड़ बनाने का काम तेजी से किया है।

"एक सौम्य सत्याग्रह"

इस रामायण पाठ को किसी ने अनोखा अनुष्ठान कहा तो श्री सिद्धराज जी ढड्ढा ने इसे "एक सौम्य सत्याग्रह" कहा और क्षेत्रीय परिस्थिति की व्याख्या करते हुए लिखा कि - "सरिस्का के लोग गत 30 वर्षों से विभिन्न प्रकार के अन्याय व अत्याचार भोग रहे हैं। "सुरक्षित वन" के नाम पर, या "वन्य-जीव अभयारण्य" के नाम पर, और अब "राष्ट्रीय उद्यान" के नाम पर, पीढ़ियों से इस क्षेत्र में बसे और खेती कर रहे परिवारों पर तरह-तरह की पाबंदियां लगाई जा रही हैं। अभी यह लोग जंगल विभाग के कर्मचारियों की कृपा पर इस क्षेत्र में रह रहे हैं। क्षेत्र के आवागमन पर तरह-तरह की रोक है। सरकार की नजरों में ये गांव ही नहीं है न इनके निवासियों का अस्तित्व है, इसलिए इस क्षेत्र में "विकास" की योजनायें भी लागू नहीं होती।

वन और गांव की राजस्व भूमि का रिकार्ड ठीक न होने के कारण आपसी विवाद बढ़ रहे हैं।

पहले जंगल विभाग के लोग यहां के निवासियों को अपना औजार बनाकर पेड़ कटवाते थे और उसका लाभ खुद उठाते थे। अब जब ग्रामवासियों ने संगठित होकर पेड़ों और जानवरों के संरक्षण के लिए काम करना शुरू किया है तो उन्हें झूठे मुकदमों में फंसाया जा रहा है। अब तक इन्होंने राज्य सरकार, भारत सरकार तथा स्वयं प्रधानमंत्री तक को मिलकर-लिखकर गुहार की है लेकिन कहीं से कोई राहत नहीं मिली। इसलिए अब सरिस्का क्षेत्र के निवासियों ने उस 'अंतिम शक्ति' को जिसने जंगल, जीवन, मनुष्य - सब कुछ बनाया है, अपनी अरदास पहुंचाई है।"

15 स्थानों पर चल रहे अखण्ड रामायण पाठ के समापन समारोह में सरिस्का निवासी लगभग 4,500 लोगों ने रामायण के समक्ष प्रार्थना की कि 'भगवान हमें जंगल, जंगली जीव तथा स्वयं हम पर हो रहे अन्याय का प्रतिकार करने की शक्ति दो।' इसी के साथ-साथ यह संकल्प भी उन्होंने लिया कि आगे से सभी ग्रामवासी मिलकर सबके हित का काम करेंगे।

1145 वर्ग कि.मी. में फैले 'सरिस्का वन्य-जीव अभयारण्य' के अन्दर पीढ़ियों से बसे 52 गांव पिछले 42 वर्षीय लोकतंत्र में बने कानूनों के घेरे में फंसते ही जा रहे हैं। कानून को लागू करने वाले तथा कानून, दोनों ही पेड़ काटने वालों तथा वन्य-जीवों को मारने वालों की रक्षा कर रहे हैं एवं जो इनको बचाता है, उसको अदालतों के चक्कर कटवाते हैं। इन बिल्कुल झूठे मुकदमों से लोग बहुत भयभीत हैं।

लोगों का कहना है, कि पहले जब जंगलात के लोग हमसे मिलकर खुद पेड़ कटवाते थे तब काटने के बदले में कुछ मिलता भी था, पेड़ों के पत्ते हमारे जानवर खा लेते थे, छोटी लकड़ी, खाना पकाने तथा झौंपड़ी बनाने के काम आती थी, मोटी लकड़ी को जगंलात के लोग ट्रक भरकर ले जाते थे। आज भी भर्तृहरि से क्रास्का के रास्ते में हजारों पेड़ इसी प्रकार कट रहे है। उन दिनों पशु चराई का भी रुपया-पैसा नहीं देना पड़ता था, घी के पीपे भरकर जरूर गार्डों को दे देते थे, वे ऊपर तक पहुंचाते रहते थे। कभी-कभी 50 पशुओं में से 5 पशुओं की नाम-मात्र की चराई देनी पड़ती थी। लेकिन जब हमने ग्रामसभा में अपना दस्तूर बनाया कि हम किसी के बहकावे में आकर पेड़ नहीं काटेंगे, और न ही पशुओं की संख्या कम बताकर सरकार की चराई-फीस बचायेंगे, तब से हम पर अदालती कार्यवाही होनी आरम्भ हुई है। इसके अलावा, हमें क्षेत्र से बाहर निकालने की धमकियां देते रहते हैं। 'आज निकाल रहे हैं। कल निकाल देंगे।' यह हमेशा सुनते रहते हैं।

यह आतंक तब से और अधिक बढ़ गया है जब से बाघ मारने वाले माफिया का पर्दाफाश कराने में गांव वालों ने अपनी सजग भूमिका निभाई है। लेकिन गांव वाले इस बात से दुखी: है कि अब तक 16 बाघ मारने तथा मरवाने वालों का कुछ नहीं बिगड़ा। सरिस्का की वन-विभाग की भूमि पर खानों को बन्द कराने के लिए गांव वाले मुख्य वन-संरक्षक से लेकर तत्कालीन प्रधानमंत्री तक से मिल चुके हैं। बीच की कड़ियों को तो अनेक बार पत्र लिखकर-मिलकर जानकारी दी ही है। नई सरकार की पर्यावरण विभाग की राज्य मंत्री मेनका जी के साथ इस सम्बन्ध में बातचीत करने पर जवाब मिला कि 'राज्य सरकार से बात करूंगी।' लेकिन अभी भारत सरकार के बाघ परियोजना निदेशक ने लिखा है कि इस संदर्भ में राज्य सरकार से हम ही पत्राचार करें। राज्य सरकार तो पहले ही इस मामले को दबाने में लगी है, क्योंकि राज्य सरकार के आला अफसर एवं मन्त्रियों के स्वार्थों पर सीधे चोट हो रही थी। प्रदेश की नई सत्ताधारी पार्टी में ऐसे कई व्यक्ति हैं जो सरिस्का के सम्बन्ध में अब तक विधानसभा में सवाल पूछते रहे हैं। क्या अब वे पुराने सवालों को अपने आप से पूछेंगे?

सरिस्का को एक अच्छा स्वरूप देने का प्रयास किया जाये जिससे जंगल और जानवरों का सहज ही संवर्द्धन होता रहे। बड़े-बड़े होटल और सैलानियों की उच्छृंखलता समाप्त हो। जंगल व राजस्व भूमि का रिकार्ड ठीक से रखा जाये। सरिस्का में रहने वाले लोगों के रिश्तेदारों को गांव में आने-जाने, मिलने आदि पर लगी पाबन्दी हटाई जाये। गांव वाले भी स्वयं को और रिश्तेदारों को पेड़ न काटने आदि गांव के दस्तूर पालन करने के लिए बाध्य करें। पेड़ कोई काटे नहीं ओर न कटने दे! इन बातों के लिए गांव वाले लम्बे समय से अपना अभिक्रम चला रहे हैं; सरकार से सम्बन्धित मामलों के लिए सरकार को भी लिखा है तथा बात की है।

लेकिन इन सब बातों से भी कुल मिलाकर काम आगे नहीं बढ़ सका। तब इस काम को आगे बढ़ाने हेतु भगवान से शक्ति प्राप्त करने के लिए गांव वालों ने मिलकर सरिस्का क्षेत्र के 11 स्थानों पर एक साथ रामायण पाठ का निर्णय लिया। इसे 'जंगल संरक्षण यज्ञ' का नाम दिया गया। लोगों के उत्साह के कारण यह यज्ञ 11 के बजाय 15 स्थानों पर सम्पन्न हुआ। सभी जगह रामायण पाठ के समापन के समय गांव वालों ने एक संकल्प दोहराया कि हम मिलकर सरिस्का को सुन्दर बनाने तथा सबका जीवन सुखी बनाने हेतु काम करते रहेंगे।

रामायण पाठ के बाद जो ग्राम सभायें हुई हैं, उनमें आगे के काम की नीति भी तय की गई है। जंगल विरोधी कानून में माकूल परिवर्तन कराने के लिए भी कई सुझाव गांव वालों की तरफ से आये हैं जिन्हें नई सरकार को तथा केन्द्रीय सरकार

को भेजा जायेगा। गांव वालों को इस 'रामायण-यज्ञ' से बड़ी आशा जगी है। इनका मानना है कि भगवान अब हर स्तर पर उनके काम में मददगार होंगे।

गांव वालों से जब एक पत्रकार ने पूछा कि आपका उद्देश्य तो जंगल-संरक्षण का है, फिर आपने रामायण-पाठ क्यों किया? तो गांव वालों ने जवाब दिया कि प्राचीन काल में राम ही हमारा नेता था। उसने ही हम जैसे अनजान, भोले-भोले बन्दरों को जोड़कर रावण जैसी बुराई के विरूद्ध संघर्ष किया और उसे नष्ट कर दिया था। यह रामायण-पाठ हमें अन्याय के खिलाफ भी लड़ने की ताकत देगा! रक्षा बन्धन के दिन पेड़ों के राखी बांध कर पेड़ बचाने का संकल्प का कार्यक्रम भी इस वर्ष बहुत व्यापक रहा। इस हेतु अलवर जिले के 500 गांवों में पद यात्रा करके पेड़ लगाने व पेड़ बचाने का अभियान चलाकर रक्षा बन्धन का त्यौहार पेड़ों की रक्षा का "संकल्प दिवस" के रूप में मनाने का अभिक्रम शुरू हुआ।

इस वर्ष जयपुर व सवाईमाधोपुर जिले में भी इसी प्रकार के काम जोहड़ बनाने में संघ सहयोगी बना है। सवाईमाधोपुर में सात और जयपुर जिले में तीन जोहड़ बने हैं। यहाँ भी लोगों के परम्परागत ज्ञान से ही जोहड़ निर्माण शुरू हुआ है। संघ के अब तक के कार्यक्रम निम्नवत है:

कार्यक्रम एवम् उपलब्धियाँ

जनवरी 1986 से जनवरी 1990 तक

क्र.सं.	विवरण	पंचायत समिति क्षेत्र			
		थाना.	राज.	उमरैण	योग
1.	तालाब/बांध	78	32	6	116
2.	कुंआ मरम्मत	2	-	1	3
3.	पेड़ संरक्षण (गांव)	42	53	5	102
4.	मेड़बन्दी	5	15	-	20
5.	सेन्द्रीय खाद	13	2	-	15
6.	सौर ऊर्जा	8	2	-	10
7.	शिशुपालना गृह	5	7	2	14
8.	बाल शालाएं	2	6	3	11
9.	आरोग्य केन्द्र	6	4	-	10
10.	महिला बैंक	3	2	-	5
11.	शराब बन्दी (गांव)	11	10	3	24
12.	ग्रामसभा	42	53	7	102
13.	ग्रामकोष	22	35	3	60
14.	शिविर	38	35	20	93
15.	सम्मेलन	3	2	4	9
16.	पदयात्रा	8	8	8	24

सामलात देह के प्राचीन प्रबन्ध की खोज – 1991-92

अब गांव के पढ़े-लिखे युवा भी जोहड़ निर्माण, गोचर जंगल बचाने जैसे कार्यों में रूचि लेने लगे। इन सबको जो अपने परिवेश से सीखने को मिल रहा था वह कम नहीं है, लेकिन गांव का पूरा ज्ञान व समझ बिखरी पड़ी होने के कारण अधिक काम में नहीं आ रही है। इसलिए यह निश्चय हुआ कि ग्राम के युवाओं को ही इसे तलाशने, जोड़ने व तरासने में लगाया जाये। इस हेतु संस्था के साथ रहकर सीखने का युवाओं को एक खुला आमंत्रण दिया गया।

सामलात देह बचाने हेतु एक आन्दोलन खड़ा करने के लिए दूसरा जंगल संरक्षण यज्ञ किया गया।

जंगल संरक्षण यज्ञ

मकर संक्रांति के दिन बाबा भृतहरि के स्थान पर सरिस्का (अलवर) में जंगल संरक्षण यज्ञ के सन्दर्भ व्यक्तियों का प्रशिक्षण आरम्भ हुआ, इसकी शुरूआत श्री फतेहसिंह राठौर, क्षेत्र निदेशक, सरिस्का ने की। आपने कहा कि मानव का जीवन दूसरे जीवों के साथ परस्पर जुड़ा हुआ है। एक दूसरे के बिना इनका जीवन सम्भव नहीं है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृति में जंगल व जंगली जीवों के प्रति मानव प्रेम यह सिद्ध करता है कि हमारी संस्कृति प्रकृतिप्रेमी रही है।

इस समारोह के बाद 15,16 व 17 जनवरी तक प्रशिक्षणार्थियों ने स्वयं मिलकर भारतीय परम्पराओं, पर्यावरण व पारिस्थितिकी, पशुपालन व खेती, वनौषधि तथा जंगल व जंगली जीवों की समझ बनाने के प्रयास किये। इस प्रशिक्षण में सरिस्का क्षेत्र के अगुआ लोगों ने भाग लिया। कुल मिलाकर 52 लोग उपस्थित थे। इनके पांच समूह बनाये गये जिनका नेतृत्व अलग-अलग लोगों ने किया। उन्होंने अपने-अपने ग्रुप की चर्चाओं को संकलित भी किया।

18 जनवरी को श्री एन. कृष्णा स्वामी, मन्त्री गांधी शांति प्रतिष्ठान ने जंगल संरक्षण यज्ञ का ध्वजारोहण किया तथा लोगों को दक्षिण भारत की जंगल संरक्षण की अच्छी परम्पराओं से अवगत कराया। इस अवसर पर थानागाजी पंचायत समिति के प्रमुख, क्षेत्र के पंच-सरपंच, क्षेत्र की जनता, पर्यावरण पंडित तथा कुछ विद्यार्थी मौजूद थे।

19 जनवरी को यज्ञ का उदधाटन वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी ने किया। उन्होंने लोगों से उनके साथ होने वाले अन्याय के लिए संगठित होकर प्रतिकार कराने का आह्वान किया। गुलामी के समय भी किसानों ने किस

प्रकार संगठित होकर लड़ाई लड़ी थी, इसके कई उदाहरण आपने दिये। उन्होंने कहा कि उस समय हमारी पहाड़ियां हरी भरी थी, लेकिन वे आज नंगी हो गई हैं।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए बाबा बिहारी दास ने कहा कि जंगल का संरक्षण करने हेतु हमें अपनी प्राचीन संस्कृति को समझना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक वृक्ष व जीव में भगवान है। जब हम किसी जीव को कष्ट पहुंचाते है तो उसकी हाय हमारे सर्वनाश का रास्ता खोलती है। अतः हमें जंगल तथा जंगली जीवों की रक्षा करनी चाहिये।

दूसरे सत्र में श्री एन. कृष्णा स्वामी ने कहा कि इस यज्ञ की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि हम परावलम्बी बना देने वाली बातों का त्याग करें। जब हमारे गांव स्वावलम्बी थे, तब तक गांवों में लकड़ी काट कर शहर में बेचने की आवश्यकता नहीं थी अब हम परावलम्बी हो गये हैं, तो हमारे प्राकृतिक संसाधन भी नष्ट होते जा रहे हैं। इस सत्र की अध्यक्षता श्री सिद्धराज ढड्ढ़ा ने की। आपने कहा कि यह "यज्ञ" जंगल संरक्षण की दिशा में एक पहल सिद्ध हों ऐसी मेरी शुभकामना है। यह सरकार व लोगों के लिए मिलकर प्राकृतिक प्रेम करने का कोई सुन्दर नमूना बनकर दिखायें।

20 जनवरी को श्री राजेन्द्र सिंह ने पर्यावरण व पारिस्थितिकी पर बातचीत की, प्राकृतिक संसाधनों को पुनः बनाया जाये, इसी काम में हमारे बेकार पड़े श्रम संसाधन का उपयोग किया जाये तभी हमारी खेती व पशुपालन टिकाऊ व सुथरा हो सकेगा।

डा. शांति स्वरूप डाटा व गंगा डाटा ने कहा कि हमारे देश की वैदिक संस्कृति तो एक तरह से अरण्य संस्कृति ही थी। जब तक वैदिक संस्कृति रही तब तक हमें कोई भी गुलाम नहीं बना सका परन्तु जब से ब्राह्मण संस्कृति पनपने लगी तभी से लोगों की स्वतंत्रता समाप्त होने लगी।

राजस्थान सरकार के नीति निर्धारण सचिव मीठा लाल मेहता ने कहा कि सत्ता और धर्म आदमी को बाँटता है पर संस्कृति जोड़ने का काम करती है।

डा. एम.पी.एस. चन्द्रावत ने पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी विषय पर अपने विचार रखे। आपने वासना व भोग को पर्यावरण संकट का मूल कारण बताया। डा. ओ.पी. कुलहरी ने अन्धविश्वास व रूढ़िवादिता पर विचार रखे। इस दिन के अन्तिम सत्र में टिकाऊ खेती पर श्री अमन सिंह ने अपने विचार रखे व कहा कि हम जितना भूमि से लेते है उतना ही हमें उसका देना चाहिये तभी हम खेती को टिकाऊ रख सकते हैं। इसके साथ ही आधुनिक खेती में प्रयुक्त होने वाले रसायनों व साधनों से होने वाले खतरों से भी आपने अवगत कराया।

21 जनवरी को श्री फतेहसिंह राठौड़ ने बताया कि केवल जंगल ही नहीं बल्कि कोई भी चीज सरकार के भरोसे नहीं छोड़ी जा सकती। हमें अपने तरीके से जंगल व जंगली जीवों का संरक्षण करना होगा।

डा. चन्दारमानी ने कहा कि हमें सबसे पहले जंगली जीवों के स्वभाव को समझना होगा। उन्होंने इस विषय में अनेक प्रकार की जानकारियां दी। श्री घनश्याम वैद्य ने वनौषधियों के विषय में चर्चा कर अनेक अनोखी स्वास्थ्यवर्धक जड़ी बूटियों के बारे में लोगों को जानकारी दी। समापन समारोह में आचार्य श्री मोहनलाल ने पर्यावरण सन्तुलन हेतु धार्मिक अनुष्ठानों का महत्व बताया। उन्होंने कहा कि सभी पेड़ों में किसी न किसी देवता का वास हमारे ग्रन्थों में बताया गया है। एक वृक्ष हजारों जीवों को आश्रय व जीवन दान देता है। अतः वह एक प्रकार से भगवान ही है।

राजस्थान सरकार के मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक श्री बी.डी. शर्मा ने कहा कि वृक्ष व जीव संरक्षण हमारी परम्पराओं में बसा है, बस उसे देखने और समझने भर की आवश्यकता है। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री बाबा बिहारी दास ने कहा कि यह यज्ञ हमारी परम्पराओं को पुनः प्रतिष्ठित करने का अच्छा प्रयास है। केवल यज्ञ ही जंगल बचा सकते हैं, क्योंकि यज्ञ का अर्थ है त्याग। भोग की संस्कृति का त्याग होने पर ही जंगल बच पायेंगे।

जंगल संरक्षण यज्ञ के अन्त में यज्ञ दक्षिणा समारोह हुआ। इसमें जंगल संरक्षण के लिए उल्लेखनीय कार्य करने वाली छः ग्राम सभाओं, चार वनकर्मियों एवं एम.पी.एस. चन्द्रावत को सम्मानित किया गया।

इस यज्ञ की सबसे बड़ी उपलब्धि पूर्णाहुति पर एक महिला के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से पारित करके सरिस्का में चल रहे खनन को बन्द कराना था। इसमें तय हुआ कि खनन बन्द कराने हेतु उच्चतम न्यायालय में गुहार की जाये। इसलिए लोगों की अगुवाई में सरिस्का वन क्षेत्र में चल रही खानों को रोकने का मुकदमा उच्चतम न्यायालय में दायर किया गया। उच्चतम न्यायालय ने खनन बन्द करने के आदेश भी दे दिये। लेकिन आदेश की पालना नहीं हो सकी।

गांवसभाओं के संगठनों ने अपने गांव के जोहड़, गोचर व वन भूमि से कब्जे हटाने का अभियान चलाया। इस वर्ष कुछ बड़े बांध, जोहड़ बनाने का काम भी जोरों से हुआ। इन कार्यों को करने वालों को सम्मानित करने हेतु पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार शुरू किया गया।

प्रर्यावरण प्रेमी पुरस्कार की शुरूआत

इस पुरस्कार का शुभारम्भ सरिस्का के जंगल में रहने वाले लोगों द्वारा स्वनुशासन से जंगल संरक्षण की दिशा में हुई पहल को देखकर किया गया था। सरिस्का के

अन्दर व बाहर आसपास के गांवों में रहने वाले लोगों के जंगल के प्रति रूख में आये बदलाव को सम्मान करने की दृष्टि से जिन मानवीय मूल्यों के कारण यह जंगल व जंगली जीव को बचाते हैं उनका सम्मान होना चाहिये। पर्यावरण के अनुकूल मानवीय मूल्यों का वाहक बनने वाले व्यक्तियों की तलाश करने हेतु एक पैनल गठित किया गया। जिसमें सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण के अधिकारी, जन प्रतिनिधि एवं तरुण भारत संघ के कार्यकर्ता भागीदार है। ये सब मिलकर तय करेंगे कि सम्मान का उपयुक्त पात्र कौन है? यह सम्मान हर वर्ष गांधी जयन्ती (वन्य जीव संरक्षण सप्ताह) के अवसर पर दिया जायेगा।

यह पुरस्कार उन "मानवीय मूल्यों" का सम्मान है, जिन मूल्यों को व्यक्ति अपने आचरण व्यवहार में लाकर हरे पेड़ों तथा जीवों की हत्या को रोकता हो, इस प्रकार की हत्यायें अपराध करने वाले व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन करके उन्हें इस अपराध से मुक्त करते हुए पर्यावरण सन्तुलन बनाये रखने जैसे, मिट्टी व जल संरक्षण के काम में लगाया हो। किसी पहाड़ी को हरी-भरी बनाई हो, जंगल की आग को रोकने का काम किया हो। लोगों में जीवन के अनुकूल वातावरण तैयार करने का पर्यावरणीय चेतना का प्रचार-प्रसार किया हो।

लोगों को अनुशासित व संगठित करके पर्यावरण सन्तुलन बनाने की दिशा में सौर ऊर्जा, गोबर गैस, वृक्षारोपण जैसे व्यापक काम किये हो या सरकारी नौकरियों में रहकर अपने कर्तव्य पालन् से जंगली जीवों व जंगल बचाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया हो।

पर्यावरण के अनुकूल उक्त वर्णित आचरण करने वाला व्यक्ति इस पुरस्कार को प्राप्त करने का पात्र है। पुरस्कार उन्हीं व्यक्तियों को दिया जायेगा। जिसे 5 सदस्यीय पैनल तय करेगा।

1. इस पुरस्कार से विभूषित व्यक्ति को भविष्य में पर्यावरण संतुलन की दिशा में काम करने हेतु आर्थिक सहयोग करने के प्रयास किये जायेंगे।
2. युवा को जंगल संरक्षण का अवसर देने हेतु जंगलात विभाग में काम का अवसर मिले ऐसे प्रयास होंगे।
3. यदि कोई व्यक्ति जंगलात विभाग में कार्यरत रहकर इस पुरस्कार को प्राप्त करता है तो उसे और अधिक काम करने के अवसर प्रदान हो सके ऐसी व्यवस्था की जायेगी। यह व्यवस्थायें पुरस्कार संचालित समिति करेगी।

पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार संचालन समिति —

1. अध्यक्ष मीठालाल मेहता, मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार, जयपुर।
2. सदस्य अनुपम भाई, नई दिल्ली।
3. सदस्य सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा, समाज चिन्तक, चौड़ा रास्ता, जयपुर।
4. सदस्य सुनयन शर्मा, क्षेत्र निदेशक, बाघ परियोजना, सरिस्का।
5. सचिव, राजेन्द्र सिंह, पर्यावरण कर्मी, तरुण भारत संघ, भीकमपुरा, अलवर।

सम्मान समारोह

पर्यावरण प्रेमी पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को सादा समारोह में सम्पन्न होगा। यह दिन भारत सरकार द्वारा घोषित वन्य जीव संरक्षण सप्ताह का आरम्भिक दिन है, और इस पुरस्कार का शुभारम्भ सरिस्का वन्य जीव अभ्यारण से हुआ है। समारोह का स्थान बदलता रहेगा।

इस वर्ष यह सम्मान जंगल की आग बुझाने वाली ग्रामसभा हरिपुरा, राजोरगढ़, नाड़ू, खोह तथा रईका को दिया गया। इन्होंने गर्मी, लू आदि की चिन्ता किये बिना आग बुझाई। साथ-साथ रमाकान्त शर्मा, क्षेत्रीय वन अधिकारी, सरिस्का/अमरसिंह वनपाल, सुगनसिंह, जगन्नाथ शर्मा, वनरक्षक तथा पुरूषोत्तम केटल गार्ड को भी यह पुरस्कार दिया। इन्होंने भी ग्रामवासियों के साथ आग बुझाने में सहयोग किया। ये पुरस्कार श्री मीठालाल मेहता ने वितरित किये।

इस वर्ष के अन्य उल्लेखनीय कार्यों में किशोरी गांव में सिया बोहरा ने किशोरी नदी को रोकने की ठान ली। इसको रोकने में इसके बेटे भगवान ने भी बहुत मेहनत व लगन से काम किया। इन दोनों के काम से गांव तथा संघ के कार्यकर्ताओं में बड़ा उत्साह पैदा हुआ। इस नदी के रुकने से 30-35 कुंओं में लाभ होगा, जो कुंए सूख गये थे, इससे आस-पास के सभी कुंओं में पुनः जल होने लगा है।

काब्लीगढ़ में मातादीन मीणा ने भी रावण वाली नदी जो सूरतगढ़ से आती है, उसको एक स्तर तक रोका इसने आसपास के कुंए पुनर्जीवित किये हैं। इस जोहड़ में चुर्री-पिसाई-पत्थर की ढुआई का काम स्वयं मातादीन ने श्रमदान में किया, इस प्रकार लगभग आधा श्रमदान केवल एक ही परिवार ने किया। इसका प्रत्यक्ष लाभ इसी ही परिवार को अधिक है।

आसपास के कुंओं में पानी होने के साथ-साथ कटाव रोकने, तथा भूमि पर जमाव रुकने में भी बहुत से किसानों को लाभ होगा। यहाँ पानी रुकने से बहुत सी जमीन खेती योग्य हो जायेगी, जिसमें भारी मात्रा में अन्न का उत्पादन होगा।

गढ़बस्सी में भी एक गरीब परिवार ने अपनी खेती की भूमि को बचाने के लिए दो पक्के चैकड़ेम बनाने का काम चालू किया है। यह भी अपने पूरे परिवार के साथ काम में लगा रहा है। गोपालसिंह नामक इस युवक के मन में पिछले तीन वर्ष से ही इसे बनाने की बात चल रही थी, लेकिन गरीबी के कारण यह कार्य नहीं कर सका था, इस वर्ष इसने पेट-पट्टी बांधकर काम चालू किया है। संघ ने भी इस में आधा सहयोग किया है।

इसमें पुरा श्रमदान एक ही परिवार कर रहा है, जबकि इसका लाभ कुंओं और खेतो को होगा। एक ब्राह्मण परिवार जो कि दिल्ली रहता है इसके खेतों में बहुत लाभ होगा, लेकिन उसने भी सहयोग करने से मना कर दिया है। शांति देवी के खेत कई वर्ष से खाली पड़े हैं अब उसे भी लाभ होगा तथा खेती होने लगेगी।

क्यारा व सूरतगढ़ गांव के लोगों को जब यह पता चला कि उनके गांव की सामलात देह में खान आवंटित कर दी गई है तो पूरे गांव ने विरोध किया तथा क्यारा में चल रही खान बन्द करा दी।

गांव में कुछ प्रभावी लोगों ने अथवा बाहर से आकर बसे कुछ लोगों ने हजारी घाटी की सामलात देह, जोहड़ व गोचर पर कब्जा कर लिया था, तो वहाँ के लोग मिलकर संघ में आये, संघ ने इनके साथ बैठकर सब स्थिति को समझा तथा कब्जा करने वाले से भी बात की, लेकिन उसने पुलिस आदि का भय दिखाकर कब्जा नहीं हटाने की धमकी दी।

पैडायाला, जगन्नाथपुरा, सिलावटों का गुवाड़ा, कल्सीकला, आदि गांव के लोगों ने मिलकर एक साथ जोहड़ बनाने का काम आरम्भ कर दिया, कब्जा करने वाले पुलिस के पास गये तो पुलिस ने भी इतने लोगों को काम करते देखकर असमर्थता प्रकट कर दी ! लोगों ने श्रमदान से तथा ट्रेक्टर लगाकर 10 दिन में जोहड़ बनाकर तैयार कर दिया, कब्जा करने वाले देखते रहे।

पैडायाला के पास गोचर पर बन्जारों ने कब्जा कर लिया था वे भी इस जोहड़ बनाने की प्रक्रिया को देखकर लोगों के डर से अपने आप ही हट गए।

इस प्रकार जोहड़ बनाने का काम लोगों में अच्छा काम करने की ताकत देता है गलती करने वालों को भयभीत कर देता है।

जोहड़ों, गोचरों, गाँवाई जंगलों, कुंओं, गोरों, मन्दिरों, पेड़ों को बचाते देखकर लगता है, कि भविष्य में सारी सामलात देह बच जायेगी।

आज सरकार चलाने वाले नेता अधिकारी बड़े ही सहज भाव से कह देते हैं, कि गांव वाले अपनी गोचर, जोहड़ जंगल नहीं बचा सके इसलिए ही हमने विभाग बनाकर गांवों के प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करने का काम किया है। पर ये बचे

तो नहीं। क्यों हुआ, ऐसा? प्रश्न पूछने पर ये फिर जवाब देते हैं कि जन दबाव के कारण गांव के गोचर, तालाब, जंगल सब कुछ समाप्त होते जा रहे हैं। लोग फिर उलटकर पूछते हैं, फिर आपकी क्या भूमिका रही है? तो अधिकारी और नेता चुप रह जाते है या उनका जवाब होता है कि अब इन की मालिक तो सरकार है। हम क्या करें? इनकी बरबादी के लिए आज कोई जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता है। वैसे ही सरकार व लोग एक ही है, फिर भी अलग भूमिका के कारण स्पष्टतः अलग-अलग है। ये दोनों ही अपनी जिम्मेदारी से बच रहे है।

ऐसी स्थिति बन गई है, इसका विश्लेषण जब करने बैठते है तो हमें कम से कम ग्यारह सौ वर्ष पूर्व जाकर देखना होगा। उस काल तक "सबै भूमि गोपाल की" मान्यता के साथ, जोहड़ों पर सब अपना हक मानते थे, इनकी मरम्मत करना लोग अपना धर्म समझते थे, इसीलिए जोहड़ों की मरम्मत एवम् निर्माण का काम चलता रहा। इसी प्रकार जंगलों की उपज पर किसी प्रकार का कोई कर लागू नहीं था। वन उपज को लोग अपना मानकर उपयोग करते थे। इसीलिए लोग जंगलों को नष्ट नहीं करते थे। बल्कि जंगलों को ये अपने जीवन का आधार मानकर उनके संरक्षण का काम करते रहते थे।

हमारे क्षेत्र के कुछ हिस्सों में गांव की सार्वजनिक संपदा को सामलात देह कहा जाता था। वह गांव की मिली-जुली देह थी और फिर अपनी देह की रखवाली भला कौन नहीं करेगा। सामलात देह के प्रबंध हेतु कई अलिखित दस्तूरों का विधान था। इस विधान के अनुसार गांव के गोचर, जंगल, जोहड़ का प्रबन्ध कार्य चलता रहता था। स्वनुशासनपूर्वक चलने वाली व्यवस्था में गलती करने वाले के लिए दण्ड एवम् प्रायश्चित की भी व्यवस्था थी, इसीलिए लोग सामलात देह की पूरी सुरक्षा करते थे। यह कोई भगवान, देवी-देवताओं का डर या अन्धविश्वास नहीं था, बल्कि गलती करने वालों के मन पर एक नैतिक दबाव बना रहे, ऐसी एक सुसंस्कृत व्यवस्था थी। यह व्यवस्था महाभारत के भीम को पेड़ उखाड़ने-तोड़ने नष्ट करने जैसे कुकृत्य से रोककर पेड़ों का महत्त्व समझाते रहने के लिए युधिष्ठर को उसके बड़े भाई के रूप में प्रतिष्ठित करने जैसा ही था।

लोग गांव की सामलात देह से पेड़ या अन्य कोई आवश्यक उपज लेने की तिथि निश्चित करते थे। इस तिथि को पूरा गांव एक साथ बैठकर विचार-विमर्श करके ही तय करता था। कांकड़बनी, रखतबनी, देव ओरण, बाल आदि में पशुओं की चराई कब करनी है आदि सब मुदों पर खुलकर चर्चा के बाद यह निर्णय होता था।

सामलातदेह का उपयोग करने वाले और उसके संदर्भ में निर्णय लेने वाले एक ही थे इसलिए सभी निर्णय सबके हित में होते थे। आज निर्णय लेने वाला अलग

है। यह निर्णयकर्ता सामलातदेह के उपयोग एवम् रख-रखाव से अनभिज्ञ है। जो इसका उपयोग करता है, वह इसके विषय में कोई निर्णय नहीं ले सकता। क्योंकि वर्तमान कानून व्यवस्था ने इस पर से लोगों के हक छीन लिए है। अब लोगों की अपनी व्यवस्था समाप्त करने का दोष केवल पाश्चात्य शिक्षा का प्रभाव ही नहीं बल्कि जीवन शैली में बड़े भोगवाद एवम् उद्योगीकरण की देन है। उद्योगीकरण के कारण पुराने गंवाई दस्तूर एवं भाव समाज से समाप्त होने लगे हैं। इसके स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ बढ़ने लगा है, जिस कारण लोगों ने सामलात देह की देखभाल एवम् सम्भाल करनी छोड़ दी है। इसका फल अब हम लोग ही सूखे, अकाल, बाढ़ के रूप में भुगत रहे है। ईंधन, लकड़ी चारे का अभाव लोगों को अब खलने लगा है। वर्तमान व्यवस्था पर अब पुनः प्रश्नचिन्ह लगने लगा है। लोग अब चिंतित है यदि अब कोई इन्हें इनकी पुरानी व्यवस्था बताकर हनुमान की तरह उनकी शक्ति का भान कर दे तो लोग पुनः अपनी सामलातदेह को सामालाती भाव से सम्भाल सकते है। लोग मिलजुल कर कुटम्ब बनाते है कुटुम्बों से बनता हैं गांव। गांव वह जिसमें रहने वाले सब स्त्री-पुरुष एक दूसरे को जानते तथा पहचानते है। यहाँ ये कुछ नया काम करते है, तो सभी मिलकर निर्णय लेते है। मिलकर उसका पालन भी करते है जो उसे नहीं मानता है, उसे प्रायश्चित कराने की व्यवस्था भी होती है। प्रायश्चित न करे तो उसका सामाजिक बहिष्कार, उसके साथ बोल-चाल तक बन्द कर देते है। जहाँ उक्त सारी बातों का पालन किया जाता रहा है, वहीं पर आज कुछ सामलात देह बचे है।

वनवासियों को अपने हको का अहसास - 1992-93

संघ के द्वारा चल रहे जल, जंगल जमीन बचाने के सामलाती प्रयासों का प्रभाव अब सरिस्का के लोगों में दिखने लगा। सभी जगह जहां-जहां जोहड़ बने थे उनके नीचे के कुंओं में जल स्तर बढ़ गया। लेकिन तिलवाड़ी में बने जोहड़ व बांध से उसके नीचे के कुंऐं का जल स्तर ऊपर नहीं आया। इस जोहड़ के आस-पास मार्बल की गहरी खानो में जल स्तर बढ़ रहा था। इन खानों से खेती-पशु पालन पर जो कुछ प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा था, उससे भी छोटेलाल मीणा जैसे कुछ ही लोग भयभीत हो रहे थे। इन्होनें अब आपस में खानों के कुप्रभावों पर कुछ चर्चा शुरू कर दी।

आपसी चर्चा का परिणाम यह हुआ कि तिलवाड़-तिलवाड़ी तथा पालपुर के लोगों ने खनन बन्द कराने की ठान ली। इन्होंने पालपुर की खान बन्द भी करा दी। लेकिन पड़ौसी रिश्तेदारों के दबाव तथा बीच-बचाव से खान दुबारा चालू हो गई। खान क्षेत्र के लोगों ने संघ को अगुवा बनाकर जो उच्चतम न्यायालय में मुकदमा कराया था, उससे भारत सरकार भी हलचल में आ गई। 7 मई 92 को वन एवम् पर्यावरण मंत्रालय ने एक अधिसूचना जारी करके कहा कि, "अरावली संवेदनशील पहाड़ी क्षेत्र है। इसमें खनन जैसी पर्यावरण विरोधी गतिविधि निषेध है।" सरिस्का बाघ परियोजना में चल रहा खनन तुरन्त बन्द होना चाहिए तथा अलवर व गुडगांव जिले में पर्यावरण विरोधी गतिविधियों पर पाबन्दी है।" वन क्षेत्रों में चल रहे क्रेशर, खनन सब कुछ बन्द होने लगे।

संघ ने खनन क्षेत्र में अपना जोहड़ बनाने का कार्य जारी रखा। जहाँ खान बन्द हुई वहाँ अब बहुत से खान मजदूर जोहड़ बनाने का कार्य करने लगे। लोग अपनी खेती सम्भालने लगे। आपसी चर्चाओं में सुनाई देने लगा कि बहुत दिनों के बाद शांति आई। कोई कहता "देख कड़कड़-बडकड़ खत्म हुई"। रूपनारायण शर्मा खान ठेकेदार ने कहा 'खान बन्द होने से तूफान मिट गया है। शांति आ गई है। अपनी खेती करके मजे से रहेंगे जोहड़ बनाकर धर्म का काम करेंगे।'

कुछ दिन खान बन्द रही फिर खान मालिकों ने कुछ सभा, सम्मेलन शुरू किये। राजस्थान के मुख्यमंत्री ने भी खान चलाये रखने की हरी झण्डी दिखाई। खाने फिर चलने लगी। संघ ने पुनः कोर्ट की अवमानना का एक मुकदमा दायर किया। राज्य सरकार उच्चतम न्यायालय में कहती रही "खान बन्द है।" यहाँ पर सरकार खान चलाने को प्रोत्साहन दे रही थी, दिल्ली में कह रही थी खनन बन्द है।

संघ ने इस वर्ष अपने काम का प्रभाव जानने के लिए अध्ययन का काम भी शुरू कराया। यह अध्ययन माण्डलवास गांव में प्रेमागेरा (विकास विकल्प, नई दिल्ली) ने किया। दूसरा वन एवम् पर्यावरण मंत्रालय के वाई.पी. सिंह ने किया। ये दोनों

रिर्पोट हमारे पास उपलब्ध है। तीसरा भारत सरकार के वन उप महानिरिक्षक श्री द्विवेदी जी एवम् राजस्थान के वन संरक्षक श्री मान साहब ने संयुक्त रूप से किया।

राजस्थान की विधानसभा में तरुण भारत संघ के काम को लेकर तीन बार चर्चा भी हुई। संस्था के कामकाज की जांच हेतु 9 विधायको की सर्वदलीय समिति बनाई गई। इस समिति ने वर्षो तक संस्था के कार्यों को देखा, समझा।

सामलातदेह बचाने के लिए उच्चतम न्यायालय में चलने वाले मुकदमें तथा सरकार के रुख से लोगों की समझ और गहरी हो गई। इन्होनें निश्चय किया कि, अब सरकार भी हमारे गोचर, जंगल, तथा भू-जल को लूटने वालों को सहारा दे रही है। संगठित होकर सामूहिक निर्णय ले अपने पहाड़, गोचर, पानी को बचाने का अभिक्रम शुरू होने लगा।

संघ कार्यकर्ताओं को भी धमकियाँ, अपमान, गाली-गलोच, मारपीट, जलाने फूंकने का ड़र दिखाकर आतंकित करने का दौर बराबर चल रहा था। लेकिन संघ कार्यकर्ता धीरज से, अपना काम करते जा रहे थे। कार्यकर्ता भी सभी बात गांव के सामने खोल कर रखते थे। जिससे कार्यकर्ता को ग्रामवासियों की संवेदना तथा नैतिक बल बराबर मिल रहा था। इसी बल के सहारे राजनेताओं, पूंजीपतियों, एवम् अधिकारियों के घोर विरोध को संघ कार्यकर्ता पचा रहे थे। वनवासी इसी से जागृत हो रहे थे। इसी से इन्होंने अपनी सामलात को बचाने का संकल्प ले लिया तथा इस हेतु गांव-गांव पदयात्रा करके सरिस्का बचाओ आन्दोलन को तेज कर दिया। ऐसी एक यात्रा का विवरण यहाँ देना उचित होगा।

30 जनवरी 92 से 12 फरवरी 1992 तक सरिस्का के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र के 48 गांवों में ग्रामीणों ने मिलकर पदयात्रा का आयोजन किया। यह पदयात्रा औपचारिकता व दिखावे से दूर, सहज रूप से, गांवसभाओं ने अपने तरीके से, एक से दूसरे गांव जाकर गांव में शांति सद्भाव बनाये रखने के आधार पर, आपसी प्रेम व समझ को मजबूत किया। अपनी परम्परागत सामलात देह का प्रबन्ध (संवर्द्धन व उपयोग) सहस्तित्व के साथ समान हक बनाये रखने पर भी गम्भीरता से चर्चाएं हुई। लेकिन उसे आपसी, लम्बे संवाद से सुलझा लिया गया।

तीन स्थानों पर पदयात्रा को रोकने के प्रयास भी हुऐ, लेकिन पदयात्रा को जहाँ रोकने का प्रयास हुआ, उसी गांव के उन्हीं के भाई पदयात्रा करने वाले थे, इसलिए वहाँ सैकड़ो लोग इक्ट्ठे हो गये तथा बाहर के लोगों को भगा दिया।

इस पदयात्रा ने बिखरी ग्राम की शक्ति को एक माला की तरह जोड़ने का काम किया। इससे ग्राम संगठन मजबूत हुये, बाहरी संकटो को हल करने का अभ्यास भी कुछ गांवों को हुआ। सैन्द्रिय खाद बनाने के कुछ नये प्रदर्शन तैयार हुये। ग्रामकोप

का विचार प्रबल हुआ। जहाँ पर धर्म-विद्वेष का जहर फैल रहा था, उसे भी कम करने का प्रयास हुआ।

यह 15 दिन की यात्रा सरिस्का बचाओं आन्दोलन का समर्थन जुटाने की यात्रा भी मानी जा सकती है, क्योंकि प्रत्येक सभा में सरिस्का बचाओ आन्दोलन की भी चर्चा हुई। इस पूरी यात्रा का नेतृत्व किसी एक व्यक्ति ने नहीं किया बल्कि प्रत्यके दिन, प्रत्येक गांव के नैतिक व सज्जन व्यक्ति को इस यात्रा का नेतृत्व व संचालन करने का अवसर मिला।

यह यात्रा जिन-जिन गांवों में गई उन गांवों को निर्भय बनाकर आत्मानुशाषित करने में भी सफलता प्राप्त कर सकी। इस यात्रा में युवाओं व महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक रहीं।

इस यात्रा ने वर्तमान चुनौती का अपने छोटे से क्षेत्र में व्यापक स्तर पर समझने का प्रयास किया तथा भविष्य के लिये स्थायी समाधान को तलाशने की कोशिश की।

पदयात्रा में वर्तमान चुनौती व अवसरों के विरोधाभास पैदा करने वाल झूठे विकास का जवाब भी तलाश किया गया। लोगों ने अपने संरक्षित भविष्य हेतु प्रकृति के अस्तित्व को बनाये रखने हेतु जल-जंगल-जमीन सम्बन्धी विरोधी गतिविधियों को रोकने, संकल्प लेकर, शिक्षण-रचना, चेतना-संगठन के द्वारा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष (सत्याग्रह) करने का मन बनाया। इस हेतु लोगों को तैयार भी किया।

यह यात्रा संघ के गत 8 वर्षो का मूल्यांकन भी कही जा सकती है। लोगों ने सभी सभाओं में इस संस्था के कार्यों की भी चर्चा की तथा सामलात देह को समझने तथा इन्हें बचाने की पुरानी भूली बातों को याद कराके एक नये आन्दोलन की जन्मदात्री कहकर प्रशंसा भी की वहीं पर कुछ लोगों ने इस संस्था को विकास विरोधी भी कहा।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि 12 जनवरी को आरम्भ हुई, इस पदयात्रा में अवसर विहिन समाज को अच्छे भविष्य हेतु विचार करने का सम्मानजनक अवसर मिला है। जिन्होने ग्राम के अवसर छीनकर सारे प्राकृतिक संसाधनों का मालिक बनाकर, रोजगार दाता, विजेता, बनने की ठान रखी थी, उनके इस विचार के सामने चुनौती खड़ी कर दी है। इस प्रकार यह यात्रा भविष्य से भयभीत लोगों को वर्तमान हेतु चिन्तित कराने वाली एवं वर्तमान से बोझिल लोगों को सुरक्षित भविष्य का रास्ता दिखाने वाली साबित हुई।

इस यात्रा से तो लोगों का हौंसला बुलन्द हुआ ही, साथ ही साथ उच्चतम न्यायलय ने उन खान मालिकों को जेल भेज दिया, जिन्होंने हम पर जानलेवा हमला

किया था। कोर्ट के इस आदेश की चर्चा गांव-गांव में हुई। इससे गांववासियों तथा मेरे साथियों को लगा कि उच्चतम न्यायलय भी हमारी बात पर ध्यान दे रहा है।

इस वर्ष जोहड़ निर्माण के कार्यों के लिए जमुरी देवी को पर्यावरण प्रेमी पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। इसके साथ संज्या-तीजा जैसी और भी कई महिलायें इस कार्य हेतु आगे आई। सूरतगढ़ गांव में रजनी शर्मा ने भी अन्य महिलाओं को सामलाती कार्यों में लगाया।

वन भूमि से कब्जे हटाने, जोहड़ बनाने, तथा वृक्ष लगाने के लिए अब समाज के सभी वर्ग साथ जुड़कर संकल्प लेने लगे हैं।

सामलात देह बचाने का संकल्प पूरा – 1993-94

सरिस्का के टहला गेट पर 30 दिसम्बर 92 के निर्णयानुसार गांव की सामलात देह बचाने हेतु जगह-जगह सभायें होने लगी। 3 जनवरी 93 को पहली बार खनन बन्द कराने के लिए मल्लाना गांव के लोगों ने 25 जनवरी से रास्ता रोको आन्दोलन शुरू करने का निर्णय किया। इस दिन पूरा मल्लाना गांव जैसे संगठित हुआ, वैसा पहले कभी नहीं हुआ था। लेकिन शाम को उप जिलाधीश की प्रार्थना पर तथा मांग पूरी नहीं होने पर 5 मार्च से पुनः आन्दोलन शरू करने की शर्त पर सत्याग्रह स्थगित किया गया। इस निर्णय से कुछ लोग प्रसन्न नहीं थे। लेकिन एक और अवसर प्रशासन को देने की दृष्टि से मुख्य आन्दोलनकारियों ने आसपास के गांवों में तैयारी करने तथा और समय प्राप्त करने की बात पर सबकी सहमति से संगठन में और मजबूती आ गई।

5 मार्च को पुनः मल्लाणा, गोवर्धनपुरा में उसी सड़क पर सारा गांव बच्चे-महिलायें खनन बन्द करने आ गये। बाहर के मजदूरों को भी आन्दोलन में शामिल कर लिया। यह काम कठिन था। लेकिन मल्लाना वासियों ने जिस अपनेपन के साथ खान मजदूरों को समझाया वह मेरे लिए प्रेरणादायी रहा। मजदूर-किसान-पशुपालकों ने अपनी गोचर, पहाड़ बचाने के लिए 28 मार्च तक रास्ता रोके रखा। जब खान मालिक अपने ड़ेरे हटा कर जाने लगे तब लोगों ने सर्व सम्मति से रास्ता खोल दिया। रास्ते में केवल पत्थरो से भरे ट्रक ही रोके गये थे। सवारी गाड़ी या अन्य आवश्यक आना जाना बिल्कुल प्रभावित नहीं किया था। यह "रास्ता बन्द" मल्लाणा-गोवर्धनपुरा में सबसे ज्यादा सफल रहा। बलदेवगढ़, तिलवाड़ी, तिलवाड़ तथा पालपुर में भी रास्ते रोकने का अभिक्रम हुआ था।

इस प्रकार जो खनन उच्चतम न्यायालय के आदेश से 11 अक्टूबर 1991 को बन्द हो जाना चाहिऐ था तथा वही 7 मई 92 के भारत सरकार की अधिसूचना से खनन तथा भविष्य में नये पट्टे देने का काम बन्द हो जाना चाहिए था।

लेकिन यह सब बदस्तूर चलता रहा, तब गांव वालों को अपने अभिक्रम तथा संगठन शक्ति अजमाना ही शेष बचा था। इसी से इन्हें सफलता मिल गई। गांव का सम्मान व स्वाभिमान बढ़ गया। इससे शक्तिशाली के विरूद्ध सर्वहारा को विजयश्री प्राप्त हुई।

इस विजय प्राप्ति से यहाँ के लोगों के मन में आया कि, इस तरह का काम पूरे अरावली पहाड़ में होना चाहिए। तब उन्होंने पूरे पहाड़ों में पदयात्रा करके लोगों में चेतना जागरण करने का बिगुल बजा दिया। 2 अक्टूबर 93 से 22 नवम्बर 93 तक हिम्मत नगर (गुजरात) से दिल्ली तक अरावली बचाओं चेतना पदयात्रा की और गांव-गांव में संगठन बनाये। इस यात्रा का विवरण निम्नांकित हैं:

हरियाली के लिए एक अनूठी पदयात्रा

देश के अन्य हिस्सों की तरह, राजस्थान में भी, आजादी के वाद के इन वर्षों में प्राकृतिक संसाधनों खासकर जंगलों की बहुत बरबादी हुई है, राजस्थान के बारे में धारणा है, कि यह प्रदेश सूखा, पानी की कमी वाला और रेगिस्तान है, यह अर्द्धसत्य है और सिक्के का केवल एक पहलू है। वास्तविकता यह है कि राजस्थान का सिर्फ पश्चिमोतर भाग रेगिस्तान है, शेष दो तिहाई हिस्सा देश के दूसरे भागो की तरह सामान्य, उपजाऊ व हरा-भरा है, इसका मुख्य श्रेय अरावली पर्वतमाला को ही है, जहां होने वाली वर्षा अनेक छोटी बड़ी नदियों के द्वारा न सिर्फ राजस्थान के पूर्वी भाग को सिंचित करती रही है बल्कि अरावली का पानी उससे भी आगे उत्तर भारत के कई हस्सों को सजल करता रहा है। उधर यमुना-गंगा और इधर नर्मदा के जरिए उसका प्रभावपूरब में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर तक पहुँचता है।

वास्तव में अरावली भारत की उन चार प्रमुख पर्वतमालाओं में से है, जो समुचे भारत को उसका विशिष्ट तापमान, मौसम और उपजाऊपन प्रदान करती है। उत्तर में हिमालय, मध्य में विन्ध्य, पश्चिम में अरावली और दक्षिण भारत में, सहयाद्री (पश्चिमी घाट), इन चारों में भी अरावली प्राचीनतम है, अरावली पर्वत माला दक्षिण पश्चिम में गुजरात के उत्तरी छोर में शुरू होकर राजस्थान को दो भागों में बांटती हुई उत्तर पूर्व में दिल्ली तक पहुँती है, करीब 700 किलोमीटर लंबी और 50 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई यह पर्वतमाला अनादिकाल से अनेक छोटे बड़े मानव समूहों को और संस्कृतियों को जीवन देती रही है।

दुर्दशा के प्रति चिंतित

परिस्थिति से चिंतित राजस्थान के कुछ प्रबुद्ध नागरिकों, ग्रामीणों वैज्ञानिको और पर्यावरणविदों ने मिलकर अरावली को बचाने व फिर से उसे हरा-भरा कराने के लिए लोक चेतना को जगाने व संगठित करने का काम शुरू किया है, इस हेतु 2 अक्टूबर 1993 से 21 नवम्बर तक अरावली की समूची लंबाई को पार करती हुई एक पदयात्रा आयोजित की गई, पचास से चार सौ तक स्त्री, पुरुषों का एक समूह जिसमें अधिक संख्या ग्रामीणों व आदिवासियों की थी, अरावली के दक्षिणी छोर हिम्मत नगर (गुजरात) से रवाना होकर रोज औसतन करीब 25 किलोमीटर कभी-कभी 40-45 किलोमीटर तक चलकर पचास दिनों में दिल्ली पहुँची। दिल्ली में संसद भवन तक एक रैली निकाली गई जिसमें दिल्ली के अनेक सामाजिक कार्यकर्ता शामिल हुऐ यात्रा संगठन की ओर से लोकसभा के अध्यक्ष को अरावली की वर्तमान स्थिति की जानकारी देने और अरावली को दुर्दशा से बचाने के निमित्त एक ज्ञापन दिया गया।

पदयात्रा का जन्म सरिस्का क्षेत्र के लोगों की पर्यावरण संबंधी चेतना से हुआ था, सरिस्का के लोगों ने पर्यावरण बिगाड़ने वाली ताकतों के विरूद्ध उच्चतम न्यायालय एंव भारत सरकार से अपने अनुकूल कानून बनवाकर उन्हें लागू कराने के लिए 22 दिन तक सत्याग्रह किया था, इससे पैदा हुए आत्मविश्वास ने ही उन लोगों को पूरे अरावली क्षेत्र में गांव-गांव जाकर अरावली का पर्यावरण सुधारने एवं बिगड़ी हुई परिस्थिति को फिर से बनाने का कार्य करने हेतु प्रेरित किया।

2 अक्टूबर 1993 को पूरे अरावली क्षेत्र में 14 स्थानों से पदयात्रा आरम्भ हुई 51 महिला पुरुषों का मुख्य दल हिम्मत नगर, गुजरात से रवाना हुआ एक दल दो अक्टूबर को ही अरावली की सबसे ऊंची चोटी, गुरुशिखर से चला, यह दल राजसंमद में आकर 14 अक्टूबर को मुख्य दल से मिल गया, इसी प्रकार टोंक सवाईमाधोपुर, कोटा, झुंझनू, झालावाड़ व दौसा से प्रारम्भ हुई पदयात्रा टोलियाँ जयपुर अलवर आदि में मिलती चली गई, हरियाणा में कई जगह से चली टोलियाँ 19 नवम्बर को सोहना में मुख्य यात्रा दल में मिल गई।

रचनात्मक प्रयास

यह स्वस्फूर्त चेतना यात्रा 52 दिन तक गांवों, कस्बों, शहरो में जहाँ-जहाँ भी गई, वहाँ के सब लोगों ने प्रेमपूर्वक इस बड़े कारवां को अपनाया, भोजन कराया, अरावली पर्वत को फिर से हरा-भरा देखने की आशा ने लोक मानस को छू लिया है, ऐसा लगता था, इसीलिए लोगो ने तन-मन से जगह-जगह पदयात्रा दल का स्वागत किया। यह पदयात्रा के दौरान कही गई बातें किसी वर्ग या व्यक्ति विशेष के विरुद्ध नहीं थीं, बल्कि भविष्य में सुख व समृद्धि लाने का एक साझा रचनात्मक प्रयास था, इसलिए कहीं-कहीं पर जब स्थानीय लोग वन विभाग को कोंसते थे, तो पदयात्रियों

की तरफ से प्रकृति के अनुकूल "लोक आधारित" व्यवस्था हेतु साझा संघर्ष करने का आह्वान किया जाता था। यह बात लोगों की समझ में आती थी। जंगल कटवाने का काम केवल जंगलात विभाग ने नहीं किया, बल्कि समाज के धनी एवं अभिजात वर्ग ने विभिन्न तरीकों से जंगलों को नष्ट करवाया हे, एक दिलचस्प तथ्य यह सामने आया कि, जिन जिलों के मुख्यमंत्री या वन मंत्री हुए है, उन जिलों का वन विनाश सबसे पहले एंव सर्वाधिक हुआ है।

अरावली में वन विनाश के साथ-साथ सांस्कृतिक ह्रास हुआ है, जिसमें विशेषकर हमारी पर्यावरणीय, परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं, व निष्ठाओं का लुप्त होना सर्वाधिक दुःखदायी है। यह बात स्थानीय लोगो की तरफ से बार-बार उठकर आई। कई सभाओं में गांव के लोगों ने कहा कि, अब तो जंगल बचाने का एक ही रास्ता है, वह गांव का सामुहिक अभिक्रम। इसमें अभी भी लोगों का विश्वास शेष हैं।

आरावली वाहिनी

पदयात्रा के दौरान हुइ सभी सभाओं की अध्यक्षता कोई स्थानीय व्यक्ति ही करता था, सभी पदयात्रियों को बदलते हुए सभाओं में बोलने का अवसर मिलता, अलग-अलग सभाओं में अलग-अलग के बोलने से पदयात्री दल का भी शिक्षण प्रशिक्षण होता रहा। पदयात्रा दल के साथ चल रही एक शोध टीम सभा से पूर्व ही स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं की जानकारी प्राप्त करके पदयात्रा दल को देती थी जिससे पदयात्री सभा में स्थानीय समस्याओं पर विस्तार से चर्चा करके उनके समाधान के उपाय सुझाते थे। आगे के काम के लिए लोगों को स्थानीय संगठन की आवश्यकता महसूस होती थी, इसलिए "अरावली वाहिनी" के नाम से एक संगठन बनाने की सहज प्रक्रिया आरम्भ हो गई।

शोध दल पहले जाकर वहाँ की समस्याओं से अवगत होने के साथ-साथ ऐसे सज्जन व सक्रिय होने वाले व्यक्तियों की तलाश करता था, जो अपने गांव के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण कार्य में रुचि रखते है। सामलात देह (कॉमन प्रापर्टी रिर्सोस) के प्रबध व संवर्द्धन के परम्परागत तरीको की जानकारी भी यह मांगता, फिर पदयात्रा में पहुँचकर पदयात्रियों को जानकारी देता।

बुनियादी हको की मांग

गुजरात व राजस्थान की सभाओं में अमूमन लोगों ने कहा कि जब से अरावली पर्वत की पहाड़ियाँ सरकार के खाते में गई है, तभी से यह बरबादी हुई है, पहले भू-रिकाई के तीन खाते होते थे, एक खाता राज का, दूसरा समाज का, तीसरा निजी, अब समाज का कोई खाता नहीं रहा, इसलिए समाज को सामलात देह के संरक्षण प्रबंध की कोई रुचि नहीं रही। ये सब काम समाज तभी करता है, जब समाज का उससे लगाव हो, उस पर समाज का अधिकार हो, जगह-जगह लोगों ने कहा कि

सरकार ने सामलात देह पर से लोगों के सब बुनियादी हक छीन लिए हैं, इसलिए पहाड़ नंगे व बरबाद हुऐ है। अब भी ये हमें मिल जाऐं तो हम इन्हें पुनः हरे-भरे कर सकते हैं।

पदयात्रा में चल रही महिलाओं को देखकर गांव की दूसरी महिलाएं सहज ही इनसे मिलने तथा बात करने पहुँच जाती थी, पहाड़ नंगे होने से वर्षा कम होने लगी, ताप बढ़ रहा है, चारे व पानी की कमी हो गई है, खाने के लिए अन्न भी नहीं मिलता है। इसलिए मजबूर होकर बहुत सी बहनों को देह बेचनी पड़ रही है राजस्थान के रतनपुर सीमा से लेकर उदयपुर के बीच होने वाली सभी सभाओं में यह बात बहुत जोरों से उठकर सामने आई। महिलाओं ने कहा कि हमारे पहाड़ नंगे होने से कुओं का पानी नीचे चला गया है। जिससे हमारे परम्परागत सिंचाई के साधन रहट, ढ़ेकुली आदि सब समाप्त हो गए हैं। पशुओं के लिए चारा भी नहीं रहा। अतः भूखें मरते, क्या न करते। हाईवे पर चलने वाले ट्रक ड्राइवर ही अब हमारे जीवन का सहारा हैं। हम उनके साथ बंबई, अहमदाबाद जाकर 10-20 दिन में कुछ कमा लाती हैं, इसी से हमारा जीवन चल रहा हैं। पहाड़ नंगे होने का कष्ट महिलाओं को ही सबसे अधिक भुगतना पड़ रहा है। ईंधन के लिए कोसो दूर जाना पड़ता है। पानी की कमी होने से पानी लाने की कठिनाई भी महिलाओं को ही उठानी पड़ रही है। अतः इस कष्ट से स्थाई मुक्ति पाने हेतु हमें आगे आना होगा, ऐसा अहसास भी महिलाओं में हुआ है। पूरी पदयात्रा के दौरान महिलाओं में अधिक उत्साह नजर आया। सामूहिक नेतृत्व का भाव विकसित हुआ। बहुत से ग्रामवासी इस पदयात्रा में बोलने लगे। इससे लोगों में निर्भयता, आत्मविश्वास का भाव जागृत हुआ है।

इस यात्रा में राज्यवार निम्न संस्थाओं एवम् व्यक्तियों का सहयोग मिला :

1 गोविन्द भाई रावल, विश्व मंगलम्।
2 आर.आर. जुसेरा, नेहरु युवा केन्द्र।
3 मधुसूदन मिस्त्री, दिशा ।
4 डा. निरंजन नाथ, क्लिनिकल रिसर्च सेन्टर।
5 सर्वोदय आश्रम, शामलाजी।
6 श्री अमीचन्द पटेल व सी.पी. पांचाल, आर्ट एवड़ कॉमर्स कॉलेज।
7 हीरा भाई प्रजापत, रचना प्रतिष्ठान।
8 कालीदास, आदिवासी एकता विकास मण्डल, मादरी।
9 लक्ष्मण भाई अंसारी, नव सर्जन युवक मण्ड़ल।
10 कांगजी भाई, गोमती ग्राम समिति बाखरा।
11 सरदार भाई बगोरा, एकलव्य संगठन, अन्धरोखा।
12 देवजी भाई गमार, जंगल हित रक्षक समिति।
13 खेमजी भाई, ग्राम समिति, धोली गांव, बडेरा।

14 भगवती बेन, अरावली विकास संघ।
15 लक्ष्मी बेन, लक्ष्मी महिला मण्ड़ल धनशोर।
16 कोपरेटिव दुग्ध डेयरी, कांकरोल।
17 श्री सुरेश सोनी, कुष्ठ आश्रम।

ये सब संस्थायें हिम्मतनगर, गुजरात की है। ये सब यात्रा में शामिल हुऐ तथा यात्रा की आयोजन व्यवस्था में सहयोग किया।

श्री देवीलाल व्यास, पीड़ो, मांड़ा तथा शिवचरण गोयनका राजस्थान सेवा संघ, डूंगरपूर की दोनों संस्थाओं के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने पुरी तरह सहयोग ही नहीं बल्कि अपने जिले में यात्रा का संचालन किया। डूंगरपुर में एक सफल रैली का आयोजन भी इन्होंने किया। आलोक, बागड़ जनजाति संस्थान का भी सहयोग रहा। श्री सिकन्दर भाई, अरावली वालीन्टीयर्स सोसायटी, खैरवाड़ा उदयपुर इस पूरी यात्रा में अपने बहुत सारे वालीन्टीयर्स के साथ शामिल रहे एवम् संचालन में सहयोग किया। खैरवाड़ा के लोगों एवं अरावली के सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ खैरवाड़ा में लम्बी रैली आयोजित हुई। भीखम चन्द्र मीणा, शांतिलाल, गणेश, बन्शीलाल, गणपत, शारदा, तुलसी, मरियम, सुमित्रा, साहनी, मन्जुला, कोकिला, नूतन, आदि बहिन भाईयों का सहयोग तो हमेशा याद रखने योग्य प्रेरणादायी है।

श्री किशोर सन्त, उबेश्वर विकास मण्ड़ल, सेवा मन्दिर, भंवर सिंह चन्दाणा, ओम श्रीवास्तव, जिनी श्रीवास्तव, आस्था संस्थान। दीनदयाल दशोत्तर, सर्वोदय मण्ड़ल, उदयपुर ने मिलकर इस यात्रा को केवल उदयपुर में ही आयोजन नहीं किया बल्कि दूसरे स्थानों पर जा-जा कर आयोजन में मदद की तथा यात्रा में शामिल रहे। यहाँ रैली व जनसभा में बहुत अच्छी संख्या में लोग शामिल हुऐ।

श्री शांतिलाल भण्ड़ारी, सजीव सेवा समिति ने राज समन्द जिले में यात्रा की व्यवस्था की तथा अन्य क्षेत्रों में भी सहयोग किया। ये यात्रा में भागीदार रहे। अरुणा, शंकर, निखिल तथा राजस्थान किसान शक्ति संगठन के कार्यकर्ताओं ने अजमेर जिले के अपने पुरे कार्य क्षेत्र में पदयात्रियों को रहने-ठहराने की व्यवस्था के साथ-साथ चेतना जागरण के कुछ नाटक तैयार भी कराये।

रतन बहिन, संजीतराय, भंवर गोपाल, समाज कार्य एवम् अनुंसधान कार्य केन्द्र, तिलोनिया का पूरा सहयोग मिला। इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने अजमेर जिले में अपनी संचार टीम के साथ-साथ यात्रा की रहने-ठहरने की सब व्यवस्थाये कराई।

लक्ष्मीनारायण, प्रयोग, संस्था, सोलावता, लक्ष्मणसिंह, ग्रामीण विकास मण्ड़ल, लापोड़िया ने मिलकर अपने कार्यक्षेत्र में सफल संयोजन किया। राजस्थान खादी संस्था संघ जयपुर में दो दिन का सम्मेलन करने के लिए स्थान, रहने, भोजन आदि की सब बहुत अच्छी व्यवस्था की। यहाँ पर रैली तथा प्रभात फेरी भी प्रभावशाली रही।

श्री रूपसिंह अध्यक्ष, राजऋषि पर्यावरण समिति, अलवर, श्री अरुण कुमारु मरुघर विज्ञान भारती, जोधपुर, डा. एस. एस. ढ़ावरिया, बिडला विज्ञान संस्थान, जयपुर। इन तीनों ने गुरूशिखर (माउंट आबू) से राजसमन्द तक एक पद यात्रा टोली का नेतृत्व किया। इन्होंने आगे भी पूरी यात्रा में सहयोग दिया।

अलवर जिले में पदयात्रा की पूरी भोजन व्यवस्था एवम् यात्रा संचालन ग्रामवासियों के हाथ में ही रहा। अलवर शहर में भोजन व्यवस्था सेठ श्री सुवालाल जी ने की। इन्होंने दिल्ली में भी आयोजन में पूरा सहयोग किया।

हरियाणा की जिम्मेदारी श्री सुन्दलाल जी हरियाणा समाज कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र खोरी ने ली थी। यहाँ पर श्री खुशीराम लोक सेवक जी ने पूरी यात्रा की व्यवस्था महाशय भगवान दास ट्रस्ट, श्री राम सैनी, रेवाडी, श्री चिरंजी लाल शर्मा जैसे अनेको लोगों की मदद से पूरी की। ये स्वंय यात्रा में शामिल रहे तथा यात्रा से पहले योजना में तथा बाद में अंनुवर्ती कार्यक्रम में भी शामिल रहे। डा. शांति स्वरूप डाटा, गंगा डाटा एवं विकास भी इस यात्रा में शामिल हुए तथा जगह-जगह व्यवस्था कराई।

दिल्ली में पूरी व्यवस्था गांधी शांति प्रतिष्ठान की तरफ से कराई गई। इसमें श्री बाबूलाल शर्मा सक्रिय रहे। श्री एन. कृष्णा स्वामी, अनुपम मिश्र, रीताराय, राजीव वोरा, श्रीमती नीरू बोरा, ने यात्रा में शामिल होकर सहयोग एवं मार्गदर्शन किया।

डा. छत्रपति सिंह व उनके विद्यार्थी भी शामिल हुए। आशीष कोठारी, स्वामी अग्निवेश, डा. रामजी सिंह, श्री सुन्दरलाल बहुगुणा, श्री सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा, मेघा पाटकर आदि बहुत से अनुभवी व्यक्तियों ने इस यात्रा में शामिल होकर अपने अनुभवों से लाभान्वित किया।

इस वर्ष जोहड़ बनाने, जंगल बचाने का काम जोरों से चला। पर्यावरण चेतना हेतु शिविर, सम्मलेन के अलावा ड़ेढ लाख पौधे लगाये। क्षेत्र के 300 गांवों के विद्यालयो में वृक्षारोपण कराने हेतु पौधे उपलब्ध कराने मे सहयोग किया।

जैविक खाद-देशी बीज को बढ़ावा – 1994-95

पिछले कार्यों को देखने से संघ की तस्वीर एक ग्रामीण परिवेश की संस्था के रूप में निखर रही है। ग्रामीणों के अपने ज्ञान से ही अपने विकास के कार्य करती है। श्रम के प्रति श्रद्धा है, इसलिए श्रमनिष्ठ कार्य करती हैं। इन्हीं कार्यों के माध्यम से सामाजिक संरचना में परिवर्तन लाकर क्षेत्र के युवाओं का मानस समाजोपयोगी बनाने का कार्य कर ही है। जंगल एवं पहाड़ी क्षेत्र में शिशुपालना ग्रहों के माध्यम से क्षेत्र के 500 बालकों के सर्वांगीण विकास का कार्य चालू वर्ष में किया गया।

पंचायत राज अधिनियम के प्रभाव से चुनकर आई 500 महिला पंच, सरपंच, सदस्याओं (पंचायत समिति, जिला परिषद) को व्यक्तित्व विकास एवम् कृषि कुशलता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

सघन विकास की दृष्टि से अलवर जिले की थानागाजी, राजगढ़ तहसील को सजल करने, ग्राम स्वावलम्बन, एवं समृद्धि के लिए इस वर्ष में चलाये कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत् हैं।

इस वर्ष 209 चैकडेम मिट्टी के बांध तथा जोहड़ों का निर्माण किया है। इसके अतिरिक्त 35 पुराने जोहड़ों की मरम्मत की उनकी गाद निकालने का कार्य किया गया। इन कार्यों में आधा और कही-कहीं पर 25% सहयोग श्रमदान तथा नगद के रूप में गांव वालों व लाभ प्राप्त करने वाले लोगों का रहा है। तथा बाकी का खर्च संघ द्वारा विभिन्न दानदात्री संस्थाओं की आर्थिक मदद से पूरा किया गया। स्वीडन दूतावास तथा भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार का भी सहयोग मिला। उक्त कार्यों के साथ-साथ, मेड़बन्दी, गली प्लगिंग, नाला बन्ड़िग के कार्य बड़ी संख्या में स्थानीय सहयोग से पूरे किये।

क्षेत्र में उपलब्ध फसलों के पुराने बीजों के संवर्द्धन हेतु प्रयास स्वरूप देशी बीजों को इक्ट्ठा करके, संवर्द्धन करने के लिए बुआई हेतु किसानों को वितरित किये गये।

बीजों के भण्डारण हेतु क्षेत्र के 150 किसानों को इस्पात की कोठी बनाकर उपलब्ध कराई गई जिसमें वे तैयार बीजों को अगली फसल बौने हेतु सुरक्षित रख सकेंगें।

स्थानीय परम्परागत कोठियों में सुधार किया गया। इससे किसानों में काफी उत्साह बढ़ा है। यह कार्य 10 गांव में किया गया।

कृषकों को रसायनिक उर्वरकों के दुस्प्रभावों को समझा कर प्राकृतिक विधि से तैयार गोबर व घास-फूंस, कुड़ा-करकट तथा फसलों के अवषेशों से बनी खाद कम्पोस्ट

बनाने हेतु प्रेरित किया गया तथा लगभग 70 गड्ढे तैयार किये गये जिसमें 70 कृषकों को सीधा लाभ पहुंचेगा तथा भूमि व पानी प्रदूषण से बचा जा सकेगा।

क्षेत्र के 70 गांव की परम्परागत 70 दाईयों को सुरक्षित प्रसव कराने हेतु प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें वे सभी तथ्य समझाये गये, जो सुरक्षित्र रूप से प्रसव कराने व जच्चा व बच्चा की देखभाल के लिए आवश्यक हैं।

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी क्षेत्र के नये 5 गांव के 10 युवाओं को उनके गांव की सामलात देह की समझ विकसित करने तथा सामलात देह के संवर्द्धन हेतु उन्हें 9 माह का सतत् चलने वाला प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में गत वर्ष के प्रशिक्षर्णार्थियों ने बहुत मदद की है।

अब जिला प्रशासन अपने अधिकारियों के प्रशिक्षण में संस्था का सहयोग लेता है। ऐसे एक प्रशिक्षण में जिले के 65 जिला स्तरीय अधिकारी, जिलाधीश, अतिरिक्त जिलाधीश, उप-जिलाधीश, तहसीलदार, विकास अधिकारी, कृषि, शिक्षा, वाटर शैड, प्रदूषण, पर्यावरण आदि सब विभाग शामिल रहें। इस प्रशिक्षण शिविर में तरुण भारत संघ के वाटर शैड विकास के कार्य जिलाधीश के नेतृत्व में अन्य अधिकारियों ने देखें। उन्होंने सब काम को गहराई से समझा।

महिलाओं में जागृति लाने तथा उन्हें संगठित करने हेतु समय-समय पर ग्रामीण महिलाओं के साथ 50 शिविर एक दिवसीय अवधि के आयोजित किये गये जिसमें लगभग 2000 महिलाओं ने हिस्सा लिया।

150 गांव में गांव स्वावलम्बन के विचार को समझाने के लिए नियमित बैठकें आयोजित हुई। जिसमें गांव स्वावलम्बी बनाने की योजनाओं को चालू किया गया। ग्रामकोष, कपड़ा निर्माण उद्योग शुरू किया। इसके साथ ही गांव के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व संवर्द्धन की योजना के तहत ग्रामवासियों को ग्राम सभा की बैठकों की कार्यवाही लिखना सिखाया गया।

सम्पूर्ण साक्षरता हेतु 3.11.94 को जिलाधीश, जिला प्रशासन व गांव के लोगों के साथ एक साक्षरता शिविर आयोजित किया गया जिसमें 450 व्यक्तियों ने भाग लिया। थानागाजी, राजगढ़ तहसील में 16 मई से 1 जून तक एक साक्षरता पदयात्रा आयोजित हुई। साक्षरता अधिकारियों के साथ जिले की साक्षरता योजना निर्माण में सहयोग किया। संघ के कार्यकर्ताओं तथा जिलाधीश एवं शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ साक्षरता पदयात्रा बामनवास से भीकमपुरा तक आयोजित हुई। क्षेत्र के गांव-गांव में साक्षरता के प्रचार-प्रसार हेतु शिविर/संगोष्ठियों एवम् नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया।

नदी पहाड़ बचाओं यात्रा

पहाड़ों के शोषण को राकने तथा नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए लोगों में चेतना जागृति करने हेतु विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) से 29 जून 1994 तक की यात्रा गलता, जयपुर से प्रारम्भ होकर गंगोत्री में समाप्त हुई इसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों ने भाग लिया। जगह-जगह सभा सम्मेलन, रैली आयोजित की। गंगोत्री में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित हुआ।

पहाड़ों की हरियाली व नदियों की पवित्रता बचाने के लिए आरम्भ हुए इस अभियान की शुरूआत श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने जयपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री उन्नीथान जी की अध्यक्षता में हुऐ सम्मेलन से की। सबसे पहले झालाना डूंगरी के खनन क्षेत्र में सांकेतिक रास्ता रोकने का कार्यक्रम हुआ। उसके बाद गलता कुण्ड में गंगोत्री का जल मिलाकर यात्रा दल गंगोत्री के लिए रवाना हुआ।

संघ का इक्यावन सदस्यीय दल जयपुर से रवाना होकर दिल्ली में दो दिन यमुना नदी पर दिल्ली के लोगों से बातचीत करके फिर हरिद्वार पहुंचा। वहाँ तीन दिन सभा-सम्मेलन, रैली, प्रभातफेरी आयोजित करने के बाद टिहरी क्षेत्र में पहुंच गया। यहाँ पर श्री सुन्दरलाल बहुगुणा के मार्ग दर्शन एवम् नुक्कड़ नाटक सभा-रैली का आयोजन करते हुए गंगोत्री पहुँच गये। पहाड़ के सभी समाजिक कार्यकर्ताओं का अच्छा सहयोग मिला लेकिन श्री भवानी भाई, श्री बिहारीलाल भाई, सुरेश भाई का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

नदी पहाड़ बचाओं यात्रा से लौटने के बाद संघ कार्यकर्ताओं ने ग्रामवासियों से मिलकर यात्रा के अनुभव बाँटे। इन्हीं तीन पंचायत समितियों के 300 गांवों में वृक्षारोपण व उनकों संरक्षण करने के व्यावहारिक काम किया। सवा लाख पौधे संघ की पौधशाला से लोगों को दिये जो कि खेतों तथा घरों में लगवाये गये।

मकर सक्रान्ति 14 जनवरी को सरिस्का से 'जंगल जीवन बचाओं यात्रा ' आरम्भ होकर गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, चण्डीगढ़ होते हुए दिल्ली में 2 मार्च को सम्पन्न हुई। यात्रा का उद्देश्य लोगों व वन अधिकारियों की जंगल व जंगली जीवों तथा संरक्षित क्षेत्रों में रह रहे लोगों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाना था। इसमें विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों ने भाग लिया। इस यात्रा में संरक्षित वन क्षेत्रों का संयुक्त वन प्रबन्ध करने की सम्भावना का पता लगाकर कई जगह संरक्षित वन क्षेत्रों के संयुक्त वन प्रबन्ध का काम शुरू हुआ। इस यात्रा में कुसुम कार्णिक, आनन्द कपूर महाराष्ट आरोग मण्डल, अरूण कुमार, मरुधर भारती, जोधपुर, आशीष कोठारी भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, विरेन्द्र, कल्पृवक्ष किरण देसाई, पर्यावरण शिक्षा केन्द्र, विटटू, सैनचुरी मैगजीन एकता परिषद मुख्य रूप से जुड़े इन्हीं के सहयोग से यह यात्रा आयोजित हुई। क्षेत्रीय संसाधनों के विकास व प्रबन्ध करने वाले लोगो के चार

सम्मेलन हुए। लोगों को अपने जल-जंगल का प्रबन्ध करते रहने हेतु कुछ निर्णय लिए।

90 ग्रामों में सक्रिय संगठन बने जो अपने कानून कायदे बनाकर उनकी पालना कर रहे हैं।

देवरी गांव में 10 बायो गैस सयन्त्रों का निर्माण कराया गया। जिसमें से 5 बायो गैस सयन्त्र अभी चालू हो पाये हैं। बाकी के भी शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायेंगे।

समाज कल्याण बोर्ड की आर्थिक सहायता से 14 गांवों में 14 शिशुपालना ग्रहों का संचालन किया गया। जिससे लगभग 350 बच्चों को लाभ मिला। इसके अन्तर्गत बच्चों को पढ़ाने व पोषाहार वितरण का कार्य किया गया।

जोहड़ों के निर्माण से कृषि, भू-जल व लोगों की सामाजिक आर्थिक व स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन को जांचने समझने की दृष्टि से कई अध्ययन कराये जिनमें डा. जी.डी. अग्रवाल के नेतृत्व में चित्रकूट विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा किया गया बारह गांवों का तुलनात्मक अध्ययन आनन्द कपूर द्वारा देवरी गांव का अध्ययन, डा. भरत झुंझुनवाला द्वारा सूरतगढ़ के अध्ययन का विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन की फोटो-पाइंट मोनीटरिंग एवं अन्य सभी प्रत्यक्ष कार्य श्री अमन सिंह द्वारा गोपाल सिंह व वासुदेव भट्ट की मदद से किये गये। डा. जी.डी. अग्रवाल एवं श्री एम. एल. झंवर के नेतृत्व में गोपालपुरा गांव का अध्ययन सम्पादित हुआ।

कपड़ा स्वावलम्बन के विचार को प्रसारित करने की दृष्टि से 5 अम्बर चरखे साधारण व पेटी चरखे की एक यूनिट सूत कताई वास्ते प्रारम्भ की गई। भीकमपुरा में कपड़ा बुनने वास्ते मशीने लगाई हैं।

लोगों में अपने संसाधनों के प्रति समझ पैदा करने तथा संसाधनो के संवर्द्धन की योजना बनाने एवम् योजनानुसार काम करने की योग्यता का विकास करने की दृष्टि से प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण करके यह प्रशिक्षण कार्यक्रम चालू किया है। इससे देशी खाद एवम् जैविक खाद को भी बढ़ावा मिला है।

इस वर्ष खेती में देशी बीज किसानों ने बहुत काम में लिये। जैविक खाद बनाना तथा उसका उपयोग किया। संघ ने 60 ट्रक खाद बनाई। इस चालू वर्ष में लगभग 130 ट्रक जैविक खाद तैयार होगी। आश्रम में 10 क्विंटल देशी गेंहू का बीज तैयार किया। पेड़ों के बीज भी तैयार किये। जिनमें नीम, शीशम, कचनार, सिरस, देशी बबुल, सुबबूल मुख्य है।

संघ ने सन् 1984 से 95 तक जल, जंगल, जमीन को लेकर कोई 300 गांवों में कुछ न कुछ काम किया है। इनमें से अनेक गांवों में इस सब के कारण

बहुत बदलाव आया है। इन सबका वर्णन इस छोटी सी पुस्तिका में सम्भव नहीं होगा। उदाहरण के लिए यहां पांच गांवों की संक्षिप्त जानकारी दे रहे हैं।

भाँवता : लोक-अभिक्रम से समृद्धि

अरावली पहाड़ियों के मध्य सरिस्का राष्ट्रीय पार्क सीमा पर स्थित एक छोटा-सा गांव है - भाँवता। लगभग तीस परिवार वाले इस गांव की कुल जनसंख्या 320 है। यह सुखाग्रस्त क्षेत्र माना जाता है। मुख्य व्यवसाय पशुपालन और खेती है। वार्षिक वर्षा का औसत 300 मि.मी. से 700 मि.मी. है, परन्तु वर्षा अनियमित और अनिश्चित है, इसलिए इसका लाभ बहुत ही कम मिल पाता है। गांव के एक वृद्ध सुन्दरा गुर्जर के अनुसार महीनों तक तो कोई वर्षा नहीं होती और जब होती है तब अचानक बहुत भारी और लगातार दो-दो दिन तक। ऐसी वर्षा से कुल मिलाकर लोगों के खेत कट जाते है। मिट्टी बह जाती है। सन् 1985-86 में यहा भयंकर सूखा पड़ा, औरतों को दिन में दूर-दराज के कुंओं से कई बार पानी लाना पड़ता था। इस विकट स्थिति में गांव वालों को कुपोषण व बीमारी का शिकार होना पड़ा और अधिकतर पशु मर गए।

ग्रामवासी संस्था के कार्यकर्ताओं से गोपालपुरा गांव की सफलता की कहानी सुनकर वहां पहुँचे और उसे देखा। विश्वास होने के बाद ही भांवता-वासियों ने अपने सहयोग की पेशकश की थी, तभी संघ ने इस गांव में स्वास्थ्य और शिक्षा सम्बन्धी अपने कार्यक्रम शुरू किए। इस सबसे संघ को गांव वालों के साथ घुल-मिलकर काम करने का अवसर मिला था।

बीते समय में ऐसा भयंकर सूखा और अकाल कभी नहीं आया था, क्योंकि गांव में जल एकत्र करने वाला एक पुराना जोहड़ था जो उचित रख-रखाव की कमी सें गाद (कंजी) और कीचड़ भरने के कारण बेकार हो गया। इसलिए वर्षा के पानी का अधिकांश हिस्सा बहकर चला जाता और गांव के लोगों को हमेशा पानी की कमी का सामना करना पड़ता। अधिकतर कुंए सूख गए। ऐसी विकट स्थिति में संघ ने दूसरे गांवों की तरह इस गांव का भी अभिक्रम जगाया। कुछ दिनों बाद यहां अच्छा ग्राम संगठन बना। इसमें गांव का जल गांव की सीमाओं में रोकने का सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया।

भांवता गांव में ग्रामीणों की सहभागिता से अब तक छः जोहड़ों का निर्माण हो चुका है। लोगों ने जमीन, श्रम, सामान और धन के रूप में अपना अंशदान दिया है। काम शुरू करने के साथ-साथ यहां ग्रामसभा "गांवाई संगठन" सक्रिय होता गया। भांवता में औरतों ने भी एक समानान्तर संगठन बनाया जो ग्रामसभा का एक हिस्सा ही है। ये बराबर मिलकर अपने निर्णय से कार्य करता है। संगठन की एक सदस्या

मूली देवी ने कहा कि - "हमने ग्रामसभा में महिलाओं की एक अलग संगठन का निर्माण नहीं किया, बल्कि उनका अधिक सहयोग करने हेतु यह संगठन बना है।" लेकिन प्रत्येक गांव में अलग महिला संगठन नहीं है। इस प्रकार के प्रयोग संघ द्वारा उन गांवों में किए जा रहे हैं, जहां पर पर्दा-प्रथा की परम्परा बहुत ही गहरी है। संघ के एक सदस्य अर्जुन गुर्जर ने कहा कि महिलाओं की हिस्सेदारी से हम एक मजबूत ग्रामसभा का अस्तित्व चाहते हैं।

जल प्रबन्ध

जोहड़ों के द्वारा जल एकत्र करने का प्रभाव दो वर्ष में दिखाई पड़ने लगा। ग्रामसभा ने बहुमत के आधार पर जो निर्णय लिए थे, उसी के अनुरूप प्रबन्ध किए गऐ। ग्रामसभा के सदस्यों ने बताया कि जोहड़ निर्माण से पहले जहां कुँए सूख चुके थे, अब जोहड़ निर्माण के जल-स्तर के बढ़ जाने के कारण सभी कुओं में पानी भर गया है। जोहड़ का प्रत्यक्ष प्रभाव (लाभ) कृषि योग्य भूमि में नमी बनाए रखने पर पड़ा है। भूमि प्रयोग के तरीकों में और अधिक सुधार आया है। जोहड़ निर्माण से पहले गांव में 4 हैक्टेयर सिंचित भूमि, 72 हैक्टेयर असिंचित भूमि (जो वर्षा पर ही आधारित थी) और 7 हैक्टेयर बेकार पड़ी भूमि थी। जोहड़ निर्माण के बाद सिंचित भूमि बढ़कर 23 हैक्टेयर हो गई और अब बेकार जमीन नहीं रही है। गांव के लोग अब पहले से अधिक सुखी और खुश हैं, क्योंकि उनके अनुसार फसल उत्पादन में चार वर्ष पहले की तुलना में जब जोहड़ों का निर्माण नहीं हुआ था, अब चार गुंणा वृद्धि हो गई है। इन सबसे सामाजिक जीवन के स्तर, स्वास्थ्य और पोषण में मूलभूत सुधार हुआ है।

जंगल और चारागाह प्रबन्ध

सामुदायिक प्रयासों से जोहड़ निर्मित करने के फलस्वरूप गांव वालों में प्राकृतिक संसाधनों जैसे - जंगल और चारागाह आदि के प्रबन्ध के लिए भी आत्मविश्वास पैदा हो गया और ग्रामसभा ने मानसून में प्रत्येक वर्ष वृक्षारोपण का कार्य करने का निर्णय लिया, जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन तरह के वृक्षारोपण कार्य किए गए। उदाहरण के लिए जोहड़ों के किनारों पर पीपल और बरगद के वृक्ष लगाए गए, क्योंकि इन वृक्षों का एक विशिष्ट महत्व भी है। कुछ अन्य वृक्ष सामुदायिक स्थानों मन्दिर और गौरा (पशुओं के आराम करने का स्थान) आदि में लगाए गए। वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लगभग 5000 नए पेड़ लगाकर 140 हैक्टेयर भूमि की रक्षा जानवरों और लोगों से की गई। इस जमीन पर घास विकसित हो गई है। अब उसे जानवारों और लोगों के लिए खोल दिया है। इस सबसे पैदावार में चहुमुखी वृद्धि हुई। इस प्रकार इन सबसे चारे और ईंधन की उपलब्धता में भी प्रचुर मात्रा में वृद्धि हुई है। मवेशियों के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सुधार आया है। परिणामस्वरूप दूध और घी के अधिक उत्पादन से आर्थिक स्थिति में परिवर्तन हुआ है।

ग्रामसभा ने वृक्षों की रक्षा और संरक्षण के लिए एक क्रिया-विधि तैयार की है, जिसके अन्तर्गत उन लोगों के लिए दण्ड (आर्थिक) का प्रावधान भी किया है, जो पेड़ों को नुकसान पहुंचाते हैं या जानवरों को संरक्षित क्षेत्र में ले जाकर नुकसान करते हैं। ऐसे लोगों पर 51 से 101 रुपए तक अर्थ दण्ड भी हुए हैं। रोपित पौधों और बड़े पेड़ों की रक्षा और संरक्षण का उत्तरदायित्व पूरे गांव का है और जिसके लिए प्रत्येक ग्रामवासी गम्भीर रूप से वचनबद्ध और समर्पित है। इस प्रकार गांव वालों ने थोड़े समय में ही वह कर दिखाया, जो वन विभाग अपने लम्बे इतिहास में भी नहीं कर सका था। शायद वन विभाग एवं सिंचाई विभाग ने ऐसा कभी सोचा भी नहीं होगा कि गांव के पास ज्ञान, कुशलता व क्षमता है, वह अपने प्राकृतिक संसाधनों का संवर्द्धन कर सकता है।

इस गांव के लोगों ने स्वावलम्बन की दृष्टि से गांव में आरम्भ हुई पूंजी निर्माण प्रक्रिया को एक स्थाई स्वरूप देने हेतु "ग्राम कोष" का निर्माण किया है। ये प्रत्येक घर से अपनी पैदावार का चालीसवां हिस्सा (मण पीछे सेर) या माह में एक दिन का श्रम ग्राम हित के कार्यों को देते हैं। इनके ग्राम कोष में अब 17 मण अनाज है तथा सात लाख रुपए की सामुदायिक सम्पत्ति (दो बांध) जो इनके श्रमदान से बने हैं, जो अब सतत् पूंजी निर्माण का साधन बने हैं। इसी प्रकार 300 हैक्टेयर वन क्षेत्र व गोचर है। इस कारण चारा-ईंधन की इस गांव की पूर्ति के बाद भी इसकी कोई कमी नहीं होगी। ऐसी व्यवस्था गांव ने बना ली है। गांव स्वानुशासित होकर अपनी पशु संख्या बढ़ने नहीं देता और दूसरों के पशुओं से अपने गोचर-जंगल को बचाता है।

इस वर्ष गांव के पूर्व जागीरदार ने अपनी भेड़-बकरी गांव के गोचर में चराने की कोशिश की थी गांव वालों ने इसका विरोध किया तथा जंगल-गोचर में नहीं चरने दिया। दो लोगों ने हरे पेड़ काट लिए थे, उन पर 101 रुपए का अर्थ दंड करके ग्रामसभा ने वसूल कर लिया। इस प्रकार गांवाई दस्तूरों की पालना व गांव को न्याय दिलाने का काम यहां बहुत ही तत्परता से सहज तरीके से हो जाता है। जिसके लिए सरकार में सालों-साल लगते हैं।

यहां सामलात देह से अतिक्रमण हटाने का कार्य कुछ घण्टों में पूरा कर लिया तथा भविष्य में अतिक्रमण नहीं हो, ऐसी व्यवस्था बनाने की दृष्टि से ग्रामसभा ने नियम बनाये है। जिस परिवार के पास ज़मीन बहुत कम है, उसे कुछ गांवाई सामलात देह में से जमीन दी है। किसी को ज्यादा आवश्यकता है, तो उसे ग्रामसभा जमीन देने का विचार करती है। सर्वसम्मति से उसे जमीन बता दी जाती है।

ग्रामसभा ने अपने जल तंत्र का पूर्ण प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी बहुत ही सफलतापूर्वक निभाई है। ये अपने जोहड़ बांधों की सतत् देखभाल व मरम्मत करते रहते हैं। जल, जंगल, जमीन संरक्षण हेतु नियम (दस्तूर) बनाकर उनका तत्परता से

पालन करते हैं। आपसी झंझटों का निपटारा भी ये स्वयं करते हैं। जल के लाभ का बंटवारे के लिए अब तक कोई भी झंझट नहीं हुआ है। यदि कभी कुछ हुआ भी तो उसे मिल-बैठकर सफलतापूर्वक हल किया है। उसके लाभ भी समानता व न्यायपूर्ण तरीके से बांट लिए हैं।

ये सब काम सहज रूप से पूरे करने के पीछे मुख्य बात यह है कि जल प्रबन्ध की परम्परागत व साधारण तकनीक को अपनाया गया है, जिसकी सफलता ये पहले ही अपने पुरखों से देख-सुन चुके थे। दूसरे, भांवता गांव ने संघ के सहयोग से हुए पास के गांव में काम देखकर स्वयं आगे आकर स्व-अभिक्रम से काम शुरू किया था। इसकी कार्यकुशलता, आत्मविश्वास व क्षमता लोगों में थी। तीसरा मुख्य कारण भांवता गांव में रहने वाले लोग एक बराबरी वाला समूह है अर्थात एक ही वर्ग के लोग हैं। चौथा, इस कार्य के लाभ स्पष्ट दिखने वाले हैं। इस प्रकार के काम से लोगों की पूंजी बढ़ती है। उनका स्वामित्व भी बढ़ता है।

पूरे गांव की सहज हिस्सेदारी होने की सफलता का मुख्य कारण ग्राम भांवता में काम से पहले चेतना जागरण व उत्प्रेरण कार्य पूर्ण होना तथा निर्णय प्रक्रिया में सबकी भागेदारी को सुनिश्चित होना है। इससे सभी कार्यों के साथ लोगों में अपनापन का भाव पैदा हुआ, तभी एक-चौथाई से आधा तक श्रमदान लोगों ने किया है। गांव में ग्रामकोष की स्थापना से सतत् निर्माण की स्थाई प्रक्रिया चालू हुई, जिससे बांधो-जोहड़ों का लाभ इन्हें गांव में खेती की उत्पादकता बढ़ाने के रूप में मिला। पेयजल उपलब्ध होना तथा गांव की संपूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक समृद्धि से गांव में पुर्ननिर्माण की सहज प्रक्रिया चालू हो गई, इसलिए लोग अपने संसाधनों को समृद्ध करने में अपनी जिम्मेदारी मानकर हिस्सेदारी निभाते हैं।

अपने पसीने से सिंचा एक गांव – गुजरों की लोसल

अलवर जिलाधीश ने लोसल गुर्जरान गांव के अपने बचाए जंगल व हरे-भरे गोचर तथा गांववासियों द्वारा बनाये गए तीन बांध, एक जोहड़ को देखा। इस गांव में आज से पहले किसी भी सरकार का कोई भी विकास कार्यक्रम, कोई छोटे से छोटा अधकारी तक नहीं पहुंचा था। लेकिन इस दिन तो इस गांव से संबंध रखने वाले सब छोटे-बड़े अधिकारी यहां मौजूद थे। जिलाधीश मनोहर कांत जी ने अपने विकास अधिकारी से पूछा, "आजादी के बाद सरकार ने इस गांव में क्या किया? सब चुप! इस गांव में आप में से कोई पहले कभी आये हैं ? तो भी सब चुप! इस गांव ने जो काम किये, वे आपने देखें? सब फिर शांत रहे। फिर जिलाधीश ही स्वयं गांव वालो को संबोधित करते हुए बोले, इस देश में सब गांव आप जैसे हो जाए तो सब

भारी-भरकम ढांचे की कोई आवश्यकता ही नहीं रहे। गांव के लोग ही अपना सही विकास कर सकते हैं।"

यह गांव राजस्थान के अलवर जिले में सरिस्का सीमाओं में अरावली पहाड़ी श्रृंखलाओं के बीच बसा हुआ है। यहां 74 गुर्जर परिवार रहते हैं। जनसंख्या 527 है। लोग मुख्यतः पशुपालन और खेती करते हैं, लेकिन पानी की कमी के कारण यहां के लोग हमेशा ही गर्मी के दिनों में गांव छोड़कर पानी, चारा व काम की तलाश में बाहर चले जाते थे। गांव के 22 कुंए सूखे पड़े थे। एक भी कुंए में पेयजल पूर्ति के लिए पर्याप्त पानी नहीं था। प्यासे मरते ये लोग तथा पशु गर्मियों के दिनों में ठोकरे खाते हुए घूमते थे।

इस गांव पर पास के एक बड़े गांव के कुछ पढ़े-लिखे तथा सरकारी नौकरों का बहुत दबाव रहता था। यह उनसे डरते थे। वे आकर इनकी चीजे उठवा ले जाते थे। इनका जंगल कटवाकर ले जाते थे। अनेक प्रकार का भय-आतंक इनके मन पर उन्हीं लोगों ने डाला था। उन्होंने गांव में फूट भी डाली थी। एक दूसरे के दुख में मरण, जीवन में तो यह लोग एक जगह आ जाते थे, लेकिन अपनी भलाई-तरक्की की बात आपस में करने से डरते थे। अपनी भलाई की बात की तो दूसरा व्यक्ति इसका लाभ उठा लेगा, मेरी भलाई दूसरे को अच्छी नहीं लगेगी। गांव में सबकी भलाई साथ-साथ सम्भव है ऐसा विचार गांव में समाप्त हो गया था।

लेकिन फिर कुछ समय पहले इस गांव ने थोड़ी सी दूर बसे दो और गांवों को देखा। गोपालपुरा तथा मांडलवास की समृद्धि को देखकर गुर्जरान लोसल गांव के लोगों ने इन सब परिस्थितियों से निबटने की शक्ति पैदा कर ली। ये संघ के पास आये। संघ के कार्यकर्ता ने इन लोगों की समस्याओं को जानने और समझने के लिए उनके साथ बातचीत के कई दौर किए और अन्त में ग्रामवासियों के साथ बनाई योजनाओं पर कार्य करने का निर्णय लिया। पारम्परिक रूप से यहां पर पानी की बहुत कमी है और इसीलिए जल यहां के लोगों के लिए बहुत कीमती है। मगर जैसा यहां पर पानी की बहुत कमी है और इसीलिए जल को एकत्र करना इतना कठिन नहीं है। एक तालाब पहले यहां गांव में ही था। वह सिंचाई, पशुओं के पीने के पानी और भूमिगत जल के पुनः सिंचन के काम आता था। लेकिन उपेक्षा के कारण यह अनुपयोगी हो चुका था। इसका कारण समझ में आते ही लोगों ने संगठित होकर काम चालू किया।

अब तक इस गांव में, लोगों की हिस्सेदारी से संघ द्वारा पांच जोहड़, दो से बीस बीघा के बनाए हैं। गांव ने कुल लागत का चौथाई से अधिक श्रमदान के रूप में जुटाया है। जोहड़ों के संयुक्त निर्माण और प्रबन्ध से लोगों में दूसरे प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंध का भी आत्म विश्वास जागृत हुआ। इस सबने लोगों में आत्म

सम्मान, गर्व, निर्भयता और मिल-जुलकर कार्य करने की भावना को विकसित करने में भी मदद दी है। लोगों ने परस्पर मिलकर सुव्यवस्थित ढंग से कार्य करके पूरे गांव की भूमि जल और वन का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया है। इस सबके बाद ढेर सारे काम जैसे - वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण, बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, नशाबंदी, परिवार नियोजन, स्वास्थ्य् और शिक्षा आदि पर योजनाबद्ध तरीके से कार्य शुरू किया है।

जोहड़ निर्माण के एक वर्ष बाद ही उसका प्रभाव दिखने लगा है। जोहड़ निर्माण से पहले कुंए सूख गए थे, जोहड़ बनने के बाद से सभी कुंए पुनः सिंचित हो गये और जल स्तर बहुत बढ़ गया है। भूमि उपयोग के तरीकों में भी बदलाव आया है। जोहड़ निर्माण से पहले 40 हैक्टयर भूमि असिंचित, 90 हैक्टयर कृषि योग्य व 184 हैक्टयर बंजर भूमि थी। जोहड़ों के निर्माण के फलस्वरूप 60 हैक्टयर सिंचित, 90 हैक्टयर कृषि योग्य, 134 हैक्टयर अकृषिकृत और 30 हैक्टयर चरागाह भूमि हो गयी है। यहां 1986 से आज तक हजारों की संख्या में पेड़ों को बचाया है। 404 हैक्टयर बंजर और बेकार भूमि को घटाकर अब 300 हैक्टयर कर लिया गया। इस बेकार भूमि पर अब केवल संरक्षण से ही 104 हैक्टयर में अच्छा जंगल खड़ा हो गया है। पशुधन में भारी वृद्धि हुई है। उदाहरण के लिए भैंसों की संख्या बढ़कर 300 से 440 हो गई और गाय 350 से 430 हो गई हैं। दूध का उत्पादन डेढ़ गुना बढ़ा है। बकरी घट गई हैं। गावं वालों की आय बढ़ गई है और सामाजिक सुधार के काम भी खूब होने लगे हैं।

पहले गांव अपने गोचर, तालाब, वन आदि को अनेक 'दस्तूरों' से बचाकर रखते थे। फिर धीरे-धीरे लोग ये दस्तूर भूल गए। आज उन्हें फिर याद किया जा रहा है और उन्हीं के आधार पर ग्रामसभा ने गोचर और वन के विकास हेतु अपने नियमों को लागू किया है। छोटे-बड़े सभी कार्य गांव स्वयं करने की कोशिश करता है। इनके प्रयास को देखने यहां के विधायक भी गांव में दो बार आ चुके हैं। पहले तो वह कहते थे "आपके बांध, तालाब टूट जायेंगे। गांव बह जाएगें, आप खुद मत बनाओ।" लेकिन आजकल प्रशंसा करने लगे हैं। उन्होंने भी अब इस गांव तक पहुंचने हेतु रास्ता बनाने का कार्य चालू करवा दिया है।

गौर उस जगह को कहते हैं जहां गाय-भैंस जोहड़ में पानी पीकर बैठते हैं। उस स्थान का सीमांकन करके उस पर से नाजायज कब्जे हटवा दिए हैं। इसी प्रकार कांकड बनी, रखतबनी, देवबनी, देव ओरण (अलग-अलग प्रकार के वन) को बचाने हेतु दूध व गंगाजल मिलाकर उससे सीमांकन कर दिया है। उसमें पेड़ लगाकर पत्थरों की चार दीवारी करने की तैयारी कर ली है।

गांव के नदी-नालों से हो रहे कटाव को रोकने हेतु तीन छोटे बांध दो तट बंध, पांच जोहड़ बनाए हैं। जो गांव प्यास से मरता हुआ हर वर्ष बाहर जाता था, अब उसी गांव के कुंओं में अथाह जल हो गया है। खूब खेती होने लगी है। गांव में ही रोजगार के अवसर बहुत बढ़ गए हैं। इसलिए अब बाहर जाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

गांव को न्याय गांव में मिले इसलिए परम्परागत न्याय की प्रतीक "थाई" व्यवस्था को पनु: जीवित कर लिया है। लोग अपने विवादों को अब थाई पर बैठकर सुलझा लेते हैं। पूरा गांव प्रत्येक अमावस्या के दिन मिलकर अपने गांव की तरक्की के लिए बातचीत करके योजना बनाता है, कार्य का संचालन विधि तय करते हैं। गांव में चल रहे काम पर सबकी राय जानने पर सबकी राय जानने तथा महिला-पुरुषों को सुनने हेतु एवम् निर्णय में उनकी पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अमावस्या व पूर्णिमा को ग्रामसभा की नियमित बैठक होती है।

प्रथा पुरानी थी अब उसे भी फिर जीवित किया गया है। पूरा गांव सावन के महीने में मिलकर देशी धी से खीर-जलेबी बनाकर सहभोज करता है। इससे आपसे में मनमुटाव दूर हो जाते हैं। इस भण्डारे की सब मिलकर व्यवस्था करते हैं। अपनी जिम्मेदारी का सहज बंटवारा भी देखने समझने योग्य है। गांव ने अब सरकार पर दबाव बनाकर एक विद्यालय भी चालू करवा लिया है। गांव के तरुणों व किशोरों ने अपने खेलने के लिए भी एक सुन्दर स्थान, मैदान बना लिया है। पहले गांव से दूध बाहर जाता था। अब दूध नहीं जाता। दूध का घी बनाकर ही बेचते हैं। इन्होंने तय किया है कि गांव के बच्चों को दूध मिलना चाहिए। घी के बाद खूब छाछ भी गांव में ही रह जाती है।

यहां गांव के सामलाती कामों को पूरा करने हेतु एक ग्रामकोष भी बनाया है। इससे अपने शरीर श्रम और आय का एक निश्चित भाग चालीसवां हिस्सा मिलाकर सब लोग गांव के काम में लगाते हैं। यह क्रोष गांवाई रचनात्मक कार्यो को पूरा करनें के साथ-साथ कर्जा मुक्ति का भी माध्यम हैं। यहां की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक समृद्धि का माध्यम ग्रामसभा की सक्रियता ही है। इससे समृद्धि में सबकी समान भागीदारी होती है। आज यहां के जंगल, जमीन, जल संसाधन इतने समृद्ध हो चुके है कि गांव की आवश्यकता पूर्ति के बाद भी उनका ह्रास नहीं होगा। वे तो सतत समृद्ध होते रहेंगे। बस सवाल यह है, कि गांव के लोग इन संसाधनों को कब तक अपना भविष्य मानकर इनसे जितना लेंगे उतना ही उन्हें वापस लौटाते रहेंगे। कब तक यह संतुलन बना रहेगा? गांव भोगवादी दौड़ में कब तक शमिल नहीं होगा? जल, जंगल, जमीन पहले जैसी स्थिति से बचाने के उपायों का ग्रामसभा कब तक पूरी सक्रियता से संचालन करेगी? इन प्रश्नों का जवाब या आशा

की किरण गांव के सभी कामों में लोगों की पूर्ण हिस्सेदारी तथा बराबरी के साथ उभरती सक्रियता ही है।

गोकुल में बदलता - देवरी

न कोई लड़ाई, न कोई झगड़ा, न मारपीट, न चोरी, न नशा। अनाज की पैदावार दिन दुगनी, रात चौगनी बढ़ रही है। कुंए जल से लबालब भरे हैं। घी-दूध की नदी बह रही है। सब मिल बाट कर प्यार से खाते हैं। गांव की भलाई की बातें मिल बैठकर तय करते है। अमावस्या के दिन सारा गांव इकट्ठा होकर पिछले किये की जांच-परख और आगे के सुधार की योजना बनाता है।

पहले यही गांव था, कुंए सब सूखे हुए थे। न पीने के लिए पानी था, न ही खाने के लिए अनाज, सब गाय-भैंस लेकर गर्मियों में गांव छोड़कर बाहर चले जाते थे। जो महिलाएं यहाँ रहती थी उनके लिए 15 सेर गेहूँ सिर पर या गधे पर लादकर लाना ही एक बड़ा मुश्किल काम था। पेट भरने के लिए अनाज भी जंगलात वाले नहीं लाने देते थे। हमारे खाने पीने के लिए सामान लाने के रास्ते में नाहरसती के पास दीवार खड़ी कर दी थी। हमें गांव से भगाने के लिए यही जंगलात के लोग पहाड़ पर चढ़कर पत्थर बरसाते थे। अब हमारे गांव में ऐका करने तथा मिलजुल कर फैसला करने से हमारे सब दुःख दूर हो गये हैं। हमारे दिन बदल गये हैं यह बात केवल 80 वर्षीय प्रभात पटेल की ही नहीं पूरे गांव का भी यही मनाना है। अब हमारा उज्जवल भविष्य है। कष्टों पर विजय पाने की ताकत अब हमें मिल गई है।

9 वर्ष पहले हमारे गांव देवरी में जंगलात विभाग के 4 गार्ड रहते थे। चारों अपनी शराब व मोज मस्ती के लिए हमें बहला-फुसला कर हमसे ही हमारे पेड़ कटवाते थे। 500 रुपये से 1000 रुपये हर छः माही ये प्रति परिवार हमसे वसूलते थे, यह सारा पैसा इन्हीं की जेब में जाता था। पैसा लेने के बाद न कोई पर्ची न रसीद।

वन विभाग वाले हमारे जगह-जगह रास्ते रोककर चौथ वसूलते थे। हमे इनसे चोरी छिपे सिर पर अनाज रखकर घर पहुंचाना पड़ता था। दुकानदारों का कर्ज भी हम पर बढ़ता ही जा रहा था। वे खाने के लिए अनाज देने की भी आनाकानी करते थे। भूख व प्यास के कारण बीमारी ने अपना पैर फैलाना शुरू कर दिया था। डाक्टर या वैद्य का तो इस गांव में पहुंचना एक कोरी कल्पना थी। चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा हमारा गांव बिल्कुल वीरान लगता था। नंगे पहाड़ व सूखे पेड़ों के ठूंठ गांव को कोसते थे, हम खुद ही अपने गांव में रहने से डरने लगे थे। देवरी गांव में कहीं धर्म-धोरा नहीं था। आपस में एक दूसरे की मदद करने की श्रृद्धा भी समाप्त सी हो

गई थी। हममें अन्याय से लड़ने की ताकत नहीं रही थी। हम गुलामों की तरह जंगलात विभाग वालों की मार तथा भगवान के कोप के लम्बे समय तक शिकार रहें।

1986 में तरुण भारत संघ का कायकर्ता गोवर्धन यहा पहुंचे। उसने छोटे बच्चों को पढ़ाना चालू किया, तभी वन विभाग से रसीद मांगने की ताकत हममे आनी शुरू हो गई थी। विभाग वालों ने कहा तुम्हारी क्या मजाल, हम कोई रसीद नहीं देंगे। गांव वालों ने कहा तुम रसीद नहीं दोगे, हम भी कुछ नहीं देंगे। यह बात कहने की ताकत गोवर्धन के 9 महिने के प्रयास के बाद हुई। लेकिन इस आसान व सरल सी बात से ही हमारे गांव में जो ताकत पैदा की उसका हमें ही अन्दाजा है। शब्दों में लिखना मुश्किल होगा, लेकिन इस का अन्दाजा जरूर मिल सकता है। इसी बात के आधार पर जंगलात विभाग को हमारा गांव छोड़ना पड़ा था। ग्राम सभा के इस निर्णय से कि हमें ऐसे किसी आदमी से बात नहीं करेंगें। जिसने हमारे गांव को धोखा दिया हो। हमे चुपके-चुपके लूटा हो, हमसे रिश्वत ली हो, हमें बेइज्जत किया हो तथा हमें अब तक गुलामों की तरह से रखा हो, जब गांववासियों की इनसे बातचीत बंद हुई यहां तक की मांगने पर भी पीने के पानी पर भी गांव सभा ने अनुशासित पाबंदी लगा दी तो स्वयं ही जंगलात कर्मचारियों को हमारे गांव से पत्ता साफ हो गया।

इनके गांव से चले जाने के बाद सब गांववासियों ने सर्वसम्मति से फैसला किया कि यह जंगल हमारा है। हम ही इसकी रक्षा करेंगे, हम जंगल में भेड़-ऊंट आदि चराने नहीं देंगें, और न ही हरे पेड़ काटेंगें और न ही दूसरों को काटने देंगे। ये सब हमने मौखिक बातें ही नहीं रहने दी, ये सारी बातें हमारी गवाई बही में लिखी गई। इनका पूरे गांव ने अनुशासित होकर पालन किया।

अब साथ ही साथ अगला फैसला गांव में वर्षा जल की एक-एक बूंद को रोकने का हुआ। इस गांव में 7 कि.मी. लम्बे कैचमेन्ट में तीन मध्यम बांध, 2 तट बंध तथा 6 जोहड़, लगभग 50 नाला बन्डिग एवं मेडबंदी बनाई गई इसका परिणाम अब यह है, कि आप गांव के सभी 18 कुंओं में 10 फुट से 40 फुट पानी है। अब यह पानी जून के महिने में भी नहीं सूखता। इस वर्ष इस गांव में 2000 क्विंटल अनाज पैदा हुआ है। जबकि वर्षा जल के रुकने से पहले बहुत अच्छा वर्ष होने पर भी 1978 में कुल 700 मन अनाज पैदा हुआ था। 1986 से लेकर 89 तक खाने के लिए एक दाना तक भी पैदा नहीं होता था। कुंए सूख जाने के कारण लोग चरस चलाना, सिंचाई करना भी भूल गये थे। लेकिन आज जिस प्रकार कुंओं में पानी बढ़ गया है। उसे देखकर तो ऐसा लगता है कि दूध देवता जो हमसे नाराज होकर हमारा गांव छोड़कर चले गये थे अब वे वापिस लौट आए हैं। घर-घर में दूध छाछ की नदियां तथा घी के बिलोले (मटके) भरे हुये हैं। अब इनके खरीदने वाले गांव में ही

पहुंच जाते हैं। अब हमारी जरूरत पूरी होने के बाद जो शेष बचता है, पहले पड़ौसी की जरूरत पूरी करते हैं। उसके बाद भी जो बचता है, उसे बेच देते हैं।

गांव में लौटती समृद्धि को देखकर अब फिर जंगलात विभाग वाले हमारे गांव को चूसने की योजना बना रहे हैं। इसलिये अब पुनः देवरी में चौकी निर्माण की हर प्रकार से कोशिश चल रही है। हम सब गांव वालों ने मिलकर सरिस्का के क्षेत्र निदेशक, सहायक निदेशक को कई बार यह कहा है, कि अब हम जंगल बचा रहें हैं आपके लोग जब यहाँ रहते थे, जंगल बरबाद होता था। दुबारा चौकी बनवाएगें तो फिर जंगल नष्ट हो जायेंगे। इसी कारण देवरी में हम चौकी नहीं बनने देंगे। यदि आप चौकी बनाना ही चाहते हैं तो जहां जंगल आज भी कट रहे हैं तथा शिकार हो रहा है। (केमाला के जोहड़ पर रोज शिकारी आते हैं) वहां चौकी बनाओ लेकिन यह वन विभाग तो वन काटने वालों व शिकारियों को सहारा देता है तथा जो लागे जंगल बचाते हैं, उन्हें जंगल काटने के नाम पर फसाते हैं।

अब हमारे गांव में जंगल हरा-भरा दिखता है, वह जंगल विभाग की आंख की किरकरी बन गया है। क्योंकि यह जंगल जंगलात विभाग की बरबादी से हमने बचाया है। हम हाथ जोड़कर निवेदन करते हैं कि ये हमारे गांव में चौकी नहीं बनाये और यह जबरदस्ती बनायेगें तो हम बनने नहीं देगें हमारी मांग "जंगलात विभाग से जंगल बचाओं" यह बात मैं ही नहीं लिख रहा हूँ सारा गांव कह रहा है।

अब हमारे गांव में संघ की सहायता से ईंधन की बचत करने के लिए गोबर गैस संयंत्र बन रहे हैं, जिनमें दो तो चालू भी हो गए हैं। सौर ऊर्जा बिजली संयंत्र भी पिछले 9 साल से हमारे गांव में लगी हुई है। वह अब तक ठीक तरह से चल रही है, इसके प्रकाश में ही हमारे गांव की ग्राम सभा होती है। इसी में रात्रि शाला व संपूर्ण साक्षरता का कार्यक्रम चलता है। चिकित्सा सेवा के कार्य भी हमारे गांव में चल रहा है।

आज के दिन हमारे गांव में जो हालात बदलें हैं, ये जरूर हमारे गांव के संगठन व मेहनत से ही बदले हैं। लेकिन उनको बदलने के पीछे जरूर कोई अवतारी ताकत है जो दिखती नहीं और नहीं अपने को दिखने देती। अब ऐसा बदलाव हमारे गांव में ही नही आस-पास के सैंकड़ों गांवों में हो रहा है। हम सबको इस तरह के काम में एक दूसरे गांव के काम को देखकर शक्ति भी मिलती है, हमारे काम को देखने के लिए दूर-दूर के गांववासी आ रहे हैं। हमारे काम को देखकर अब रैणी, राजगढ़, बानसूर, उमरेण तहसील के लोग इसी तरह के कार्य कर रहे हैं। अब जरूर इस तरह के कामों से हमारे अन्य गांवों के दुःखों का भी हरण होगा। जरूर उन गांवों में कोई ऐसा ही अवतार पैदा होगा, जो सारे गांव का साझा दुःख दूर करके सुख व समृद्धि पैदा करेगा।

हमारे गांव में आज केवल अनाज के ही भंडार नहीं। गोबर की खाद का भी भंडार है। हम रसायनिक खाद या अंग्रेजी दवाई खेती में कांम नहीं लेते, अपना बीज तैयार करते हैं, इस वर्ष करीब 600 बीघा जमीन पर गेंहू की फसल पैदा हुई है। जिस पर पहले कभी कुछ नहीं हुआ पहले केवल थोड़ी घास होती थी। इस वर्ष यहां चारा-अनाज सब कुछ पैदा हो रहा है। हजारों वर्ष पहले बसे इस गांव में कभी ऐसी फसल नहीं हुई।

अब देवरी गांव वास्तव में देवों का वास हो गया है। यह अपने नाम को सार्थक कर रहा है। पहले हमें कभी समझ नहीं आया था कि हमारे गांव का नाम देवरी क्यों पड़ा अब समझ आया है। चारों तरफ सघन हरियाली, बाघ, बकरी तथा आदमी साथ-साथ इस भूमि पर रह रहे हैं। यह सब देव भूमि या तपों भूमि पर ही संभव है। इसलिए पुराने जमाने में पहले भी ऐसी ही यहां सुख समृद्धि कभी न कभी रही होगी तभी हमारे पुरखों ने इसे "देवरी" नाम दिया होगा। वही अब पुराने सुख समृद्धि के दिन आ रहे हैं।

सूरतगढ़ अन्य गांवों को पानी व प्रेरणा दे रहा है

प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहयोग से गांव के लोगों ने अपने सामलाती संसाधनों को बचाने का निश्चय किया है। पास के गांव भांवता में हुऐ तरुण भारत संघ के कार्यों से सूरतगढ़ के लोगों में भी अपने यहां इस प्रकार के कार्य करने की तीव्र इच्छा पैदा हुई। संघ की कार्य-प्रणाली के अनुसार लोगों ने सर्वप्रथम अपने गांव का एक मजबूत संगठन बनाया और सर्व सम्मति से चुनी गयी ग्राम सभा की महीने में एक या दो बार मीटिंग होने लगी। यह मीटिंग पूर्णिमा और आमावस्या के दिन होती। इस मीटिंग में गांव की भलाई और उद्धार सम्बन्धी विषयों पर चर्चा की जाती। सन् 1991 के अन्त में यहां का गंवाई संगठन इतना मजबूत हो गया कि उसमें गांव के सामलाती संसाधनों को बचाने हेतु ठोस निर्णय लिये गये। शराब उत्पादन और सेवन पर मजबूती से रोक लगाने के बाद जंगल को बचाने की प्रक्रिया शूरू हुई। जंगल बचाने हेतु कई नियम बनाये गये। इन गंवाई दस्तुरों में जंगल नष्ट करने वालों, जंगल में कुल्हाड़ी लेकर जाने वालों पर दण्ड का प्रावधान रखा गया। यहां तक की यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य को गीली लकड़ी काटते हुए देख लें और इसकी सूचना ग्राम सभा को न दें तो उस पर काटने वाले से दो गुना दण्ड किया जाने लगा। इस सब के साथ-साथ गांव में एक ग्राम कोष की भी स्थापना की गयी। इस ग्रामकोष में प्रत्येक परिवार से निश्चित की गयी राशि, अनाज और दण्ड में प्राप्त किया गया धन एकत्र होने से इसका स्वरूप धीरे-धीरे बढ़ने लगा।

समय के साथ-साथ जंगल तो पुनः बढ़ने लगे मगर पानी की विकट समस्या का कोई हल नहीं हुआ। इस भयंकर समस्या का समाधान खोजने का काम संघ के सहयोग से शुरू हुआ। संस्था के कार्यकर्ता नियमित रूप से ग्राम सभा की मीटिंग में जाते, गांव की समस्याओं पर हुई चर्चाओं में भाग लेते तथा अपने सुझाव भी लोगों के सामने रखते। सन् 1991 के आखरी महीनों में ही गांव में जल की समस्या के समाधान के लिए सामलाती बांध और जोहड़ों के निर्माण में संघ तीन-चौथाई और निजी कार्यों में आधा सहयोग देता रहा। सर्वप्रथम हजारी वाले बड़े बन्धे का कार्य लोगों की सोच-समझ और ज्ञान के अनुसार शुरू किया गया, और धीरे-धीरे भूरा बांध, काना वाला बांध, कबीरा वाला जोहड़ आदि छः बांधों और जोहड़ों का निर्माण कार्य चार वर्षों में पुरा हुआ।

भूमि सुधार हेतु विभिन्न परिवारों की लगभग चौबीस मेड़बन्दी बनाई गयी। गोचर विकास और वृक्षारोपण के साथ-साथ शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक चेतना के कार्य निरन्तर अबाध गति से चलते रहे। 1994 के अन्त तक लोगों की लग्न, मेहनत, आत्मविश्वास और संस्था के सहयोग के परिणास्वरूप गांव का कायाकल्प ही हो गया। गांव में होने वाली वर्षा का एक-एक बूंद पानी रोक लिया गया। जंगल फिर लहला (हरे-भरे) उठे। खेतों में उत्पादन चार से पांच गुना बढ़ गया, सभी कुएं जल से लबालब भर गये। पशुओं की संख्या बढ़ गयी, दूग्ध उत्पादन और लोगों की औसत आय में तेजी से वृद्धि हुई। रोजगार की तलाश में बाहर जाने वालों की संख्या में तेजी से गिरावट आयी। लोगों के अपने कुछ व्यवसाय जैसे - गलीचा बनाना, टोकरी बनाना, चमड़े का कार्य आदि भी शुरू हो गये। शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में भी अच्छा प्रभाव दिखाई दिया। यह प्रभाव जानने हेतू इस काम के शुरूआत से पहले ही अध्ययन शुरू किया था यह पांच वर्ष तक लगातार चलता रहा। अब इस अध्ययन का एक स्वतंत्र व्यक्ति के द्वारा विश्लेषण कर के उचित परिणाम बताये हैं।

आज इस गांव में जमीन की कीमत पांच गुणा बढ़ गयी है। लोगों में अपने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और विकास हेतु चेतना आ गयी है। गांव धीरे-धीरे स्वालम्बन की ओर बढ़ रहा है। भूली हुई सामलाती शैली को लोग पुनः अपना रहे हैं। यहां पिछले पांच सालों में कोई झगड़ा न्यायालय तक नहीं गया है। अपने विवाद लोग खुद निपटा लेते हैं। 1991 से शुरू हुआ विकास का क्रम 1995 में भी निरन्तर जारी है। लोगों में इतना अधिक आत्मविश्वास और उत्साह है, कि अपने विकास के रास्ते स्वयं खोजते हैं और उन पर चल कर सुख और समृद्धि की तरफ तेजी से बढ़ने लगे हैं। इसका आभास इस गांव की पहली हालात जानने से होगा।

यह गांव अरावली पहाड़ियों के बीच, राजस्थान के अलवर जिले की थानागाजी तहसील में बसा है। यहाँ की कुल आबादी 1250 तथा कुल क्षेत्रफल 590 हैक्टयर है। वास्तव में यह गांव सन् 1652 में आनन्द सिंह जी ने बसाया था। ये लोग

जयपुर की पहली राजधानी भानगढ़ के उजड़ने के बाद यहां आकर बसे थे। आनन्द सिंह ने अपने पुत्र सूरतसिंह के नाम पर इसे नये बसाये गये गांव का नाम 'सूरतगढ़' रखा था। जब यह गांव बसा तब तो यहां चारों तरफ आनन्द ही आनन्द था, सुख, समृद्धि और खुशहाली थी। महाराज ने पानी के लिए कई छोट-बड़े बांध, जोहड़ और अनेकों कुएं खुदवाये थे। वर्षा के जल की एक-एक बूंद को गांव की सीमा में रोकने के पूरे उपाये किये गये थे। सभी कुएं लबालब पानी से भरे रहते थें। जोहड़ों और बांधों में वर्ष भर पानी भरा रहता था। गांव के दक्षिण-पूर्व में स्थित कुंड़ों में से वर्ष भर पानी बहता रहता था। गांव वालों, पशुओं तथा खेती के लिए कभी भी पानी की कमी नहीं रहती थी।

गांव के चारों तरफ पहाड़ियों पर घना जंगल विद्यमान था। जंगल पर सभी वर्गों के लोगों का समान अधिकार था। लोग जंगल से सूखी लकड़ियां लेते मगर हरी लकड़ी कोई नहीं काटता था। जंगल की देखभाल सभी लोग मिलजुल कर करते थे। चारागाह गांव के पश्चिम और उत्तर में पड़ती थी, जिसमें खूब हरी घास पैदा होती थी। पशु संख्या बहुत थी, दूध, दही, घी की गांव में कोई कमी नहीं थी। सभी को दूध-उत्पाद खाने को काफी मिलते और लोग स्वस्थ, बलिष्ठ तथा मस्त रहते थे।

खेती की जमीन इतनी अधिक तो नहीं थी मगर गांव वालों का भरण-पोषण आसानी से हो जाता था। क्योंकि पानी और गोबर की खाद पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी। कोई दुखी या लाचार नहीं था। संक्षेप में कहा जाये तो सूरतगढ़ में चारों तरफ सुख और समृद्धि का साम्राज्य था।

समय के साथ-साथ प्रत्येक चीज बदलती है। परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है, जो उठता है वह गिरता भी है। धीरे-धीरे लोग अपनी सामलाती जीवन शैली को भूलने लगे और बीसवीं शताब्दी के मध्य तक गांव के हालात बहुत बिगड़ गये। इस शताब्दी के सातवें दशक के आते-आते तो हालात बद से बदतर हो गये थे। ये हालात अपने सामलाती संसाधनों का प्रबन्ध लोगों द्वारा ठीक प्रकार से न कर पाने के कारण हुई है। इससे इनके सभी साधन क्षीण और अनुत्पादक हो गये। बांधों और जोहड़ों में मिट्टी और गाद भर गई, फलतः उनमें पानी भरने लायक जगह न रही उनकी पाल टूट-टूट कर नष्ट हो गयी। इनमें वर्षा का पानी न रुकने से कुओं का जल स्तर कम होता चला गया। अन्ततः सूख गये। खेती की जमीन में मिट्टी कटाव इतना अधिक हुआ कि गांव की सारी जमीन अनुपजाऊ हो गयी। इसमें वर्षा के पानी के तेज बहाव के कारण बड़ी-बड़ी नालियाँ बन गयी। चारागाह में घास पैदा होनी बन्द हो गयी। पशुओं की संख्या और दूध उत्पादन क्षमता बहुत अधिक घट गयी। चारों तरफ की पहाड़ियों से जंगल नष्ट हो गए। सुख समृद्धि का स्थान दुख और भुखमरी ने ले लिया। लोग रोजगार की तलाश में गांव से बाहर बड़े शहरों और कस्बों में जाने लगे। आपसी कलह और झगड़े अधिक होने लगे। लोगों में नैतिकता

के स्थान पर स्वार्थवृत्ति बढ़ गयी। छोटे-छोटे काम के लिए आपस में झगड़ने लगे। आय कम हो गयी तथा स्वास्थ्य गिर गया। लोगों की अपने सामलाती जीवन शैली समाप्त हो गई। फलतः सामलाती संसाधनों के ह्रास और विनाश होने के फलस्वरूप दुखः दरिद्रता, भुखमरी, कलह चारों तरफ छा गया था। जिससे गांव वालों का वर्तमान और भविष्य अन्धकारमय हो गया।

रोजगार की तलाश में पलायन के साथ-साथ गांव में शराब की भट्टियां चलने लगी। भले ही यह अतिरिक्त आय के लिए सरकार की शह से लगायी गयी हो मगर इनसे गांव में नशावृत्ति तेजी से बढ़ी। महिला-पुरुष सभी शराब पीने लगे। अन्ततः पैशाचिक (दानवी) प्रवृत्तियां तेजी से फैलने लगी थी।

सुमेर सिंह कहते हैं "हमारे गांव की रीति-नीति बिगड़ गई थी, चारों तरफ घोर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता था। तरुण भारत संघ इसी दौरान हमारे बीच आया था इसने हमें प्रकाश की किरण दिखाई।"

नवें दशक के मध्य से गांव के पुर्ननिर्माण और पुर्नउद्धार का एक नया दौर शुरू हुआ। जिसका श्रेय तरुण भारत संघ से ज्यादा इसी गांव के लोगों को ही जाता है। जिन्होंने अपने गिरते गांव को खड़ा कर लिया है। भूखें, कंगले गांव में अनाज की कोठियां भर ली है। वर्षभर का खाने का अनाज इनके पास उपलब्ध होने लगा है। अपने पशुओं को भरपेट चारा उपलब्ध कराने तथा ईंधन के लिए सूखी लकड़ी प्राप्त करने के लिए नंगें पहाड़ों पर हरा-भरा-गहरा जंगल खड़ा कर लिया है। पशुओं को पीने के लिए वर्ष भर का जल प्राप्त करने हेतु जोहड़ बना लिए हैं। सिंचाई पूर्ति हेतु बांध बनाकर खेत के कुंए सजल कर लिये हैं। बच्चों को पढ़ाने का संकल्प, खैती में देशी बीज व जैविक खाद का ही उपयोग करने की चिन्ता करते हैं। बीमारी के लिए औषधालय तथा आने जाने हेतु रास्ते ठीक करने के साथ-साथ सामुहिक कीर्तन, भजन, गीत गाते हैं। इसके महिला समुह ने 'शराबबन्दी' करने की जो पहल की है उससे आसपास की महिलाओं ने सीख ली है।

रजनी शर्मा ने महिलाओं को संगठित करने हेतु बालिका शिक्षा से लेकर प्रौढ़ महिलाओं में चेतना पैदा करने का काम किया है। तभी यहां के बांध निर्माण में महिलाओं ने पहल की तथा ज्यादा से ज्यादा कार्य किये। यहां की महिलाओं की समझदारी से भी जंगल बचाये जा सके।

श्री सुमेर सिंह जी सदैव संघ के कार्यों में आगे रहे। इसीलिए इन्होंने अपने गांव को प्रेरणा देने का भी कार्य किया है। सूरज मीणा, कजोड़ मीणा, भगवान सहाय मीणा, हनुमान मीणा, जगदीश कीर, मातादीन कुम्हार तथा वासुदेव भट्ट ने जेठ की गहरी धूप में वर्षा व 'शाले' की ठन्ड से बचने की चिन्ता किये बिना काम करते रहे। नन्दू पारीक (मिठ्टनलाल), लालचन्द शर्मा, रामेश्वर, केदार प्रसाद, गणपत, कल्याण

सहाय महाजन, रामपाल, चेतराम भीमां, डालूराम, नारायण रैगर, सूवालाल, कजौड़, भगवान सहाय गूर्जर, गोपी नाई आदि सभी जाति के लोगों ने सूरतगढ़ की काया पलट की है। इस गांव से दूसरे गांव प्रेरणा ले रहे हैं। इस गांव ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया है। इससे संघ कार्यकर्ताओं में भी उत्साह बढ़ा है।

इस काम का आस-पास के गांवों में भी बहुत लाभ हुआ है। डूमोली, सांवतसर, खरडाटा, खाटाला, क्यारा, काबलीगढ़ गांव के कुंओं में पहले पानी नहीं था। अब ये सजल हो गये हैं। इस प्रकार यह कहा जा सकता है, कि सूरतगढ़ के जल संरक्षण कार्यों से दूसरे गांवों को भी पानी और प्रेरणा मिल रही है।

"दुहारमाला वासियों ने अपना हाथ जगन्नाथ कर दिखाया"

मूलचन्द कहते हैं "अब हम साल भर पहाड़ के ऊपर अपने दुहार माला गांव में ही बसे रहते हैं। वर्षभर की सभी जरूरतें पूरी करने के साथ-साथ पीने का पानी भी वर्षा से इकट्ठा कर लेते हैं। पहाड़ पर पानी रुकने के कारण आस-पास नमी से खूब घास-फूंस और हरियाली रहती है। जिससे पशुओं की पेट भर चाराई हो जाती है। दूध तो कई गुणा बढ़ गया है। यहां अब, जरूरत पूरी करने योग्य अनाज भी पैदा होने लगा है। ईंधन और पानी घर के पास ही उपलब्ध होने से महिलाओं का समय बचने लगा है। अब ये इस समय का उपयोग गांव के सामलाती कामों में करती हैं। लड़के-लड़कियों को पढ़ाने का काम भी यहां शुरू हो गया है। गांव में कोई लड़ाई-झगड़ा भी नहीं होता। कभी कुछ होता भी है तो गांव का संगठन आपस में मिल बैठकर सुलझा लेता है। हमारा कोई मुकदमा अदालत में नहीं है।"

यह 121 घांगल गुर्जर परिवारों की छः ढाणीयों में बसा गांव है। जो केवल चार माह ही गांव में टिक पाते थे। क्योंकि ऊपर पशुओं और आदमियों के लिए पीने का पानी नहीं रहता था तथा खाने के लिए अनाज भी पैदा नहीं होता था। गर्मियों में ढाक के पेड़ सूख जाते थे। धोंक के पत्तों से भी चारे की पूर्ति नहीं होती थी। चराई का घास दिवाली तक खत्म हो जाता था। जंगलात गार्ड डरा धमकाकर रुपये/घी जो भी मिले, ले जाते थे। चार माह में घी-दूध से जो कुछ बचत होती थी, उसे जंगलात वाले चाट लेते थे। हमारे पास तो बिमारी के लिए भी पैसे नहीं बचते थे। इन्होंने बहुत से सरकारी मुकदमें भी हमारे खिलाफ कर दिये थे। बच्चों को पढ़ाने की बात तो स्वप्न में भी हमें नहीं सूझती थी, क्योंकि आस-पास में दूर तक कोई स्कूल ही नहीं था। गांव में भी कोई पढ़ना-लिखना नहीं जानता था। हमारे गांव के आधे से ज्यादा लड़के कुंवारे रह जाते थे। कोई अपनी लड़की को हमारे गांव में

देना ही नहीं चाहता था। क्योंकि पानी-ईंधन का इन्तजाम करना ही बड़ी कठिन तपस्या थी फिर अनाज दूर से पहाड़ पर लाना बहुत मुश्किल काम था। बीमार को संभालने वाले तो केवल हीरामल, भृतहरि, भैंरो जी, देवनारायण जी और तैजा जी की झाड़फूंक व बुखार या पीलिया में जड़ी-बूटियाँ का ताबीज ही मिलता था।

हमारे मन में भगवान पर भरोसा व आस्था तो बहुत थी। इसलिए बिमारी में आत्मा की ऊर्जा ही सबसे बड़ी औषधी थी, लेकिन सरकार पर विश्वास और आस्था की कोई सम्भावना शेष नहीं रही थी। सरकार की बात शुरू करते ही लोग कहते "आज सरकार गरीबों को ध्यान नहीं रखती वह तो रैगर, बलाई, मीणा (अनुसूचित जाति, जनजाति) का ही ख्याल रखती है; हम जंगली, पहाड़ों में रहने वाले गरीब घांगल गुर्जर है; फिर हमारा नाम उनकी सूची में कहां होगा।"

छः वर्ष पूर्व इस गांव के नानूबाबा, रामचन्द्र गुर्जर, लालाराम, घनश्याम व हीरालाल संघ से अपने गांव में पानी का इन्तजाम करने की सलाह लेने आये। संघ ने सबसे पहले हमें संगठित होने की राय दी। संगठित होकर पहले स्वयं गांव में बैठकर विचार करें, क्या करें? कैसे करें? कौन करें? किसका कितना सहयोग हो आदि सवालों पर चर्चा करके कब करना है? तय करें। संघ के भाई साहब ने हमारे साथ श्रवण को भेज दिया। कन्हैया गुर्जर और श्रवण ने हमें संगठित करने हेतु पूरे गांव को तिबारी में इकट्ठा किया। पहले आपस में सबकी बोलचाल करायी। छोटी-मोटी झड़पों के बाद हम सब आपस में बात करने लग गये।

चार-छः बार गांव ने साथ बैठकर गांव की भलाई करने के लिए कुछ कानून-कायदे बनाये। इनका गांव ने अनुशासित होकर पालन किया। यदि किसी ने इनकी पालना नहीं की तो उसे प्रायश्चित कराने हेतु पूरा गांव (समाज) उस पर दबाव बनाने लगा। इस प्रकार गांव में एक नई ताकत का अहसास आदमी-औरत सब को हुआ तो हमने अपने गांव का वर्षा जल गांव में ही रोकने के लिए, टूटे हुए पुराने टांके की मरम्मत करना शुरू कर दिया। जोहड़ खोद कर तैयार कर दिये। गांव में जंगलात वालों को आने से रोकने के लिए सामाजिक बहिष्कार का औजार ही उस पर चलाया जो कामयाब हुआ। हां विभाग को लिखित व मौखिक रूप से सूचित जरूर कर दिया था। "अब आपको हमारे गांव में जंगल व जंगली जीवों की रक्षा करने हेतु आने की जरूरत नहीं है। हमने अपने जंगल व जंगली जीवों की सुरक्षा करने हेतु अपने गांव का कानून बना लिया है। हमारे कानून में गांव का जंगल एवं जंगली जीव बचाने के लिए अलग से वन विभाग की जरूरत नहीं है। हम ही अपने गांव के जंगली जीव बचायेंगें। कृपया करके हमारे जंगल में मत आना।" यह पत्र 1988 में दुहारमाला की तरफ से सरिस्का क्षेत्र निदेशक को लिखा गया था। इसके बाद भी एक-दो बार विभाग का गार्ड जब यहां आया तो हमने उससे बात ही नहीं की। वह यहां चक्कर खा कर चला गया। हमारे गांव के 9 व्यक्तियों के विरुद्ध जंगलात ने

जो झूठे मुकदमें किये थे वे खत्म हो गये। अब हमारा वन विभाग को कोई पैसा रिश्वत या अन्य तरीक से नहीं जाता है।

अब हमारे गांव का सबसे बुजुर्ग नानू बाबा कहता है "अब एक बार फिर 600 साल पहले बसे इस गांव के दिन बदल रहे हैं।" मूलचन्द गुर्जर ने कहा "हमारे पुरखे जब अजमेरे से आकर यहा बसे होंगे तो उस समय भी यहां आजकल की तरह साल भर खाने-पीने और रहने की सब जरूरत पूरी होती होगी।" घनश्याम ने कहा "जब हम संघ कार्यकर्ताओं से मिले थे तब हमें उनकी बातों पर विश्वास नहीं होता था। आज जो कुछ वह कहते हैं उस पर मुझे पूरा भरोसा है।" रामचन्द्र गुर्जर ने कहा "जब हमने जोहड़ में काम शुरू किया था तो नहीं लगता था कि साल भर पानी रूकने लायक यह जोहड़ बन जायेगा। लेकिन आज पानी से भरे जोहड़ और घने जंगल देखकर 70 साल पहले की याद आती है। अब मुझे शर्म आ रही है मैंने 'रहकामाला' के काम में बाधा पैदा कर दी थी। मुझे विश्वास ही नहीं था कि यह संघ हमारे लिए इतना पानी, चारा, अनाज सब पैदा करवा देगा। काम तो हमने ही किया लेकिन संघ ने गैला (रास्ता) बताया। अब जब कोई हमारा गांव देखने आता है तो ऐसा लगता है कि लोग हमारे किये से सीखना चाहते हैं। हमारे गांव का काम देखकर कई गांवों ने ऐसा ही काम शुरू कर दिया है।"

"यह दुहारमाला की कहानी गांववासियों की जुबानी है।"

उक्त पांच गांवों के उदाहरण देखने के बाद संघ के सहयोग से लोगों द्वारा बनाये गये जोहड़ों की यहाँ सूची देना भी हम सार्थक समझते हैं। संस्था के सहयोग एवम् श्रमदान द्वारा तैयार हुऐ काम की वर्तमान स्थिति एवम् मात्रा का सरकारी रेट के अनुसार लागत भी यहाँ दी जा रही है। जो इनका लाभ-खर्च समझने मे रूचि रखते हैं, हमें उनका अपने यहाँ स्वागत करके प्रसन्नता होगी। इसकी जानकारी देकर हमें बहुत अच्छा लगेगा। कृपया परिशिष्ट-1 देखें।

श्री राजेश शर्मा अनुभवी कृषि इंजीनियर ने जनवरी 95 से जुलाई 95 तक किये मूल्यांकन में जो काम की वास्तविक लागत सरकार की बी.एस.आर के मुताबिक आई है वही इस सूची में जोहड़ बंधों की लागत दर्शायी है। 1994-95 के कार्यों के सामने संस्था द्वारा किया गया भुगतान दर्शाया है।

इस सूची में दर्शाये गये बांध जोहड़ों में कुछ ऐसे कार्य भी हैं जिन्हें "काम के बदले अनाज योजना" से सम्पादित किया गया है। इनके खर्चे इस किताब में दिये गये आय-व्यय के विवरण में शामिल नहीं है, क्योंकि इसका लेखा-जोखा, मस्टरोल आदि दानदात्री संस्था ने ही रखे थे। लेकिन इन कार्यों का सम्पादन संघ के मार्ग-दर्शन से गांव के लोगों द्वारा ही किया गया है।

परिशिष्ट - 1

तरुण भारत संघ के सहयोग से लोगों द्वारा बनाये गये जोहड़ो का विवरण

क्र.सं.	जौहड़ का नाम एवं जोहड़ निमार्ण का वर्ष	गांव का नाम	केचमेंट क्षेत्र (हे०)	भराव क्षेत्र (हे०)	मिट्टी का कार्य/ चुनाई का कार्य (घनफुट)	एकत्रित पानी कि मात्रा (लीटर)	जौहड़ की वास्तविक लागत - सरकारी रेट के अनुसार
1	2	3	4	5	6	7	8
	1986						
1.	मेवालों का बांध	गोपालपुरा	200	8	450000	184×10^6	90,000
2.	चोतरे वाला जौहड़	गोपालपुरा	25	1	100000	13x106	20.000
3.	कडक्या वाला जौहड़	गोपालपुरा	80	3	50000	27×10^6	10.000
	1987						
4.	बावड़ी वाला बांध	गोपालपुरा	150	4	54000	28×10^6	10.800
5.	बलाई वाला बांध	गोपालपुरा	34	1	36000	6×10^6	7.200
6.	नया बांध	गोपालपुरा	170	4	90000	16×10^7	18,000
7.	गोरे वाला बांध	गोपालपुरा	150	4	170000	18×10^7	34.000
8.	बीसा वाला बांध	गोविन्दपुरा	175	4	150000	10×10^6	30.000
9.	तेलियों वाला बांध	किशोरी	450	8	203000	192×10^6	70.000
10.	मालियों वाला बांध	लाला भैया का गुवाडा	200	5.8	213400	116×10^6	42.680
11.	फकालों का बांध	गु.फकाल	40	2	50000	3×10^7	10.000
12.	बीचवाला बांध	बाछड़ी	210	6	150000	9×10^7	30.000
13.	जंगल वाला बांध	बाछड़ी	150	4	102000	98×10^6	20.400
14.	पीपल वाला जौहड़	बाछड़ी	30	1	40000	12×10^6	8.000
15.	बीजा की ढाह	काला लांका	400	18	210000	24×10^7	42.000
16.	पीपल वाला जौहड़	काला लांका	25	1	20000	6×10^6	4.000
17.	उडद वाला जौहड	काला लांका	20	1.3	21000	7×10^6	4.200
18.	पीपल वाला जौहड	डेरा	40	2.5	25000	12×10^6	5.000
19.	बलाई वाला जौहड	डेरा	25	1.5	18000	5×10^6	3.600
20.	राडी नीचे वाला जौहड	भींकमपुरा	15	2	17500	8×10^6	3.500

1	2	3	4	5	6	7	8
21.	अखाडे वाला जौहड	भीकमपुरा	10	0.5	20000	$5x10^6$	4,000
22.	राडा का जौहड	रायपुरा	12	1.5	35000	$7x10^6$	70,000
23.	गांव का जौहड	माल	15	1.4	42000	$8x10^6$	8,400
24.	मीणों वाली जौहडी	सुरतगढ़	17	1.5	31000	$5x10^6$	6.200
25.	कबीरावाला जौहड	सुरतगढ़	75	1.0	45000	$4x10^6$	9.000
26.	मीणा की रावा.जौहड	क्यारा	20	1.8	62000	$13x10^6$	12.400
27.	दौलतपुरा का जौहड	दौलतपुरा	50	2.6	85000	$23x10^6$	17,000
28.	पीपलवाला जौहड	बलुवास	25	2	74000	$12x10^6$	14.800
29.	ठाकुरवाला जौहड	पिपलाई	50	3	103000	$18x10^6$	20,600
30.	बावडी वाली जौहडी	रूपकाबास	12	1	45000	$4x10^6$	9,000
31.	कालोत का जौहड	गु.कालोत	15	0.8	64400	$5x10^6$	12,880
32.	तिराये वाली जौहडी	पिपलाई	25	1.2	102000	$7x10^6$	20,400
33.	सुन्दर जौहड	पिपलाई	10	0.5	84000	$6x10^6$	16.800
34.	सीरावाली जौहडी	गु.सीरा	12	0.5	31000	$5x10^6$	6.200
35.	सीती वाला जौहड	गु.सोती	15	2.5	92000	$15x10^6$	18.400
36.	जगन्नाथ वाला बांध 1988	जगन्नाथपुरा	40	3.4	96000	$22x10^6$	19.200
37.	चरीवाला बांध	हमीरपुर	25	2.8	71000	$17x10^6$	14,200
38.	झांकडा वाला बांध	कालेड	650	7.5	123500	$67x10^6$	46,700
39.	श्रवण वाला बांध	हमीरपुर	250	5.2	104000	$28x10^6$	20,800
40.	सरणा वाला बांध	सरकणा की ढाणी	150	3.5	84500	$20x10^6$	16.900
41.	नल का बांध	नल की ढाणी	75	3.7	87500	$21x10^6$	17.500
42.	बदरीवाला बांध	हमीरपुर	45	2.5	45000	$15x10^6$	9.000
43.	बेनाडा वाला बांध	बैनाडा	157	3.6	89000	$21x10^6$	17.800
44.	ऊपरवाला बांध	देव का देवरा	125	3.7	90500	$22x10^6$	18.100
45.	नीचे वाला बांध	देव का देवरा	78	3	71500	$14x10^6$	14.300
46.	मन्दिर वाला जौहड	देव का देवरा	10	0.75	21500	$5x10^6$	4.300
47.	जंगल वाला बांध	नटाटा	150	4.8	102500	$28x10^6$	20.500
48.	रास्तेवाला बांध	कालेड	18	1.75	44500	$11x10^6$	8.900
49.	गुजरान बांध	जैतपुर गु.	400	8	157000	$72x10^6$	57.800
50.	कालेड बांध	कालेड	350	6	132000	$54x10^6$	26.400

(iii)

1	2	3	4	5	6	7	8
51.	बलाई वाली जौहडी	कालेड	40	1.8	41000	$12x10^6$	8,200
52.	नटाटा रास्ते का जौहर	कालेड	12	1	31500	$5x10^6$	6.300
53.	काल्या वाली जौहडी	गली का गुवाडा	15	1.5	41000	$9x10^6$	8,200
54.	अंगारी वाली जौहडी	अंगारी	40	3.5	74000	$25x10^6$	14,800
55.	जोगी वाली जौहडी	गु.जोगी	30	2.5	62700	$14x10^6$	12,540
56.	जोगी वाला बांध	ढाणी जोगी	75	3.0	10500	$27x10^6$	21.000
57.	गु.वाला जौहड	समरा	25	2	75800	$15x10^6$	15,160
58.	खेडा वाला जौहड	समरा	30	2	84000	$16x10^6$	16,800
59.	तिबारे वाली जौहडी	हमीरपुर	12	1	25800	$5x10^6$	5,160
60.	करमाली वाली जौहडी	पिपलाई	15	1	32000	$6x10^6$	6,400
	1988						
61.	बलाई वाला जौहड	लोठावास	125	3.5	77500	$31x10^6$	15,500
62.	नटाटा का जौहड	नटाटा	20	1	35000	$7x10^6$	7.000
63.	भाँवता का जौहड	भाँवता	25	1	58000	$8x10^6$	11,600
64.	कोल्याला का जौहड	कोल्याला	10	0.5	37000	$5x10^6$	7,400
65.	भूरास वाली जौहडी	भूरियावास	12	0.5	41000	$7x10^6$	8,200
66.	नांगल वाला जौहड	नांगल	15	1	51000	$12x10^6$	10,200
67.	चौकीवाला जौहड	चोकीवाला	25	1	63500	$10x10^6$	12,700
68.	साडया का जौहडा	साड़या समरा	20	0.8	47500	$7x10^6$	9,500
69.	गूगली का जौहड	गु. गूगली	25	1	51400	$8x10^6$	10,280
70.	रामकिशन वाली मेडबंदी	बाछडी	10	1	41700	$3x10^6$	8,340
71.	धानक्या वाला बांध	माण्डलवास	250	3	211500	$27x10^6$	42,300
72.	सरसा का बांध	माण्डलवास	150	2	185400	$19x10^6$	37.080
73.	फूटा बांध	राडा	90	3	210000	$25x10^6$	42.000
74.	सुराना जौहड	राजारेमांडलवास	30	1	154000	$11x10^6$	30,800
75.	लाम्बा वाली जौहडी	माण्डलवास	40	1.2	107000	$9x10^6$	21,400
76.	बलाई वाली जौहडी	मथुरावट	45	1	96700	$8x10^6$	19.340
77.	तरुण तलैया	भीकमपुरा	8	0.5	42500	$2x10^6$	8,500
78.	काला खेत वाला बांध	देवरी गुवाडा	600	3	154200	$27x10^6$	61,500
	1989						
79.	कांसला का चेकडेम	कांसला	135	7.5	71500	$13x10^6$	32,500

1	2	3	4	5	6	7	8
80.	राडा वाला बांध	राडा	45	2.2	56000	$5x10^6$	14.000
81.	मथुरावट बांध	मथुरावट	125	2.5	83500	$23x10^6$	20.875
82.	लोसल वाला बांध	लोसल गुजरान	55	3	145000	$3x10^6$	57.750
83.	घाट तले वाला बांध	कुण्डल्या	20	2	64000	$18x10^6$	18.375
84.	पीपल तले वाला बांध	कुण्डल्या	18	2	58000	$16x10^6$	17.087
85.	छोटी जौहडी	कुण्डल्या	12	1	27100	$7x10^6$	7.588
86.	रास्ते का जोहड	लोसल ब्राह्मण	5	1.2	15000	$6x10^6$	4.200
87.	मीणों वाली जौहडी	देव का देवरा	17	1.5	37600	$8x10^6$	10528
88.	नायलावाला जौहड	नायला	15	1	31500	$5x10^6$	8.820
89.	उमरीतरफ वाला जौहड	देवरी	25	1	44500	$10x10^6$	12.460
90.	बांका वाला जौहड	बांकाला	20	1	37000	$9x10^6$	10.368
91.	पहाड वाला जौहड	बांकाला	15	1	42000	$9x10^6$	11.760
92.	फूटेबांध तले की जौहडी	इन्दोक	10	0.75	39000	$7x10^6$	10.920
93.	गुवाडा वाला जौहड	देवरी गुवाडा	18	0.75	27000	$6x10^6$	7.560
94.	पहाड़ वाली जौहड़ी	देवरी गुवाड़ा	15	1	21000	$5x10^6$	5.880
95.	चिडांवतो गु. वाली जौहड़ी	इन्दोक	25	1.5	47500	$11x10^6$	13.300
96.	कन्हैयावाली जौहड़ी	राडी मान्यला	20	2	38500	$10x10^6$	10.780
97.	मंगला वाली जौहड़ी	जंगलमाला	14	1	31000	$8x10^6$	8.680
98.	तोलास वाली जौहड़ी	तोलास	25	1	20000	$5x10^6$	5.600
99.	गुजरो वाली जौहड़ी	तोलास	20	1.2	20500	$5x10^6$	5.740
100.	नाडूवाली जौहड़ी	नाडू	22	0.80	41500	$8x10^6$	11.620
101.	दबकल वाली जौहड़ी	दबकन	26	0.85	39500	$8x10^6$	11.060
102.	मान्या वाली जौहड़ी	मान्यास	15	1	21600	$5x10^6$	6.048
103.	गुसाई वाली जौहड़ी	बलुवास	12	1	15000	$9x10^6$	4.200
104.	गाडाल्या जौहड़	राडा	15	1.5	17000	$12x10^6$	4.760
105.	जौहडी माला	क्रासका	35	3	36500	$18x10^6$	10.220
106.	गुवाडे वाली जौहडी	लोसल गु.	5	2	21500	$13x10^6$	6.020
107.	गांव ऊपर का जौहड़	क्यारा	8	2	14000	$12x10^6$	3.920
108.	कोल्याला वाला बांध	कोल्याला	90	4	20000	$36x10^6$	5.600
109.	बाँडी जौहड़ी	भावँता	6	1.5	12000	$9x10^6$	3.360
110.	बला गोवर्धनपुरा	राडा	5	1	20000	$8x10^6$	5.600

(v)

1	2	3	4	5	6	7	8
111.	पीपलवाली जौहड़ी	बांकावाला	6	1	29000	$7x10^6$	8.120
112.	तिबारी वाली जौहड़ी	माण्डलवास	8	1	21000	$8x10^6$	5.880
113.	खान्यावाली जौहडी	कोल्याला	5	1	23000	$5x10^6$	6.440
114.	छोयावाली जौहडी	भाँवता	15	2	15500	$10x10^6$	4.340
115.	खारला वाला जौहड़	नांगल	20	1	25000	$5x10^6$	7.000
116.	बाजीवाला जौहड़	बीजावाला	18	1.2	31000	$7x10^6$	8.680
117.	छोटी जौहड़ी	लोसल ब्राहम्ण	7	0.75	15000	$6x10^6$	4.200
118.	पहाड़ नीचे का बांध	लोसल गुजरान	40	2	134000	$21x10^6$	37.520
	1990						
119.	गुवाडा वाला जौहड़	लोसल गुजरान	25	1.8	73000	$18x10^6$	20.440
120.	बीचवाला बांध	काला लांका	50	5	127500	$45x10^6$	35.700
121.	बान्दी जौहड़ी	कुण्डल्या	30	2	55000	$18x10^6$	15.400
122.	वड़ी जौहड़ी	भावँता	20	1	52000	$7x10^6$	14.560
123.	बदरीवाला बांध	गोपालपुरा	150	2	65000	$16x10^6$	18.200
124.	आश्रम वाली जौहड़ी	भीकमपुरा	8	0.5	27000	$6x10^6$	7.560
125.	देवरी वाली जौहड़ी	देवरी	10	0.5	415000	$8x10^6$	11.620
126.	कुमावत वाला बांध	लापोड़िया	15	0.5	51000	$9x10^6$	14.260
127.	बलाई वाला चेकडेम	धान्दोली	35	1.5	105000	$15x10^6$	29.400
128.	बड़ा जौहड़	लापोड़िया	40	3.0	124500	$32x10^6$	34.860
129.	राडा का जौहड़	राड़ा	12	1	54500	$11x10^6$	15.260
130.	कांसला का बांध	कांसला	10	0.5	47000	$8x10^6$	13.160
131.	शैतान वाला बांध	नांगलबानी	35	2.5	78700	$24x10^6$	22.036
132.	गंगे वाली जौहड़ी	कावलीगढ़	15	2	51000	$12x10^6$	14.280
133.	भूरीयावास भाँवता बांध	भूरीयावास	30	2	49000	$10x10^6$	13.720
134.	कुण्ड वाला जौहड़	कुण्ड	10	1	32000	$7x10^6$	8.960
135.	डाबली वाला जौहड़	डाबली	40	1	41.500	$8x10^6$	11.620
136.	बड़ा जौहड़	पुन्दरा	20	1	42000	$9x10^6$	11.200
137.	छोटा जौहड़	पुन्दरा	15	1	22500	$6x10^6$	6.300
138.	गढीवाला जौहड़	गढ़ी	15	1	43000	$8x10^6$	12.040
139.	बैठकावाला जौहड	लोसलगुजरान	15	1	32000	$10x10^6$	8.960
	1991						
140.	ग्वाडा वाला जौहड़	लोसगुजरान	10	0.8	28000	$7x10^6$	7.840

1	2	3	4	5	6	7	8
141.	श्यामाला जौहड़	डाण्डा (कोचर)	18	1	41000	11×10^6	11,480
142.	कोचर वाला जौहड़	डूंगरपट्टी कोचर	15	1	43000	10×10^6	12,040
143.	सुरखावाला जौहड़	डूंगरपट्टी कोचर	20	1	38000	8×10^6	10,640
144.	पीली तराईवाला जौहड़	खाल	18	0.9	44000	7×10^6	12,320
145.	खातोलाई वाला जौहड़	खातोलाई	16	1.1	31000	6×10^6	8,680
146.	अमावरा का जौहड़	अमावरा	24	1	45000	8×10^6	12,600
147.	चतारा वाला बांध	लोसल	65	1.5	51000	12×10^6	14,280
148.	सड़क तले का एनीकट	नांगलबानी	50	1.3	67500	15×10^6	43,200
149.	रघुवीर वाला बांध	नांगलबानी	20	1	51000	11×10^6	14,280
150.	मीणोवाला बांध	नांगलबानी	24	1	59000	12×10^6	16,520
151.	कांकड़ वाला बांध	गुवाड़ा कांकड़	28	1	47000	9×10^6	13,160
152.	दोड़ा वाली जौहड़ी	कौल्याला	25	2	54000	13×10^6	15,120
153.	खाया वाली जौहड़ी	कौल्याला	10	0.5	23000	4×10^6	6,640
154.	स्कूलवाली जौहड़ी	भूरीयावास	15	0.5	27000	6×10^6	7,560
155.	सांकड़ा वाला बांध	भांवता	180	2	15400	14×10^6	1,88,160
156.	भरता वाली जौहड़ी	भूरीयावास	50	2	61000	13×10^6	17,080
157.	खाटाला वाली जौहड़ी	डूमोली	40	1.5	49000	14×10^6	13,720
158.	लालपुरा वाला बांध	लालपुरा	150	2.5	78000	23×10^6	21,840
159.	कुण्डा वाला बांध	कुण्ड	180	3	95000	26×10^6	26,600
160.	नवा कुँआवाला बांध	मांड़लवास	150	2	93000	21×10^6	26,040
161.	मोटा वाली जौहड़ी	पैडल्या	70	1.5	69000	15×10^6	19,320
162.	पीपल वाली जौहड़ी	पैडल्या	40	1.5	57000	14×10^6	15,960
163.	झुग्गीवाली जौहड़ी	पैडल्या	35	1.5	50000	13×10^6	14,000
164.	झाक्डया वाली जौहड़ी	झांकड़ी	35	1	48000	10×10^6	13,440
165.	वाली की जौहड़ी	वाली की ढाणी	30	1	39000	7×10^6	10,920
166.	कबीरावाला बांध	सूरतगढ़	100	2	226000	24×10^6	
167.	कीरोवाला एनीकट	सूरतगढ़	150	1.75	60800		
168.	हजारीवाला बड़ा बांध	सूरतगढ़	1500	17	5800		
169.	रावण नदीवाला एनीकट	सूरतगढ़	400	3.5	1200		
170.	मातादीन वाला बांध	सूरतगढ़	250	2	6100		
171.	जाडखावाला	जगन्नाथ	60	2	74000	12×10^6	14,800

1	2	3	4	5	6	7	8
172.	जाडखावाला	जगन्नाथ	20	1.5	29000	$7x10^6$	8,120
173.	जोबनाली का बांध	चावकावास	150	5.5	155000	$55x10^6$	43,400
	1992						
174.	सेगराडी का जौहड़	चावकावास	50	2	72000	$21x10^6$	20,160
175.	राडी का जौहड	चावकावास	60	2	67000	$22x10^6$	18,760
176.	राजोरवाला जौहड़	राजौर	120	2	74000	$23x10^6$	20,720
177.	माला वाली जौहड़ी	माला	28	1	20500	$11x10^6$	5,740
178.	उदयनाथ की जौहड़ी	टोड़ी जोधावास	65	2	24000	$14x10^6$	6,720
179.	सूरखाँ का जौहड़	कोचर	90	2	57500	$19x10^6$	14,420
180.	बोलीवाला जौहड़	अमावरा	105	3	84000	$28x10^6$	23,520
181.	नदी का बांध	किशोरी	340	8	170200	$75x10^6$	1,27,880
182.	नदी का बांध	कावलीगढ़	250	5	135000	$45x10^6$	37,800
183.	हजारी वाला जौहड़	सूरतगढ़	70	2	72000	$18x10^6$	20,160
184.	कालावाला जौहड़	सूरतगढ़	65	2	61000	$16x10^6$	17,080
185.	कजोड़मीणा वाला जौहड़	सूरतगढ़	25	1	32000	$8x10^6$	8,960
186.	हनुमानमीणा वाला जौहड़	सूरतगढ़	20	1	35000	$9x10^6$	9,800
187.	काबलीगढ़ की तरफ जंगल वाला बांध	सूरतगढ़	18	1	39000	$7x10^6$	10,920
188.	माध्यालाबांध	सूरतगढ़	80	2.8	89000	$28x10^6$	24,920
189.	रावण की नदीवाला बांध	सूरतगढ़	400	3.5	10200	$30x10^6$	81,600
190.	अरा बांध	सूरतगढ़	105	2	65000	20x106	18,200
191.	सूरजावाला बांध	देवरी	400	10	125000	$124x10^6$	35,000
192.	राड़ा नीचे वाला बांध	गढबस्सी	75	3	6000	$21x10^6$	48,000
193.	गोपालवाला बांध	गढ़बस्सी	100	4	28500	$31x10^6$	69,740
194.	रइका वाला जौहड	रइका	20	2.5	71000	$24x10^6$	23,430
	1993						
195.	चौधराना की जौहड़ी	गढ़	25	1.5	50500	$13x10^6$	17,675
196.	बनवारी सेन का बांध	गढ़	15	1	28000	$9x10^6$	9,800
197.	नाथ जी का बांध	गढ़	18	1	24000	$10x10^6$	8400
198.	बाग वाला बांध	गढ़	20	1	31000	$11x10^6$	10850
199.	सन्नाटावाली जौहड़ी	गढ़	24	1	29000	$9x10^6$	10,150
200.	पक्कीपाल वाला बांध	दबकन	6.5	2.5	41750	$14x10^6$	34,175

1	2	3	4	5	6	7	8
201.	राधेश्याम का जौहड़	नांदू	2.8	1.5	51000	$13x10^6$	17,850
202.	खाडाला की जौहड़ी	मुरलीपुरा	20	1	37000	$9x10^6$	12,950
203.	खारलीवाला एनीकट	मुरलीपुरा	120	3	34500	$28x10^6$	42.350
204.	चतारा वाला बांध	लोसल गु.	70	1.5	70500	$14x10^6$	24.675
205.	कोलीयो वाली जौहड़ी	लोसल ब्रा.	15	1	31000	$8x10^6$	10.850
206.	गोरवाली जौहड़ी	लोसल ब्रा.	18	1	35000	$9x10^6$	12.250
207.	भैरूजी वाला जौहड़	लोसल ब्रा.	55	1.5	41000	13x106	14,350
208.	काला भाटा जौहड़	लोसल ब्रा.	40	1.5	39000	$14x10^6$	13.650
209.	किशनलाल का बांध	लोसल ब्रा.	85	2.5	79000	$24x10^6$	27.650
210.	कैलाश वाला जौहड़	लोसल ब्रा.	35	2	71000	$20x10^6$	24.850
211.	धार वाला बांध	घेवर	150	4	125000	$48x10^6$	43.750
212.	धार वाला की जौहड़ी	घेवर	25	1.5	45000	$12x10^6$	15.750
213.	बड़वाला बांध	घेवर	200	5	159000	$62x10^6$	55.650
214.	बड़वाला की जौहड़ी	घेवर	28	2	40000	$18x10^6$	14.000
215.	ढहाणी वाला बांध	राजडोली	95	3	65000	$28x10^6$	22.750
216.	मदन पटेल का बांध	लाड्या का गु.	120	3	48000	$29x10^6$	45.750
217.	श्रीकिशन की जौहड़ी	लाड्या का गु.	15	1	29000	$7x10^6$	10.150
218.	गोरवाली जौहड़ी	लाड्या का गु.	25	1	25000	$6x10^6$	8.750
219.	राजोरिया की जौहड़ी	धोलाराडा	20	1	31000	$8x10^6$	10.850
220.	नीमड़ी वाला जौहड़	धोलाराडा	40	1	35000	$9x10^6$	12.250
221.	रामेश्वर वाली जौहड़ी	धोलारांडा	12	1	20000	$5x10^6$	7.000
222.	श्रवण वाला बांध	जयसिंहपुरा	150	4	75800	$48x10^6$	72.850
223.	गोरवाली जौहड़ी	उपरला गु. (खो)	30	2	35000	$16x10^6$	12.250
224.	हनुमानजी वाला जौहड़	खोह	40	2	40000	$18x10^6$	14.000
225.	रामस्वरूप का बांध	सुकाला	42	2	65000	$19x10^6$	22.750
226.	रामस्वरूप की जौहड़ी	सुकाला	18	1	25000	$7x10^6$	8.750
227.	सुकारवाला जौहड़	सुकाला	20	1	27000	$8x10^6$	9.450
228.	गोरवाली जौहड़ी	सुकाला	25	1	17000	$5x10^6$	5.950
229.	जगदीशवाला एनीकट	पालपुर	40	2	24000	$18x10^6$	27.700
230.	धोलीखान वाली जौहड़ी	पालपुर	15	1	31000	$8x10^6$	10.850
231.	रामस्वरूप वाला बांध	तिलवाड़ी	120	4	125000	$41x10^6$	43.750
232.	प्रभुवाली जोहड़ी	तिलवाड़ी	40	2	78000	$22x10^6$	27.300

1	2	3	4	5	6	7	8
233.	रामकुमार वाली जौहड़ी	तिलवाड़ी	35	2	69000	$20x10^6$	24,150
234.	छोटेलाल वाला बांध	तिलवाड़ी	20	1	31750	$8x10^6$	18,350
235.	तिलवाडी का जौहड़	तिलवाड़ी	125	2	45000	$20x10^6$	15,750
236.	बेरली का जौहड़	बेरली	20	1	47000	$9x10^6$	16,450
237.	गोरवाली जौहड़ी	रामपुर ककराली	120	2	44000	$16x10^6$	15,400
238.	मोटा वाली जौहड़ी	रामपुरा ककराली	30	1	38000	$7x10^6$	13,300
239.	छींडी वाला बांध	रामपुरा ककराली	70	2	45000	$14x10^6$	15,750
240.	दाता वाला एनीकट	रामपुरा क.	105	3	69000	$28x10^6$	43,450
241.	लाकांश वाला बांध	लाकांश	70	3	65500	$27x10^6$	38,900
242.	नांगल चन्देल का बांध	नांगल चन्देल	250	4	139900	$42x10^6$	1,82,000
243.	गुवाना वाला बांध	बल्देवगढ़	30	1.5	45000	$13x10^6$	15,750
244.	बधूड़ी वाला बांध	बलदेवगढ़	50	2	64000	$18x10^6$	22,400
245.	बलंदा वाला जौहड़	राजौर	20	1	42000	$8x10^6$	14,700
246.	प्रभु वाला एनीकट	सांवर	25	1.5	40000	$12x10^6$	33,300
247.	तोलास वाली जौहड़ी	तोलास	20	1	47000	$7x10^6$	16,450
248.	गुजरो की जौहड़ी	तोलास	25	1	39000	$6x10^6$	13,650
249.	गरवाजी का जौहड़	तोलास	30	1.2	37000	$6x10^6$	12,950
250.	धोंक वाला जौहड़	रहकामाला	45	3	73000	$24x10^6$	25,500
251.	माला का जौहड़	रहकामाला	30	2	63000	$20x10^6$	22,050
252.	जाट वाला जौहड़	रहकामाला	20	1	41000	$9x10^6$	14,350
253.	बैरास माला का जौहड़	रहकामाला	25	2	54000	$21x10^6$	18,900
254.	पीला खेत का जौहड़	रहकामाला	40	2	51000	$20x10^6$	17,850
255.	बोदू वाला जौहड़	रहकामाला	35	2	47000	$18x10^6$	16.450
256.	दडगस वाला जौहड़	दुहारमाला	45	2	49000	$17x10^6$	17,150
257.	टोटी वाला जौहड़	दुहारमाला	25	1	45000	$9x10^6$	15,750
258.	दादा वाला जौहड़	दुहारमाला	20	1	42000	$8x10^6$	14,700
259.	टांका	दुहारमाला	40	0.5	2200	$2x10^6$	22,000
260.	जयराम का एनीकट	दुहारमाला	60	2	42500	$11x10^6$	29,350
261.	घाटी वाला जौहड़	दुहारमाला	28	1	32000	$7x10^6$	11,200
262.	बड़ी वाला जौहड़	दुहारमाला	20	1	28000	$6x10^6$	9,800
263.	मुना वाली का बांध	रामपुरा	25	1	34000	$8x10^6$	11,900
264.	बिरदू का मेढ़बन्दी कार्य	मांडलवास	10	2	24000	$6x10^6$	8,400

1	2	3	4	5	6	7	8
265.	रेवड़ वाली जौहड़ी	भीकमपुरा	15	1	27000	$7x10^6$	9,450
266.	बोहरावाला बांध	किशोरी	940	5	87300	$48x10^6$	52.750
267.	मेढबन्दी कार्य	डेरा	5	1	12000	$5x10^6$	4,200
268.	रामपाल वाला बांध	सूरतगढ़	30	1	45000	$4x10^6$	15,750
269.	जंगल वाला बांध	सूरतगढ़	35	1.5	50000	$11x10^6$	17,500
270.	पटेल वाला एनीकट	सूरतगढ़	30	1	43000	$8x10^6$	15.050
271.	काना वाली जौहड़ी	सूरतगढ़	15	0.5	30500	$4x10^6$	10,675
272.	भूरा बांध	सूरतगढ़	120	3	85000	$25x10^6$	29.750
273.	लूल्याला बांध	सूरतगढ़	50	2	61000	$22x10^6$	21.350
274.	गंगाराम वाली जौहड़ी	सूरतगढ़	15	1	21000	$7x10^6$	7.350
275.	मेढबन्दी (सोन्याराम)	सूरतगढ़	3	1	24000	$8x10^6$	8,400
276.	मेढबन्दी लालचन्द जी	सूरतगढ़	13	1	21000	$4x10^6$	7.350
277.	मेढबन्दी रामेश्वर जी	सूरतगढ़	7	1	23000	$5x10^6$	8,050
278.	मेढबन्दी वासुदेव जी	सूरतगढ़	5	1	24000	$4x10^6$	8.400
279.	मेढबन्दी मांगीलाल गुर्जर	सूरतगढ़	8	1	19000	$3x10^6$	6.650
280.	मेढबन्दी महादेव गुर्जर	सूरतगढ़	10	1	20000	$4x10^6$	7,000
281.	मेढबन्दी जगदीश कीर	सूरतगढ़	12	1	25000	$4x10^6$	8,750
282.	मेंढबन्दी चन्दा रैगर	सूरतगढ़	9	1	27000	$5x10^6$	9,450
283.	मेढबन्दी मामराज मीणा	सूरतगढ़	7	0.5	17000	$2x10^6$	5.950
284.	मेढबन्दी नाथू कुम्हार	सूरतगढ़	4	0.5	19000	$2x10^6$	6,650
285.	मेढबन्दी भागीरथ	सूरतगढ़	3	0.5	16000	$1.5x10^6$	5,600
286.	मेढबन्दी रूडी धोबिन	सूरतगढ़	5	0.5	14000	$2x10^6$	4,900
287.	मेढबन्दी कालू रेगर	सूरतगढ़	3	0.5	17500	$2x10^6$	6,125
288.	मेढबन्दी बद्री नाई	सूरतगढ़	2	0.5	16000	$2x10^6$	5.600
289.	मेढबन्दी मूलचंद रेगर	सूरतगढ़	4	0.5	18000	$3x10^6$	6.300
290.	मेढबन्दी रेगर	सूरतगढ़	3	0.5	13000	$2x10^6$	4.450
291.	मेढबन्दी रेगर	सूरतगढ़	4	0.5	14000	$2x10^6$	4,900
292.	स्टोनबेरीयर नं. 1 (काना वाले नाले पर)	सूरतगढ़	-	-	300	-	900
293.	स्टोनबेरीयर नं. 2	सूरतगढ़	-	-	290	-	870
294.	स्टोनबेरीयर नं. 3	सूरतगढ़	-	-	320	-	960
295.	स्टोनबेरीयर नं. 4	सूरतगढ़	-	-	350	-	1.050

1	2	3	4	5	6	7	8
296.	स्टोनबेरीयर नं. 5	सूरतगढ़	-	-	240	-	720
297.	स्टोनबेरीयर नं. 6	सूरतगढ़	-	-	410	-	1.230
298.	स्टोनबेरीयर नं. 7	सूरतगढ़	-	-	420	-	1.260
299.	स्टोनबेरीयर नं. 8	सूरतगढ़	-	-	450	-	1.350
300.	खारली वाला बांध	सूरतगढ़	45	2	43000	18x10⁶	15.050
301.	गांगेवाली जौहड़ी	काबलीगढ़	15	1.5	64000	16x10⁶	22.400
302.	भोरेलाल कोली का बांध	काबलीगढ़	20	1	38000	8x10⁶	13,300
303.	नवा बांध	काबलीगढ़	25	2	52000	16x10⁶	18,200
304.	पीपल वाली जौहड़ी	बिसूण्या	15	1	41000	8x10⁶	14,350
305.	तेल्याला बांध	जयसिंहपुरा	40	1	94000	14x10⁶	32,900
306.	जगदीश पटेल का बांध	जयसिंहपुरा	25	1	54000	9x10⁶	18,900
307.	वैधजी का बांध	जैतपुर (सा.)	105	2.5	67500	25x10⁶	47.750
308.	काल्यावाली जौहड़ी	ग्वाड़ा गूगली	20	1	25000	7x10⁶	8.750
309.	गजीकी का जौहड़	गजीकी	15	1	45000	8x10⁶	15,750
310.	भैरूजी का जौहड़	भोपा की ढाणी	18	1	32000	9x10⁶	11,200
311.	गाँव की तलाई	राजी गु.	15	1	31000	9x10⁶	10,850
312.	पचवीर वाला जौहड़	हार का गु.	20	1	45000	10x10⁶	15,750
313.	ढांचोलिया वाला जौहड़	ढांचोलिया गु.	25	1	37000	9x10⁶	12,950
314.	भूला की जौहड़ी	भूला का गु.	18	1	47,500	11x10⁶	16,625
315.	सोती का बांध	सोती का गु.	80	3	67000	28x10⁶	42,750
316.	छतरी वाली जौहड़ी	हार का गु.	10	1	23000	6x10⁶	8,050
317.	गु.राडी की जौहड़ी	राडी का गु.	15	1	27000	7x10⁶	9.450
318.	साधूवाला जौहड़	सीली बावड़ी	18	1	37000	9x10⁶	12,950
319.	तेजाजी का जौहड़	सीली बावड़ी	30	2	48000	10x10⁶	16.800
320.	गोड़ाला बांध	सीली बावड़ी	35	2	49000	10x10⁶	17.150
321.	भोमियावाला बांध	सीली बावड़ी	40	2	54000	11x10⁶	18.900
322.	श्रीराम वाला बांध	सीली बावड़ी	7	1	43000	8x10⁶	15,050
323.	कुआ ऊपर वाला बांध	सीली बावड़ी	15	1	47500	9x10⁶	16,625
324.	कांकड़ वाली जौहड़ी	गु. कांकड़	10	0.75	32000	8x10⁶	11.200
325.	कालेका की जौहड़ी	समरा	15	1	41000	11x10⁶	14.350
326.	मूलचंद का बांध	राज्याली	25	1	41500	8x10⁶	14,525

1	2	3	4	5	6	7	8
327.	सफाली का जौहड़	कालेड	35	1	38500	$11x10^6$	13,475
328.	मालियों का जौहड़	कालेड	60	1.2	61000	$13x10^6$	21.350
329.	डण्ड का जौहड़	कालेड	65	1.5	54000	$18x10^6$	18.900
330.	भोडाली जौहड़ी	कालेड	20	1	31000	$10x10^6$	10.850
331.	श्रीनारायण का बांध	नटाटा	25	2	64000	$21x10^6$	22.400
332.	कडियाला की जौहड़ी	नल का गुवाडा	20	1	28000	$11x10^6$	9.800
333.	काली तलाई	नल का गुवाडा	25	1	31000	$12x10^6$	10.850
334.	काल्याका की जौहड़ी	काल्याका	15	0.5	27000	$7x10^6$	9.450
335.	रींझ वाली जौहडी	तेल्याला	17	0.5	29000	$6x10^6$	10.150
336.	गोकुल का एनीकट	ग्यारसा	30	1	16800	$12x10^6$	23.250
337.	रामफूल का बांध	देव का देवरा	52	2	63000	$19x10^6$	22.050
338.	रामकिशन का बांध	देव का देवरा	75	3	71000	$29x10^6$	24.850
339.	नाहरसिंह वाला जौहड़	भाँवता	40	1.5	40.500	$17x10^6$	14.175
340.	ठाकुरों वाला बांध	भाँवता	250	4	69000	42x106	43.450
341.	कानी वाला बांध	भाँवता	30	1	47000	$11x10^6$	16.450
342.	गोपाल तंवर का बांध	कोल्याला	350	3	62000	$31x10^6$	55.700
343.	धन्ना लोमोड का बांध	कोल्याला	25	1	29000	$8x10^6$	10.150
344.	श्रवण का बांध	कोल्याला	10	0.5	25000	$4x10^6$	6.300
345.	अर्जुन का बांध	कोल्याला	5	0.5	21000	$3x10^6$	7.350
346.	रामकिशन वाला	कोल्याला	4	0.5	21500	$4x10^6$	7.525
347.	नारायण वाला	कोल्याला	4	0.5	24000	$5x10^6$	8.400
348.	बनियाला वाली जौहड़ी	भूरीयावास	15	1	35000	$8x10^6$	12.250
349.	हरसी वाला जौहड़	भूरीयावास	20	1	37000	$9x10^6$	12.950
350.	बडवाला गु. की जौहड़ी	भूरीयावास	18	1	34000	$7x10^6$	11.900
351.	हरिसिंह का एनीकट	खटाला	25	2	59000	$18x10^6$	20.650
352.	रामधन मीणा का एनीकट	खटाला	28	2	64000	$19x10^6$	22.400
353.	घाटीतला की जौहड़ी	खेडारा	17	1	41500	$11x10^6$	14.525
354.	ग्यारसा वाला बांध	कूण्डला	15	2	51500	$18x10^6$	18.025
355.	रामधन वाला बांध	कूण्डला	20	2	54000	$20x10^6$	18.900
356.	रामदयाल वाला बांध	कूण्डला	22	2	53500	$19x10^6$	18.725

(xiii)

1	2	3	4	5	6	7	8
357.	रामचन्द्र वाला बांध	कूण्डला	34	3	67500	$28x10^6$	23.625
358.	कान्हा वाला बांध	कूण्डला	30	2	55000	$21x10^6$	19.250
359.	बीरबल वाला बांध	कूण्डला	28	2	57000	$19x10^6$	19.950
360.	मातादीन वाला बांध	कूण्डला	25	1	40500	$11x10^6$	14.175
361.	भगवाना वाला बांध	कूण्डला	30	2	43900	$17x10^6$	15.365
362.	सीताराम वाला बांध	कूण्डला	15	1	21800	$9x10^6$	7.630
363.	नीमवाली जौहड़ी	रामसिंहपुरा	24	1	40500	$11x10^6$	14.175
364.	मीणावाली जौहड़ी	रामसिंहपुरा	20	1	41500	$12x10^6$	14.525
365.	खेड़ली का बड़ा जौहड़	खेडली	35	1	61800	$13x10^6$	21.630
366.	देवती का जौहड़	देवती	20	1	50400	$11x10^6$	17.640
367.	नरवास की जौहड़ी	नरवास	40	1	47000	$10x10^6$	16.450
368.	वीरपुर की जौहड़ी	वीरपुर	25	1	49000	$11x10^6$	17.150
369.	गुवाड़ा का जौहड़	पाठका गुवाड़ा	45	1.5	81000	$18x10^6$	28.350
370.	छोटाला की जौहड़ी	पाइका गुवाडा	20	1	41500	$9x10^6$	14.525
371.	रम्भाली जौहड़ी	पाइका गुवाडा	15	1	50400	$10x10^6$	17.640
372.	देवरा वाली जौहड़ी	वीगोता	25	1	61500	$11x10^6$	21.525
373.	उपरला गुवाडा की जौहड़ी	वीगोता	15	1	47000	$10x10^6$	16.450
374.	बीचला गु. की जौहड़ी	वीगोता	20	1	39000	$7x10^6$	13.650
375.	नीचला गु. की जौहड़ी	वीगोता	18	1	44000	$8x10^6$	15.400
376.	पन्नालाल का बांध	खरड़ाटा	22	1	58000	$9x10^6$	20.300
377.	कांकड वाला बांध	कांकड का गु.	15	1	47000	$8x10^6$	16.450
378.	नवाबन वाला जौहड़	गुवाडा सोती	25	1	49500	$9x10^6$	17.325
379.	मंगरा वाला जौहड़	गुवाडा सोती	15	1	41800	$8x10^6$	14.630
380.	दयाद्रयाली के ऊपर जौहड़	जनावत गु.	20	1	47400	$8x10^6$	16.590
381.	संजानाथजी की जौहड़ी	पलासना	20	2	61500	$18x10^6$	21.525
382.	पलासना की जौहड़ी	पलासना	15	1	48400	$9x10^6$	16.940
383.	रामल बांध	नांगलवान	32	2	67000	$21x10^6$	23.450
384.	गोयल्या की जौहडी	मालूताना	25	1.5	55700	$16x10^6$	19.495

1	2	3	4	5	6	7	8
385.	बाबा का बांध	गढबसई	68	2	47000	$21x10^6$	39.750
386.	नारेढा का बांध	गढबसई	140	2.5	70700	$26x10^6$	48.175
387.	बाली का जौहड़	बाली ढाणी	45	1.5	61700	$17x10^6$	21595
388.	झांकड़ी वाली जौहड़ी	झांकड़ी	25	1	74000	$8x10^6$	15,400
389.	नाथूसर वाला बांध	नाथूसर	120	2.5	117500	$27x10^6$	41.125
390.	तेजा वाला एनीकट	दारोलाई	160	2.5	27500	$26x10^6$	78.350
391.	गूदड्यावाला जौहड़	दारोलाई	30	1.2	61000	$12x10^6$	21,350
392.	राम तलाई	दारोलाई	45	1.5	72000	$13x10^6$	25,200
393.	चीमा वाला बांध	दारोलाई	70	2	91500	$28x10^6$	32,025
394.	माचाड़ी की जौहड़ी	माचाड़ी	40	1.2	43500	$9x10^6$	15,225
395.	खटीक वाली जौहड़ी	माचाड़ी	45	1.5	47500	$11x10^6$	16.625
396.	डण्ड वाला बांध	लापोडिया	125	2.5	91500	$24x10^6$	32.025
397.	बैरवा की ढाणी का एनीकट	धान्धोली	75	2	84000	$21x10^6$	29.400
398.	सुनाडिया की नाड़ी	सुनाडिया	25	1	61500	$8x10^6$	29.400
399.	बावड़ी वाली जौहड़ी	कोलेसर	30	1	64000	$9x10^6$	22.400
400.	सवाईसिंह वाला बांध	तीतरवाड़ा	120	3.5	94800	$38x10^6$	33.180
401.	मूलचन्द का नालाबन्दी	तीतरवाड़ा	75	1.5	69000	$17x10^6$	24.150
402.	हरसहाय वाला बांध	तीतरवाड़ा	85	2.0	74100	$18x10^6$	25.935
403.	सुखराम की मालाबन्दी	तीतरवाड़ा	60	1.5	72000	$16x10^6$	25.200
404.	भैंसला की तलाई	कोचर	50	1	61000	$8x10^6$	21.350
405.	पीली तराईवाला जौहड़	खाल	70	1.5	60500	$16x10^6$	21.175
406.	खुमार खानावाला जौहड़	अमावरा (स.मा.)	75	2	71400	$18x10^6$	24.990
407.	अमावरा की जौहड़ी	अमावरा	35	1	51500	$7x10^6$	18,025
408.	दुजई वाला जौहड़	अमावरा	50	1.2	50500	$8x10^6$	17.675
409.	करडाला का बांध	करडाला	150	4.5	137500	$49x10^6$	48.125
410.	बैरवाओं की तलाई	अमावरा	15	1.2	51300	$14x10^6$	17.955
411.	वानिकी की तलाई	छतरी की ढाणी	12	1.0	50700	$13x10^6$	17,745
412.	गुर्जरों की बैठक तलाई	अमावरा	7	0.5	13400	$8x10^6$	4.690
413.	गुमाना वाला बांध	बड़ी की ढाणी	10	1	24100	$12x10^6$	8.435

1	2	3	4	5	6	7	8
414.	टोड़ी की तलाई	दुजई	8	1	20500	$10x10^6$	7.175
415.	बाबा लोका की तलाई	पडाकरण	7	0.5	14200	$7x10^6$	4.970
416.	धर्मावाली का तालाब	अमावरा	45	2.5	109400	$26x10^6$	38.290
417.	सार्वजनिक तलाई	खुम्हार खाना	8	0.7	40000	$9x10^6$	14.000
418.	भैंसला की तलाई	भैंसला डेरा	15	1.5	30700	$17x10^6$	10.745
	1994-95					संघ द्वारा	भुगतान
419.	दहड़ावाला बांध (जहाज)	देवरी	1600	8.0	32,362	$330x10^6$	3,72,168
420.	पाटीवाला खेत मेढबंदी	लोसल ब्रा.	5	0.5	4400	$1.5x10^6$	1.300
421.	खेजड़ी वाला खेत मेढबंदी	लोसल ब्रा.	6	0.7	6000	$1.6x10^6$	1,800
422.	घाटी वाली जौहड़ी	लोसल ब्रा.	4	0.5	5000	$3x10^6$	1,500
423.	सुगन सागर	घेवर	45	1.5	60000	$18x10^6$	18,000
424.	भगवाना मीणा खेत की मेढबन्दी	माँडलवास	5	0.9	6600	$2x10^6$	1.962
425.	कुंआ ऊपलाखेत मेढबंदी	माँडलवास	10	1.5	11400	$5x10^6$	3.411
426.	बोदूलाल का खेत "	माँडलवास	4	0.5	5400	$1.4x10^6$	1,600
427.	विरदुवाला खेत "	माँडलवास	5	0.6	6100	$1.6x10^6$	1,820
428.	एकालिया बांध	माँडलवास	40	2	73500	$21x10^6$	22.032
429.	किस्सुवाला बांध	माँडलवास	32	1.8	59000	$17x10^6$	17.696
430.	खुण्डाल वाला जौहड़	गढ़	14	1	24500	$7x10^6$	7,350
431.	मेधाराम के खेत में मेडबन्दी	गढ़	7	1.5	11000	$9x10^6$	3,302
432.	रामदयाल की मेडबन्दी	गढ़	10	2.5	20400	$13x10^6$	6,097
433.	ग्यारसी लाल की मेडबन्दी	गढ़	15	3.0	43200	$14x10^6$	12.936
434.	रामदयाल का जौहड़	गढ़	12	1.0	27700	$12x10^6$	8.310
435.	कैमली वाली जौहड़ी	गढ़	20	1.5	43800	$14x10^6$	13.140
436.	नाला पीछेवाली जौहड़ी	मान्याला (राजौर)	8	0.5	5300	$3x10^6$	1.587
437.	भगवान सहाय के खेत की मेडबंदी	मान्याला	3	0.5	3400	$2x10^6$	1.000
438.	रामप्रसाद का बांध	कांसला	15	1.2	26600	$7x10^6$	7.971

1	2	3	4	5	6	7	8
439.	भौरेलाल का बांध	कांसला	18	1.5	40100	$12x10^6$	12.025
440.	सहजाला की जौहड़ी	तिलवाड़ी	20	1.0	23300	$7x10^6$	6.990
441.	बड़ी वाला जौहड़	खोह	25	1.5	61800	$16x10^6$	18.540
442.	स्टैण्ड वाला जौहड़	खोह	30	1.0	37900	$11x10^6$	11.363
443.	टोडावाला जौहड़	नोकरीवाला	15	1.0	23800	$7x10^6$.	7.140
444.	भैरू जी का जौहड़	नोकरीवाला	5	0.4	5700	$2x10^6$	1.686
445.	गौरवाला जौहड़	खोह	8	0.5	24700	$7x10^6$	7.406
446.	खातीवाला का जौहड़	गढ़	15	1.0	41400	$11x10^6$	12.410
447.	रामचन्द्र का एनीकट	कूण्डला	7	0.5	10800	$3x10^6$	3.220
448.	भगवान सहाय का बांध	कूण्डला	5	0.4	7600	$2x10^6$	2.280
449.	रामदयाल का बांध	कूण्डला	10	1.5	19400	$5x10^6$	5.800
450.	ग्राम सागर	कूण्डरोली	75	3.0	180000	$54x10^6$	99.000
451.	पाटी वाला खेत	डांगरवाड़ा	10	2	17900	$4x10^6$	5.347
452.	नया जौहड़	रामबास (रैणी)	25	1.5	58900	$18x10^6$	17.670
453.	नया लड्या का जौहड़	बिणजारी	12	0.5	14700	$4x10^6$	4.386
454.	बौहरा सागर	नांगल बोहरा	15	1	48400	$14x10^6$	14.519
455.	घाटा वाली जौहड़ी	आंधवाडे डोरोली	8	0.5	22500	$7x10^6$	6.742
456.	भोला का जौहड़	मजाक का बास	15	0.5	13700	$4x10^6$	4.115
457.	जोगधाती का जौहड	बीरपुर	20	1	22100	$7x10^6$	6.630
458.	मीडा चापड़ी का जौहड़	मजाक का बास	25	2	37100	$12x10^6$	11.124
459.	नीम वाला जौहड़	लांकी	12	0.5	4700	$4x10^6$	1.410
460.	भूतलावास की जौहड़ी	लाल का टोडा	10	0.5	10000	4x106	3.000
461.	ओदी वाली जौहड़ी	गढ़बिनजारी	15	0.5	13100	$4x10^6$	3.930
462.	पचवीर वाली जौहड़ी	लाल का टोडा	15	1.0	27800	$8x10^6$	8.348
463.	हरला की जौहड़ी	मानुका	18	1	28900	$8x10^6$	8.663
464.	तीन पीपली की जौहड़ी	मालीबास	8	0.5	13900	$4x10^6$	4.170
465.	काला चुबतरा का जौहड़	लाल का टोडा	28	1.5	74100	20x106	22.230
466.	दण्ड वाला जौहड़	भेड़को	25	1.5	50500	$15x10^6$	15.158
467.	बास नली का बांध	कूकरवाड़ी	48	3.5	128300	$39x10^6$	38.500
468.	कूकरवाडी का एनीकट	कूकरवाड़ी	350	5	15750	75x106	1.52.000
469.	सुकाला का जौहड़	सुकाला	10	0.5	8000	$4x10^6$	2.400
470.	माला की जौहड़ी	कास्का	35	2.5	75500	$20x10^6$	22.650

1	2	3	4	5	6	7	8
471.	बड़ा जौहड़	डाबली	30	2	56500	$15x10^6$	16,950
472.	प्रभु का एनीकट	सावर	35	2.5	23115	$22x10^6$	23,220
473.	केमरी का जौहड़	सूकोला	20	1.5	42800	$12x10^6$	12.825
474.	कूण्डली वाला एनीकट	रहकामाला	250	4.5	8600	$62x10^6$	69.240
475.	रोनाला जौहड	रहकामाला	5	0.5	7800	$3x10^6$	2.340
476.	जाट वाला जौहड़	रहकामाला	7	0.5	6000	$2x10^6$	1.800
477.	छोटाली का जौहड़	रहकामाला	10	0.5	15000	$5x10^6$	4,500
478.	बजडी वाला जौहड़	रहकामाला	5	0.5	6000	$2x10^6$	1,800
479.	टाँका	दुहारमाला			6381		76,570
480.	मगरा वाला जौहड़	दुहारमाला	7	0.5	6800	$2x10^6$	2,025
481.	जौहड़ीका का जौहड़	दुहारमाला	5	0.3	2000	$0.5x10^6$	600
482.	राडाला जौहड़	दुहारमाला	6	0.3	2600	$1x10^6$	800
483.	फूटला जौहड़	दुहाराला	5	0.5	16200	$5x10^6$	4,860
484.	नन्दू कुम्हार के खेत की मेढ़बन्दी	दुहारमाला	10	1.5	16700	5x106	5.010
485.	कांकड़ वाली जौहड़ी	भूरियावास	12	1	7900	$2.5x10^6$	2,370
486.	फेटावाला खेत मेढ़बंदी	भूरियावास	15	2	36900	$11x10^6$	11,062
487.	मुशाणावाली जौहड़ी	भूरियावास	15	1.5	30300	$9x10^6$	9,078
488.	भोपा की ढाणी का जौहड़	भूरियावास	12	1.2	28300	$8x10^6$	8,492
489.	बावड़ी वाली जौहड़ी	आगर	25	1.5	61700	$18x10^6$	18,500
490.	काना का छोटा बांध	आगर	20	1.0	33700	$9x10^6$	10,115
491.	नामक्या वाला बांध	धोली दांती	18	1.0	31800	$9x10^6$	9,552
492.	बद्री मीणा के खेत की मेढ़बन्दी	गुवाडा रामजी	5	1	4700	$2x10^6$	1.400
493.	जम्बूरी वाली जौहड़ी	गुवाडाहार	15	1	25700	$7x10^6$	7,707
494.	खोटा वाली जौहड़ी	ढाणी गालास्या	20	1.5	60000	$18x10^6$	18,012
495.	पचवीर वाला जौहड़	टोडा	18	1.5	53400	$16x10^6$	16,022
496.	नागेला की जौहड़ी	नागेला की ढाणी	10	1.	13600	$4x10^6$	4.670
497.	भोपा की जौहड़ी	भोपा की ढाणी	15	10	24300	$7x10^6$	7.300
498.	तलावडा की जौहड़ी	चाँदपुरा	25	1.5	36700	$11x10^6$	11.000
499.	रामलबांध	नांगलबानी	12	0.5	18200	$5x10^6$	5.460

1	2	3	4	5	6	7	8
500.	खोड़ावाला बांध	चाहा का बास	45	2.5	88800	$24x10^6$	26.630
501.	रामधन का बांध	डूमोली	20	10	42300	$12x10^6$	12.680
502.	डूमोली का जौहड़	डूमोली	25	1.5	60500	$17x10^6$	18.153
503.	पन्ना का बांध	खरडाटा	10	1	13500	$4x10^6$	4.050
504.	हरिसिंह का एनीकट	खाटाला	15	1	20600	$6x10^6$	6.200
505.	घाटी वाला जौहड़	समरा	12	0.5	10800	$3x10^6$	3.250
506.	झालरा खेत की मेढ़बंदी	पिपलाई	10	1	10900	$3x10^6$	3.270
507.	चौडारा का बांध	पिपलाई	12	1	22600	$6x10^6$	6.788
508.	केमला का जौहड़	पिपलाई	25	1.5	37200	$11x10^6$	11.166
509.	जोगी वाला जौहड़	पिपलाई	20	1.5	24500	$7x10^6$	7.350
510.	मूलचन्द का जौहड़	पिपलाई	15	1	20000	$6x10^6$	6.000
511.	खाती का एनीकट	पिपलाई	35	2	21500	$18x10^6$	20.250
512.	लालपाटी का बांध	मोरडी	25	1.5	50400	$15x10^6$	15.144
513.	माल्या का जौहड़	मोरडी	15	0.5	16800	$5x10^6$	5.040
514.	मोरडी का जौहड़	मोरडी	18	0.75	31400	$9x10^6$	9.436
515.	लामेडा बांध	देव का देवरा	3	0.25	11600	$3x10^6$	3.480
516.	रावल वाला बांध	देव का देवरा	5	0.5	14000	$4x10^6$	4.200
517.	खरि कुण्ड का जौहड़	चोकीवाला	12	1.5	61200	$18x10^6$	18.360
518.	चांदला का जौहड़	चोकीवाला	7	1	28600	$8x10^6$	8.600
519.	काला खेत का जौहड़	कालेड	5	0.5	18300	$5x10^6$	5.500
520.	चवराला का बांध	बैनाडा की ढाणी	52	5	186600	$5x10^6$	56.000
521.	काली ढाब	तेल्याला	10	1	34000	$10x10^6$	18.200
522.	रावत का बांध	ग्यारसा की ढाणी	40	4	126600	$35x10^6$	38.000
523.	बटाला का बांध	समरा	25	2	68300	$20x10^6$	20.500
524.	सामला क्यारा का बांध	जैतपुर गु.	10	0.5	32200	$10x10^6$	9.680
525.	बाबाजी का जौहड़	नटाटा	15	2	33300	$18x10^6$	10.000
526.	मायाकाला का बांध	बैनाडा	25	1.5	69400	$21x10^6$	20.827
527.	मान्याला का बांध	बैनाडा	10	1	50000	$15x10^6$	15.000
528.	फताली का जौहड़	नटाटा	5	0.5	18000	$5x10^6$	5.400
529.	झोझर वाला जौहड़	नटाटा	4	0.5	10000	$3x10^6$	3.000
530.	बाबाजी वाला जौहड़	जैतपुर गु.	5	0.5	15000	$4x10^6$	4.500
531.	नया जौहड़	जैतपुर गु.	5	0.5	11200	$3x10^6$	3.380

1	2	3	4	5	6	7	8
532.	काडला की जौहड़ी	समरा	7	0.5	23000	$7x10^6$	6,900
533.	बजराला का जौहड़	जैतपुर गु.	8	0.5	15400	$4x10^6$	4.620
534.	आंसूढाल की पाटी	हमीरपुर	10	0.5	30600	$9x10^6$	9.180
535.	माल्यावाला जौहड़	कालेड	6	0.5	16000	$4x10^6$	4.800
536.	खानवाला जौहड़	चोबीवाला	15	1.0	34000	$11x10^6$	10.200
537.	उपरला जौहड़ प्रथम	जैतपुर गु.	10	1.0	24300	$7x10^6$	7.300
538.	उपरला जौहड़ द्वितीय	जैतपुर गु.	12	1	40600	$12x10^6$	12.200
539.	काँकरी वाला बांध	नटाटा	15	1.5	52600	$16x10^6$	15.800
540.	छीलावाला बांध	नटाटा	12	0.5	12000	$3x10^6$	3.600
541.	बडामाला बांध	नटाटा	10	0.5	24300	$7x10^6$	7.300
542.	गंगाराम का जौहड़	नटाटा	10	0.5	11800	$3x10^6$	3,500
543.	रोंझवाली जौहड़ी	कालेड	5	0.25	4000	$2x10^6$	1.200
544.	मुनावाली का बांध	रायपुरा	7	0.5	13500	$4x10^6$	4.070
545.	सोती का बांध	गु.सोती	4	0.5	6600	$2x10^6$	2.000
546.	हनुमान का एनीकट	बाछड़ी	15	1	15600	$4x10^6$	4.680
547.	रामकिशन का एनीकट	बाछड़ी	12	1	17100	$5x10^6$	5.130
548.	गुवाडा का बांध	राडी का गुवाड़ा	25	2.5	35910	$4x10^6$	44.500
549.	पीपल वाला जौहड़	मालूताना	25	2	66600	$20x10^6$	20.000
550.	नई जौहड़ी	बूजा (बैराठ)	10	1	26600	$8x10^6$	8.000
551.	मोडाली का जौहड़	सेवराणी ढाणी	15	1.5	55600	$16x10^6$	16.700
552.	रामतलाई	बूजा	15	1.5	52600	$15x10^6$	15.800
553.	गोपाल का एनीकट	बूजा	150—	4.5	89590	$75x10^6$	1.40.000
554.	नीचे वाला एनीकट	बूजा	100	4	86120	$70x10^6$	1.25.000
555.	काला पापडा का जौहड़	बूजा (बैराठ)	12	10	46600	$14x10^6$	14.000
556.	भोमिया का एनीकट	गढ़ बसई	35	2.5	110000	$30x10^6$	33.000
557.	राडी वाला बांध	जैयसिंहपुरा	5	0.5	5000	$2x10^6$	1.500
558.	आमली वाली मेढ़बन्दी	गोपालपुरा	5	0.5	6600	$2x10^6$	2.000
559.	बद्री मीणा की मेढ़बंदी	अजबगढ़	7	0.5	6600	$2x10^6$	2.000
560.	राडी गुवाडा का बांध	गु. राडी	10	0.5	6000	$2x10^6$	13.000
561.	सूण्डाराम का बांध	भतहारी	15	10	26700	$6x10^6$	6.200
562.	श्रीराम गूर्जर का एनीकट	बिलाड़ी	25	2.5	55000	$16x10^6$	16.500
563.	हीरालाल का एनीकट	मदारी की ढाणी	28	3	68300	$34x10^6$	74.000

1	2	3	4	5	6	7	8
564.	धोकड़ी वाला एनीकट	धोकड़ी	20	2	32600	$22x10^6$	38,000
565.	दारोलाई का जौहड़	दारोलाई	10	1.5	60000	$18x10^6$	18,000
566.	तेजा वाला एनीकट	दारोलाई	15	1.5	2300	$20x10^6$	27,500
567.	महादेवा वाला एनीकट	दारोलाई	20	1.5	2210	$18x10^6$	23,200
568.	घासी वाला एनीकट	दारोलाई	22	1.7	2109	$17x10^6$	22,000
569.	पीपली वाला जौहड़	नीमी	20	1.5	61600	$18x10^6$	18,500
570.	घाटा बारा का बांध	नीमी	25	2.5	79900	$48x10^6$	92,500
571.	देउंगा में जल कार्य	जैसलमेर				$12x10^6$	12,000
572.	भोमा काला एनीकट	कालेड	75	5.5	10727	$65x10^6$	1,18,000

परिशिष्ट - 2

वर्ष 1984 से मार्च 1995 तक का प्राप्ती एवं भुगतान खाता

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1984		टी.डी. एच.	क्षेत्रीय अध्ययन	6,100.00	6,100.00	मानदेय	3,400.00
						विभिन्न परियोजनाओं का भ्रमण	2,038.00
						स्टेशनरी	139.00
						अन्य	371.00
						हस्त रोकड़	152.00
					6,100.00		**6,100.00**
1985							
	1.	हस्त रोकड़		152.00		सन्दर्भ व्यक्तियों का मानदेय	12,300.00
	2.	स्थानीय चन्दा	आफिस व्यवस्था खर्च	15,506.00	15,658.00	यात्रा प्रवास खर्च	432.00
						प्रिंटिंग, स्टेशनरी	741.20
						क्षेत्रीय अध्ययन खर्च	1,500.00
						डाक खर्च	500.00
						हस्त रोकड़	184.80
					15,658.00		**16,658.00**
1986							
	1.	हस्त रोकड़		184.80		मानदेय	21,440.00
	2.	राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट, जयपुर	आफिस व्यवस्था	4,200.00		स्टेशनरी, प्रिंटिंग, यात्रा खर्च व अन्य	5,971.81
	3.	महाशय भगवान दास ट्रस्ट, अलवर	आफिस व्यवस्था	1,200.00		शिक्षण सामग्री	452.18
						दवाईयाँ	5,698.40
	4.	राजेन्द्र सिंह (दान)	आफिस व्यवस्था खर्च	4,500.00	10,084.80	शिविर / अभियान	6,847.60

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	5.	गान्धी शान्ति प्रतिष्ठान	पर्यावरण शिविर	2,007.00	2,007.00	प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण	1,973.30
	6.	पर्यावरण विभाग, भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	6,750.00	6,750.00	मीटिंग/सभा	1,000.00
	7.	बनवासी सेवा आश्रम, मिर्जापुर	शिक्षा एवं स्वास्थ्य	30,000.00	30,000.00	अलवर कार्यशाला	3,500.00
			कार्यक्रम			हस्त रोकड़	158.51
					48,841.80		**48,841.80**
1987							
	1.	हस्त रोकड़		158.51		मानदेय	1,12,355.00
	2.	फुटकर प्राप्तियाँ		5,672.00		यात्रा खर्च	2,267.61
	3.	सम्पूर्ण क्रान्ति विधालय, बेडछी	प्रशासनिक खर्च	2,800.00		प्रशिक्षण/शिक्षण सामग्री	12,644.38
	4.	भगवान दास ट्रस्ट, अलवर	आफिस व्यवस्था	1,800.00		स्टेशनरी व डाक खर्च	1,488.55
	5.	राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट, जय.	आफिस व्यवस्था	8,400.00	18,830.51	फर्नीचर	4,289.80
	6.	समाज कल्याण बोर्ड	महिला जागृति शिविर	8,000.00		दवाईयाँ	21,763.39
	7.	पर्यावरण मंत्रालय,भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	17,000.00		चैकडेम (बांध)	32,460.00
	8.	कर्पाट, नई दिल्ली	संगठन निर्माण	29,300.00		अकाल राहतं (बांध)	2,02,662.50
	9.	राजस्थान पर्यावरण विभाग,जयपुर	पारस्थितिकी विकास	7,000.00	61,300.00	व्यवस्था खर्च	3,329.76
			शिविर			टाईपराइटर	5,006.00
	10.	बनवासी सेवा आश्रम, मिर्जापुर	शिक्षा व स्वास्थ्य	20,000.00		पुस्तकालय	8,160.64
			कार्यक्रम			कानूनी शिविर	1,125.66
	11.	साउथ एशिया पार्टनरसिप,दिल्ली	शिक्षण व लाइब्रेरी	43,561.00		अन्य खर्च	2,697.50
			कार्यक्रम			प्रशासनिक खर्च	9,755.69
	12.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, दिल्ली	बांध निर्माण व	5,32,500.00		महिला जागरूकता शिविर	8,000.00
			स्वास्थ्य कार्यक्रम			पारिस्थितिक विकास शिविर	7,000.00
	13.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षण एवं	87,755.95	6,83,817.03	संगठन निर्माण योजना	29,300.87
			ग्रामीण विकास			पर्यावरण शिविर	17,000.00
						हस्त रोकड़	3,902.33
						बैंक रोकड़	2,78,737.86
					7,63,947.54		**7,63,947.54**

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1988-89							
	1.	हस्त रोकड़		3,902.33		मानदेय	2,34,338.55
	2.	बैंक रोकड़		2,78,737.86		फर्नीचर	10,859.80
	3.	राजस्थान सेवक संघ ट्रस्ट, जयपुर	आफिस व्यवस्था	5,500.00		दवाईयाँ	41,275.45
						स्टेशनरी व डाक खर्च	9,167.68
	4.	दान	विविध खर्च (भवन निर्माण)	1,39,447.00		यात्रा प्रवास खर्च	40,524.75
						बांध निर्माण (अकाल राहत)	5,41,772.00
	5.	श्रमदान	तालाब निर्माण	54,800.00		मोटर साइकिल	30,560.00
	6.	ट्रेक्टर से आमदनी	विविध खर्च हेतु	55,000.00		तकनीकी प्रशिक्षण	750.00
	7.	मरीज पंजीयन से	औषधालय	1,175.00		आफिस खर्च	226.60
	8.	बैंक ब्याज		8,041.70		स्थापना खर्च/(सौर ऊर्जा)	520.00
	9.	उच्चन्त खाता		700.00	5,47,303.89	डाक्टर विजिट	15,841.25
	10	कपार्ट नई दिल्ली	(क) सौर ऊर्जा कार्यक्रम	93,200.00		अनुवृति खर्च	57,302.35
			(ख) अकाल राहत	2,25,000.00		पोषाहार	37,584.94
	11.	राजस्थान पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारस्थितिकी विकास शिविर	7,000.00		तकनीकी खर्च	3,8,38.00
						भोजन व आवासीय खर्च	49,924.95
	12.	पर्यावरण व वन मन्त्रालय, भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	45,000.00		अंकेक्षण फीस	400.00
						बीज, पौधें व खाद खर्च	647.40
						क्षेत्रीय भ्रमण	600.00
	13.	वन विभाग, अलवर	नर्सरी	8,054.40		साग सब्जी सामग्री	489.60
	14.	केन्द्रिय समाज कल्याण बोर्ड, दिल्ली	(क) महिला जागरूकता	40,000.00		आवृति व रिपेयरिंग	17,744.30
			(ख) शिशु पालना एकक	1,59,648.00			
			(ग) शिशुपालना एकक	36,390.00	6,14,292.40	भूमि व भवन	1,07,691.15
	15.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, दिल्ली	बांध निर्माण व स्वास्थ्य कार्यक्रम	2,70,100.00		सौर ऊर्जा मशीनरी	1,03,262.00
						प्रशिक्षण सामग्री	7,698.60

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	16.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास कार्य	1,53,050.00		सीडमनी	9,793.32
						उधार ऋण	2,382.36
	17.	साउथ एशिया पार्टनरशिप, दिल्ली	शिक्षण व पुस्तकालय कार्यक्रम	15,247.00	4,38,392.00	अन्य विविध खर्च	36,944.12
						हस्त रोकड़	5,944.38
						बैंक रोकड़	2,31,908.74
					15,99,993.29		15,99,993.29
1989-90							
	1.	हस्त रोकड़		5,944.38		मानदेय	2,71,431.91
	2.	बैंक रोकड़		2,31,908.74		यात्रा खर्च	54,071.53
	3.	ट्रेक्टर द्वारा प्राप्ती		93,965.00		स्टेशनरी खर्च	15,816.85
	4.	स्थानीय दान व चन्दा	भवन निर्माण	1,49,767.00		शिक्षण सामग्री	32,023.00
	5.	विभिन्न मदों से	भवन निर्माण	48,021.33		प्रशिक्षण खर्च	45,692.53
	6.	समग्र सेवा संघ, जयपुर	कार्यालय व्यवस्था	1,145.00		दवाईयाँ	61,911.09
	7.	ग्राम नियोजन केंद्र, गाजियाबाद	सूखा निवारण शिविर	6,500.00		भोजन व्यवस्था खर्च	47,890.00
	8.	सैन्ट्रल रिलीफ कमेटी, दिल्ली	पौषाहार	5,000.00	5,42,251.45	फर्नीचर	14,083.30
	9.	केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड	(क) महिला शिविर	24,000.00		डाक्टर विजिट	16,800.00
			(ख) शिशुपालना एकक	1,13,535.00		अकाल राहत (बांध जोहड़ निर्माण)	2,59,840.70
			(ग) ऋण वापसी, शिशुपालना	57,115.00			
						भवन निर्माण	1,44,033.22
	10.	शिक्षा कर्मी बोर्ड, जयपुर	सर्वे कार्य हेतु	3,000.00		शौचालय निर्माण	8,588.81
	11.	राज० पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारस्थितिकी विकास शिविर	8,000.00		मोटर साईकिल	30,560.00
	12	पर्यावरण मन्त्रालय, भारत सरकार	(क) पर्यावरण शिविर	18,000.00		मेडबन्दी (जोहड़ निर्माण)	44,337.00
			(ख) ऋण वापसी	19,300.00		मशीनरी मरम्मत खर्च	16,404.23

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	13.	कपार्ट, नई दिल्ली	(क) अकाल राहत	1,90,000.00		औजार खर्च	1,349.00
			(ख) पेयजल जागति शिविर	18,000.00	4,50,950.00	मशीनरी खर्च	16,260.40
	14.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास	1.14,069.00		डीजल खर्च	18,766.70
						पौषाहार	71,051.97
	15.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, दिल्ली	स्वास्थ्य एवं अकाल राहत	3,27,500.00	4,41,569.00	आयोजन व्यय	3,553.92
						आवृति खर्च	8,000.00
						व्यवस्था खर्च	2,755.00
						कानूनी खर्च	4,955.00
						पशु (गाय)	1,800.00
						विविध खर्च	45,416.46
						हस्त रोकड़	9,397.76
						बैंक रोकड़	1,87,980.07
					14,34,770.45		**14,34,770.45**
1990-91							
	1.	हस्त रोकड़		9,397.76		मानदेय	2,61,788.49
	2.	बैंक रोकड़		1,87,980.07		ट्रेनिंग मीटिंग आदि	90,752.50
	3.	दान चन्दा प्राप्ती		85,768.00		यात्रा व्यय	47,915.67
	4.	औषधालय (रजि०) से	भवन निर्माण	1,497.00		स्टेशनरी व डाक खर्च	21,016.40
	5.	ट्रेक्टर से आय		50,648.00		दवाईयाँ	28,920.67
	6.	व्यवस्था से प्राप्ति	कार्यक्रम आयोजन से प्राप्ति	31,870.00		बांध व तालाब निर्माण	2,93,943.30
	7.	कालीन बिक्री से		3,146.00		बैंक कमीशन	964.85
	8.	बैंक ब्याज		9,276.87		भूमि एवं भवन	2,17,646.30

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	9.	ऋण वापसी प्राप्ती		2,382.36	3,81,966.06	डीजल तेल खर्च	23,050.71
		(इक्को को दिया गया)				मशीनरी मरम्मत	16,270.67
	10.	पर्यावरण मन्त्रालय,	पर्यावरण शिविर	15,000.00		पशु (गाय)	2,700.00
		भारत सरकार				खाद बीज खर्च	6,595.00
	11.	राज. पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारस्थितिकी विकास शिविर	15,000.00		बिजली खर्च	3,165.00
	12.	उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर	प्रशिक्षण	15,000.00		गलीचा लूम खर्च	38,489.80
	13.	ग्राम नियोजन केन्द्र, गाजियाबाद	सूखा निवारण शिविर	11,500.00		कानूनी खर्च	4,757.00
	14.	राज. शिक्षाकर्मी बोर्ड, जयपुर	शिक्षाकर्मी परियोजना हेतु	82,501.23		औजार आदि	606.00
	15.	केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड	(क) शिशुपालना एकक	1,76,610.00		डाक्टर विजिट	16,800.00
		दिल्ली	(ख) पिछले वर्ष का ऋण	64,857.00		पौषाहार	71,596.00
			बकाया			प्रशासनिक खर्च	2,000.00
	16.	कपार्ट, नई दिल्ली	(क) गलीचा कार्यक्रम	84,350.00		शिक्षण सामग्री	14,840.50
			(ख) पेयजल जागृति शिविर	19,000.00	4,83,818.23	जल व प्रकाश व्यवस्था खर्च	5,860.00
	17.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट,	अकाल राहत एवं	3,33,800.00		आवृति खर्च	1,196.50
		दिल्ली	स्वास्थ्य कार्यक्रम			अनावृति खर्च	3,700.00
	18.	गान्धी पीस सैन्टर, दिल्ली	तालाब निर्माण	15,000.00		प्रशिक्षण वृत्ति खर्च	14,535.00
	19.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षण एवं	3,75,009.00	7,23,809.00	प्रशिक्षण स्थल किराया	4,200.00
			ग्रामीण विकास			कच्चा माल खर्च	12,807.70
						विविध खर्च	32,138.60
						दान चन्दा खर्च	1,103.00
						बर्तन आदि	6,093.25
						फिक्स डिपोजिट	59,600.00
						हस्त रोकड़	42,534.65
						बैंक रोकड़	2,42,005.73
					15,89,593.29		**15,89,593.29**

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1991-92							
	1.	हस्त रोकड़		42,534.65		मानदेय	4,08,761.13
	2.	बैंक रोकड़		2,42,005.73		शिविर खर्च	1,60,087.70
	3.	फिक्स डिपाजिट		59,600.00		यात्रा प्रवास खर्च	93,688.75
	4.	दान प्राप्ति	भवन निर्माण	75,762.00		स्टेशनरी, प्रिंटिंग, पोस्टेज	41,817.85
	5.	भोजन व आवासीय व्यवस्था		85,140.00		दवाईयाँ	34,075.33
	6.	ट्रेक्टर से आमदनी		84,416.25		बांध निर्माण	4,34,318.60
	7.	प्रशासनिक खर्च से प्राप्ती		49,100.00		इम्पैक्ट स्टेडी	42,851.20
	8.	औषधालय रजि० फीस		603.00		प्रशासनिक खर्च	58,344.05
	9.	बैंक ब्याज प्राप्ती		9,320.00		फर्नीचर	27,101.00
	10.	विविध प्राप्ती (परियोजनाओं से)		40,952.00		टाईपराइटर	6,230.00
	11.	उचंती प्राप्ती (परियाजनाओं से)		35,000.00	7,24,433.63	उपकरण	1,430.00
	12.	केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड,	शिशुपालना गृह	1,67,430.00		बिल्डिंग निर्माण खर्च	2,62,970.85
		दिल्ली				बिजली खर्च	51,747.80
	13.	पर्यावरण विभाग, जयपुर	पारस्थितिकी विकास शिविर	10,000.00		टेलीफोन खर्च	2,420.00
	14.	पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार	पर्यावरण शिविर	16,000.00		डीजल खर्च	21,226.13
	15.	स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार	स्वास्थ्य कार्यक्रम	4,20,200.00		मशीनरी मरम्मत खर्च	24,404.20
	16.	विकास विकल्प, दिल्ली	संगोष्ठी हेतु	16,000.00		मशीन खरीद	26,279.10
	17.	केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड,	ऋण वापसी	36,406.00		बर्तन खर्च	4,055.85
		दिल्ली				ईंधन खर्च	2,941.00
	18.	कपार्ट, नई दिल्ली	ऋण वापसी	28,205.00	6,94,241.00	मजदूरी खर्च	8,297.30
	19.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, दिल्ली	स्वास्थ्य कार्यक्रम	73,700.00		खाद बीज (वानिकी) खर्च	2,861.80
	20.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षा एवं	6,51,959.00		कृषि औजार	1,047.87
			ग्रामीण विकास			दान चन्दा	3,586.00

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	21.	गान्धी पीस सैन्टर, दिल्ली	बांध निर्माण	1,25,000.00		चारा खर्च	750.0०
	22.	इन्टरकॉओपरेशन	बांध निर्माण, इम्पैक्ट स्टडी	5,43,500.00	13,94,159.00	पशु	5,000.00
						कानूनी खर्च	287.00
						अंकेक्षण	2,750.00
						डाक्टर विजिट	8,400.00
						पौषाहार	35,780.00
						बेसलाइन सर्वे	20,349.50
						बैंक कमीशन	180.00
						विविध खर्च	1,11,214.10
						अग्रिम दिया गया (कार्यकर्त्ताओं को)	80,572.00
						समाज कल्याण बोर्ड को वापस भेजा गया	79,125.00
						हस्त रोकड़	48,285.79
						बैंक रोकड़	6,99,596.73
				28,12,833.63			**28,12,833.63**

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1992-93							
	1.	हस्त रोकड़		48,285.79		मानदेय	5,52,938.50
	2.	बैंक रोकड़		6,99,596.73		मीटिंग कैम्प आदि	41,400.00
	3.	दान चन्दा	भवन निर्माण	80,572.00		यात्रा खर्च	59,868.50
	4.	सहयोग प्राप्ती स्थानीय		3,395.00		डाक व स्टेशनरी	34,299.65
	5.	विप्रो, जयपुर		440.00		लैण्ड लेवलिंग एवं मेडबन्दी	5,879.00
	6.	श्रमदान ग्राम सभाओं से		54,050.00		बांध एक तालाब निर्माण	9,97,308.00
	7.	ट्रैक्टर से आय		79,016.00		उपकरण	45,479.00
	8.	विभिन्न परियोजनाओं से		39,500.00		सर्वे खर्च	20,629.00
		प्रशासनिक				प्रशासनिक खर्च	47,636.00
	9.	आवासीय व भोजन व्यवस्था से		1,28,139.60		कन्सलटेन्सी बांध हेतु	10,000.00
	10.	कृषि से आय		4,500.00		फोटोग्राफी	9,355.90
	11.	स्वास्थ्य सेवा से		23,420.00		बैंक कमीशन	3,252.00
	12.	विविध प्राप्तियां		1,928.00		विविध खर्च	90,903.20
	13.	पर्यावरण विज्ञान केन्द्र		3,120.00		मोटर साईकिल	27,500.00
	14.	बैंक ब्याज		9,142.00		साईकिल	1,030.00
	15.	ऋण वापसी कार्यकर्ताओं से		16,696.33	11,91,801.45	मशीनरी रिपेयर	27,686.45
	16.	स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण	स्वास्थ्य कार्यक्रम	7,53,120.00		डीजल पैट्रोल	65,320.35
		मंत्रालय, भारत सरकार				टेलीफोन खर्च	3,146.00
	17.	भारतीय पर्यावरण समिति, दिल्ली	पर्यावरण शिविर	10,000.00		विद्युत खर्च	4,012.30
	18.	केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड,	महिला जागृति कार्यक्रम	10,000.00		मजदूरी	17,074.00
		दिल्ली				भोजन व आवास	31,013.00
	19.	वन विभाग, अलवर	नर्सरी	9,400.00		भूमि एवं भवन	61,320.00

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
	20.	कपार्ट, नई दिल्ली	शौचालय निर्माण	32,632.00	8,15,152.00	दान चन्दा	6,886.00
	21.	नोराड, नोर्वेयन एम्बैसी	बांध निर्माण	4,05,144.00		आडिट फीस	3,100.00
	22.	इक्को, नीदरलैण्ड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास	3,56,790.00		देशी बीज एवं खाद निर्माण	1,314.00
						पशुचारा	1,500.00
	23.	गान्धी पीस सैन्टर, दिल्ली	बांध निर्माण	2,66,600.00		ईंधन (लकड़ी)	3,120.00
	24.	इन्टरकॉओपरेशन	बांध निर्माण एवं प्रभाव अध्ययन	9,35,100.00	19,63,634.00	दवाईयाँ	61,210.44
						कानूनी खर्च	5,262.00
						बीमा खर्च	1,755.00
						फर्नीचर	44,751.00
						शौचालय निर्माण	33,810.00
						चिकित्सकीय उपकरण	3,11,860.43
						जैनरेटर एवं टी.वी. (आवृति खर्च)	1,02,481.85
						एम्बूलैन्स	2,31,000.00
						बेसलाइन सर्वे	29,821.75
						ट्रेनिंग खर्च	13,360.00
						भवन मरम्मत खर्च	13,499.50
						पौषाहार	71,797.00
						डाक्टर विजिट	16,800.00
						ऋण वापसी	35,000.00
						कार्यकत्ताओं हेतु ऋण	26,272.50
						हस्त रोकड़	18,959.53
						बैंक रोकड़	7,80,133.40
					39,70,589.45		**39,70,589.45**

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1993-94							
	1.	हस्त रोकड़		18,959.53		मानदेय	4,59,024.00
	2.	बैंक रोकड़		7,80,133.40		सन्दर्भ व्यक्तियों का मानदेय	21,959.00
	3.	दान चन्दा		6,339.00		प्रशिक्षण भत्ता	82,500.00
	4.	विविध प्राप्तियां		3,803.00		डीजल पैट्रोल	15,312.75
	5.	बैंक कमीशन वापसी		1,795.00		ओवर हैड खर्च	10,428.85
	6.	बैंक ब्याज		650.00		यात्रा प्रवास	1,57,879.75
	7.	स्वास्थ्य गतिविधि से		5,196.00		भोजन एवं आवास	43,207.40
	8.	ट्रेक्टर से आय		80,585.00		बीमा खर्च	2,595.00
	9.	पशु बिक्री से		7,350.00		ईंधन	5,519.50
	10.	डी.पी. सिंह से ऋण		12,933.50		बैंक कमीशन	740.00
	11.	ऋण वापसी (केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड)		1,71,773.00	11,15,789.93	मजदूरी खर्च	15,834.75
						स्टेशनरी	52,796.05
	12.	ऋण वापसी कार्यकर्त्ताओं से		26,272.50		बीज खाद	6,597.00
	13.	वन विभाग, अलवर	नर्सरी	22,500.00		समूह सहायता	56,178.00
	14.	केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड	शिशुपालना गृह	1,24,425.00	1,46,925.00	गलीचा बुनाई	9,700.00
	15.	विश्व प्रकृति निधि	पर्यावरण जागरूकता	5,000.00		दवाईयाँ	7,285.60
	16.	आक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट	बांध निर्माण	4,46,230.00		कानूनी खर्च	14,717.00
	17.	गांधी शान्ति केन्द्र	पर्यावरण गोष्ठी	8,800.00		आडिट खर्च	2,250.00
	18	इन्टरकॉओपरेशन, स्वीटज़रलैंड	सामलात देह प्रशिक्षण एवं प्रभाव अध्ययन	19,43,250.00		गैस कनैक्शन	9,740.00
						पौषाहार	59,306.00
	19.	इक्को, नीदरलैंड	समग्र शिक्षण एवं ग्रामीण विकास	21,38,364.00	45,41,644.00	शौचालय निर्माण	22,152.00
						सन्ड्री खर्च	52,493.58
						डाक्टर विजिट	6,000.00
						एक्सपोजर विजिट	5,000.00

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
						शिविर एवं सभा खर्च	17,412.00
						प्रशिक्षण सामग्री	24,688.20
						कन्सलटैन्सी खर्च	20,000.00
						मूल्यांकन	4,800.00
						फिल्ड सुपरवीजन	511.00
						प्रशासनिक खर्च	4,401.50
						समाचार पत्र	977.90
						बांध एवं जोहड़ निर्माण खर्च	23,20,729.50
						मशीनरी मरम्मत खर्च	52,876.55
						पोस्टर प्रिंटिंग	2,050.00
						बिजली खर्च	11,938.80
						टेलीफोन खर्च	403.75
						क्षतिपूर्ति खर्च	55,000.00
						फर्नीचर	1,008.00
						उपकरण	682.00
						टाटा ट्रक	2,98,972.00
						जीप महेन्द्रा	2,74,312.00
						मोटर साईकिल	29,235.00
						भूमि एवं भवन	94,643.00
						फोटोकॉपियर मशीन	1,30,853.55
						ऋण वापसी	17,396.35
						टाटा आटो मोबाइल	1,028.00
						कार्यकर्त्ताओं को ऋण	73,480.50
						हस्त रोकड़	43,641.33
						बैंक रोकड़	11,70,656.67
					58,04,358.93		**58,04,358.93**

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
1994-95							
	1.	हस्त रोकड़		43,641.33		प्रशिक्षण भत्ता	1,58,340.00
	2.	बैंक रोकड़		11,70,656.67		मानदेय	5,50,478.30
	3.	दान चन्दा	भवन निर्माण	1,190.00		कार्यशाला/गोष्ठी शिविर	51,356.80
	4.	ग्राम सभाओं से प्राप्ती	भवन निर्माण	37,500.00		प्रशिक्षण	28,300.25
	5.	विविध प्राप्तियां		434.00		जागरूकता एवं उत्प्रेरण	49,350.50
	6.	लूम बिक्री से प्राप्ती		8,200.00		भोजन एवं आवासीय खर्च	61,348.00
	7.	पशु बिक्री से प्राप्ती		1,100.00		जोहड़/बांध/भौतिक कार्य	31,44,280.45
	8.	ट्रेक्टर बिक्री से प्राप्ती		1,47,500.00		यात्रा प्रवास	1,05,169.97
	9.	ऋण वापसी		60,993.50		प्रशिक्षण सामग्री	45,463.00
	10.	बैंक ब्याज		10,983.00		सन्दर्भ व्यक्तियों का मानदेय	57,671.80
	11.	कृष्ण टाटा इंजीनियरिंग से वापसी		1,028.00		डाकुमेन्टेशन खर्च	10,800.00
	12.	रोटरी एवार्ड		1,00,000.00	15,83,226.50	किताबें	20,179.50
	13.	केन्द्रीय खाद्य मंत्रालय	अन्न सुरक्षा	11,250.00		स्टेशनरी पोस्टेज	45,129.00
	14.	केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड	शिशुपालना गृह	2,53,785.00	2,65,035.00	फिल्म रोल, स्लाइड, फोटो निर्माण	12,412.75
	15.	इन्टरकोओपरेशन, स्वीटजरलैंड	सामलात देह प्रशिक्षण	19,33,000.00		कृषि बीज वितरण	89,814.00
			प्रभाव			चारा विकास	29,977.00
			अध्ययन (जोहड़/बांध निर्माण)			मोटर साईकिल	71,747.00
	16.	इक्को, नीदरलैंड	समग्र शिक्षण एवं	21,50,608.00		ट्रेक्टरों की खरीद	5,02,041.00
			ग्रामीण विकास (जोहड़)			कम्प्यूटर खरीद	1,19,000.00
	17.	सीडा, स्वीडन	बांध निर्माण	8,05,692.00		उपकरण	30,000.00
	18.	नोराड, नार्वे	गत वर्ष का ऋण वापसी	45,016.00		स्वास्थ्य कार्यक्रम	21,345.00
	19.	गांधी शान्ति केन्द्र	शिविर	10,000.00	49,44,316.00	मूल्यांकन खर्च	45,353.00
						पैट्रोल डीजल	73,359.45
						जीप डीजल/मरम्मत खर्च	71,225.72
						मोटर साईकिल मरम्मत	53,798.28

वर्ष	क्र.सं.	आय का स्रोत	प्रयोजन	रकम प्राप्ती	कुल रकम प्राप्ती	खर्च का मद	रकम भुगतान
						प्रशासनिक/ओवर हैड	27.020.80
						आडिट फीस	6.250.00
						कन्टीनजैन्सी	2.28.485.18
						ऋण (विकास विकल्प संस्थान)	24.250.00
						सहयोग (विकास विकल्प सस्थान)	707.27
						बैंक कमीशन	2,265.00
						कानूनी खर्च	369.00
						ऋृण वापसी (डी. पी. सिंह)	12.933.50
						पौषाहार	85,415.00
						मशीन मरम्मत	15.330.90
						बिजली खर्च	4.610.00
						ईंधन खर्च	10.852.00
						भवन निर्माण खर्च	2.40.004.40
						समूह सहायता	30.101.00
						कृषि खर्च	2.959.50
						दवाईयाँ	854.31
						नर्सरी खर्च	1,340.00
						मजदूरी	10,574.50
						गलीचा बुनाई	4.000.00
						पशु खरीद	1.975.00
						चारा खरीद	1.180.00
						कुआं मरम्मत	4.410.00
						सदस्यता शुल्क	500.00
						बर्तन खरीद	2.399.00
						गैस	1,332.60
						कार्यकर्त्ताओं को उधार	1.18.310.00
						हस्त रोकड़	77.749.40
						बैंक रोकड़	4.28.553.37
					67,92,577.50		**67,92,577.50**